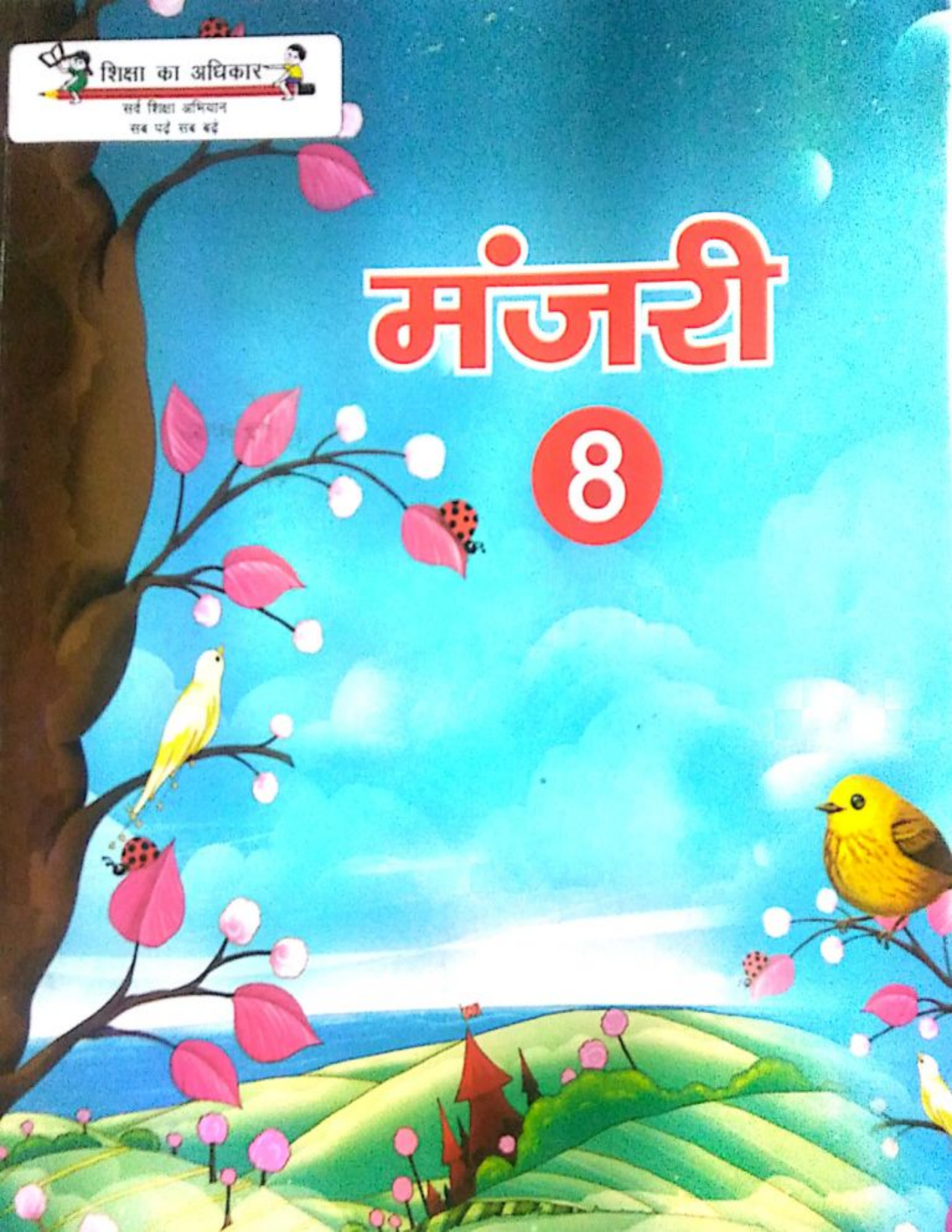

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

मंजरी

8

पाठ १

वीणावादिनि वरदे

(प्रस्तुत पाठ में वीणापाणि सरस्वती की वन्दना करते हुए कवि ने अज्ञानता को दूर करने तथा नवचेतना का प्रकाश फैलाने की कामना की हैA

वर दे, वीणावादिनि वरदे !
प्रिय स्वतन्त्र-रव अमृत-मन्त्र नव
भारत में भर दे !
काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद तम-हर, प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !
नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव,
नवल कंठ, नव जलद - मन्द्ररव,
नव नभ के नव विहग-वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे ।

-सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’

सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’ का जन्म सन् 1897 ई0 में बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल में हुआ थाA इनके पिता उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के निवासी थेA निराला बहुमुखी प्रतिभा के धनी थेA कविता के अतिरिक्त इन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, निबन्ध, आलोचना और संस्मरण भी लिखे हैंA इनकी काव्य रचनाएँ हैं - ‘परिमल’, ‘गीतिका’, ‘अनामिका’,‘तुलसीदास’, ‘कुकुरमुत्ता’, ‘नये पत्ते’, ‘आराधना’ आदिA सन् 1961 ई0 में इनका देहावसान इलाहाबाद में हो गयाA

रव = ध्वनि।अमृत-मन्त्र = ऐसे मन्त्र जो अमरत्व की ओर ले जायें, कल्याणकारी मन्त्र। अन्ध-उर = अज्ञानपूर्ण हृदय। कलुष = मलिनता, पाप। मन्द्र रव = गम्भीर ध्वनि। विहग-वृन्द = पक्षियों का समूह।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1.कविता में भारत के लिए कौन-सा वरदान माँगा गया है ?

2.निम्नलिखित तालिका के खण्ड ‘क’ और खण्ड ‘ख’ से शब्द चुनकर शब्द-युग्म बनाइए-

‘क’ ‘ख’

वीणा वादिनि

स्वतन्त्र - स्तर

अन्ध - रव

विहग - मन्त्र

ताल - उर

बन्धन - छन्द

अमृत - मन्द्र रव

जलद - वृन्द

3.निम्नांकित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क)काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर।

(ख)कलुष-भेद तम हर, प्रकाश भर, जगमग जग कर दे।

विचार और कल्पना

इस कविता में भारत और संसार के लिए अनेक वरदान माँगे गये हैं। आप अपने विद्यालय के लिए क्या वरदान माँगना चाहेंगे ?

कुछ करने को

1. पाठ में दिये गये चित्र के आधार पर एक तालाब का चित्र बनाइए तथा उसे निम्नलिखित से सजाइए-

एक हंस, दो बतख, कमल के दो फूल, तीन कलियाँ, सात पत्तियाँ।

2. इस कविता को कंठस्थ करके भाव और लय के साथ कक्षा में सुनाइए।

भाषा की बात

1.कविता में आये 'वर दे', 'भर दे' की तरह अन्य तुकान्त शब्दों को छाँटकर लिखिए।

2.ज्योतिः$मय=ज्योतिर्मय, निः$झर=निर्झर। इन शब्दों में विसर्ग का रेफ हुआ है। यह विसर्ग सन्धि है। इसी प्रकार के दो शब्द लिखिए तथा उनका सन्धि विच्छेद कीजिए।

3.दो शब्दों के मेल से बनने वाला शब्द समास कहलाता है। 'वीणा-वादिनि' का अर्थ है 'वीणा को बजाने वाली' अर्थात् सरस्वती। यह बहुव्रीहि समास का उदाहरण है। इसी प्रकार गजानन पीताम्बर, चतुरानन शब्दों में भी बहुव्रीहि समास है। इनका विग्रह कीजिए।

4.'नव गति' में 'नव' गुणवाचक विशेषण है, यह गति, शब्द की विशेषता बताता है। कविता में 'नव' अन्य किन शब्दों के विशेषण के रूप में आया है, लिखिए।

इसे भी जानें

सरस्वती सम्मान- के0 के0 बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा आठवीं अनुसूची में शामिल किसी भी भाषा में गत दस वर्षों में प्रकाशित उत्कृष्ट साहित्यिक कृति पर दिया जाता है। इसकी स्थापना सन् 1991 ई0 में हुई।

पाठ 2

काकी

(प्रस्तुत कहानी में एक अबोध बालक का अपनी माँ के प्रति गहरा प्रेम प्रकट हुआ हैA

उस दिन बड़े सवेरे श्यामू की नींद खुली तो उसने देखा घर भर में कुहराम मचा हुआ है। उसकी माँ नीचे से ऊपर तक एक कपड़ा ओढ़े हुए कम्बल पर भूमि-शयन कर रही है और घर के सब लोग उसे घेर कर बड़े करुण स्वर में विलाप कर रहे हैं।

लोग जब उसकी माँ को श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे, तब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया। लोगों के हाथ से छूटकर वह माँ के ऊपर जा गिरा। बोला, काकी सो रही है। इसे इस तरह उठा कर कहाँ ले जा रहे हो? मैं इसे न ले जाने दँूगा।

लोगों ने बड़ी कठिनाई से उसे हटाया। काकी के अग्नि-संस्कार में भी वह न जा सका। एक दासी राम-राम करके उसे घर पर ही सँभाले रही।

यद्यपि बुद्धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गयी है, परन्तु यह बात उससे छिपी न रह सकी कि काकी और कहीं नहीं ऊपर राम के यहाँ गयी है। काकी के लिए कई दिन लगातार रोते-रोते उसका रुदन तो धीरे-धीरे शान्त हो गया, परन्तु शोक शान्त न हो सका। वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता।

एक दिन उसने ऊपर एक पतंग उड़ती देखी। न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा। पिता के पास जाकर बोला, 'काका, मुझे एक पतंग मँगा दो, अभी मँगा दो।'

पत्नी की मृत्यु के बाद से विश्वेश्वर बहुत अनमने से रहते थे। 'अच्छा मँगा दूँगा,' कहकर वे उदास भाव से और कहीं चले गये।

श्यामू पतंग के लिए बहुत उत्कंठित था। वह अपनी इच्छा को किसी तरह न रोक सका। एक जगह खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा था। इधर-उधर देखकर उसके पास स्टूल सरका कर रखा और ऊपर चढ़कर कोट की जेबें टटोली।

एक चवन्नी पाकर वह तुरन्त वहाँ से भाग गया। सुखिया दासी का लड़का भोला, श्यामू का साथी था। श्यामू ने उसे चवन्नी देकर कहा, 'अपनी जीजी से कहकर गुपचुप एक पतंग और डोर मँगा दो। देखो अकेले में लाना कोई जान न पाये।'

पतंग आयी। एक अँधेरे घर में उसमें डोर बाँधी जाने लगी। श्यामू ने धीरे से कहा, 'भोला, किसी से न कहो तो एक बात कहूँ।'

भोला ने सिर हिलाकर कहा 'नहीं, किसी से न कहूँगा।'

श्यामू ने रहस्य खोला, 'मैं यह पतंग ऊपर राम के यहाँ भेजूँगा। इसको पकड़ कर काकी नीचे उतरेगी। मैं लिखना नहीं जानता नहीं तो इस पर उसका नाम लिख देता।'

भोला श्यामू से अधिक समझदार था। उसने कहा, 'बात तो बहुत अच्छी सोची, परन्तु एक कठिनाई है। यह डोर पतली है। इसे पकड़ कर काकी उतर नहीं सकती। इसके टूट जाने का डर है। पतंग में मोटी रस्सी हो तो सब ठीक हो जाये।'

श्यामू गम्भीर हो गया। मतलब यह बात लाख रुपये की सुझायी गयी, परन्तु कठिनाई यह थी कि मोटी रस्सी कैसे मँगायी जाय। पास में दाम है नहीं और घर के जो आदमी उसकी काकी को बिना दया-मया के जला आये हैं, वे उसे इस काम के लिए कुछ देंगे नहीं। उस दिन श्यामू को चिन्ता के मारे बड़ी रात तक नींद नहीं आयी।

पहले दिन की ही तरकीब से दूसरे दिन फिर उसने पिता के कोट से एक रुपया निकाला। ले जाकर भोला को दिया और बोला, 'देख भोला, किसी को मालूम न होने पाये। अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ मँगा दे। एक रस्सी छोटी पड़ेगी। जवाहिर भैया से मैं एक कागज पर 'काकी' लिखवा लूँगा। नाम लिखा रहेगा तो पतंग ठीक उन्हीं के पास पहुँच जायेगी।'

दो घंटे बाद प्रफुल्ल मन से श्यामू और भोला अँधेरी कोठरी में बैठे हुए पतंग में रस्सी बाँध रहे थे। अकस्मात् उग्र रूप धारण किये हुए विश्वेश्वर शुभ कार्य मंे विघ्न की तरह वहँा जा घुसे। भोला और श्यामू को धमका कर बोले- 'तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है?'

भोला एक ही डाँट में मुखबिर हो गया। बोला, 'श्यामू भैया ने रस्सी और पतंग मँगाने के लिए निकाला था।'

विश्वेश्वर ने श्यामू को दो तमाचे जड़कर कहा, 'चोरी सीख कर जेल जायेगा! अच्छा, तुझे आज अच्छी तरह बताता हूँ।'

कहकर कई तमाचे जड़े और कान मलने के बाद पतंग फाड़ डाली। अब रस्सियांे की ओर देखकर पूछा 'ये किसने मँगायी।'

भोला ने कहा, 'इन्होंने मँगायी थी। कहते थे, इससे पतंग तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे।'

विश्वेश्वर हतबुद्धि होकर वहीं खड़े रह गये। उन्होंने फटी हुई पतंग उठाकर देखी। उस पर चिपके हुए कागज पर लिखा था .....'काकी'।

-सियारामशरण गुप्त

सियारामशरण गुप्त का जन्म सन् 1895 ई0 में चिरगाँव झाँसी में हुआA इन्होंने अनेक कविता-संग्रह, उपन्यास और निबन्धांे की रचना की हैAइनके उपन्यासों में नारी की सहनशीलता, आदर्श और सरलता हैAइनकी प्रसिद्ध रचनाएँ-'मौर्य विजय', 'दूर्वादल' 'आत्मोत्सर्ग' 'गोद', 'नारी' आदि हैंA सन् 1963 में इनका देहावसान हो गयाA

कुहराम = रोना-पीटना, विलाप। भूमि-शयन = जमीन पर सोना। करुण = दीन। उपद्रव = उत्पात। अग्नि-संस्कार = मृत्यु के बाद शव को अग्नि में जलाना। अनमना = उदास, खिन्न। उत्कंठित = उत्सुक, अधीर। प्रफुल्ल = खिला हुआ, प्रसन्न। उग्ररूप = प्रचंडरूप। मुखबिर = भेद देने वाला, भेदिया। हतबुद्धि = बेसुध, घबराया हुआ।

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. समूह 'ख' से नामांे को छाँटकर समूह 'क' से सम्बन्धित शब्दों के सम्मुख लिखिए-

'क' 'ख'

श्यामू के पिता - भोला

श्यामू का साथी - जवाहिर

श्यामू के भैया - काकी

श्यामू के साथी की बहन- जीजी

श्यामू की माँ - विश्वेश्वर

श्यामू के साथी की माँ - सुखिया

2.श्यामू ने भोला के सामने कौन-सा रहस्य खोला ?

3.श्यामू ने जवाहिर भैया से कागज पर 'काकी' क्यों लिखवाया ?

4.उड़ती हुई पतंग को देखकर, क्या सोचकर श्यामू का हृदय एकदम खिल उठा ?

5.'भोला एक ही डाँट में मुखबिर हो गया'। इस वाक्य से क्या तात्पर्य है ?

6.'रस्सी से पतंग तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे'। भोला से यह बात सुनकर विश्वेश्वर हतबुद्धि क्यों हो गये ?

विचार और कल्पना

1.पतंग इतनी ऊँचाई तक कैसे उड़ती है, जबकि एक कागज का सादा पन्ना नहीं उड़ता है, कारण स्पष्ट कीजिए।

2.श्यामू लिखना नहीं जानता था, इसलिए वह पतंग पर अपनी काकी का नाम नहीं लिख पाया। आप बताएँ, जो लोग लिखना नहीं जानते हैं, उनको किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता होगा।

3.आपका मन भी आकाश में उड़ने को होता होगा। पतंग की तरह यदि आप भी उड़ सकंे तो सबसे पहले किस स्थान पर जाना चाहंेगे ?

कुछ करने को

1.पाठ में आपने पढ़ा कि श्यामू ने विवशता में पिताजी की कोट के जेब से पैसे निकाल लिये थे, यदि आपके साथी का कोई भी सामान आपको मिल जाये तो आप क्या करेंगे-

(क)अपने पास रख लंेगे।

(ख) साथी को वापस कर देंगे।

(ग)कक्षाध्यापक को सौंप देंगे।

2.पतंग का एक चित्र बनाइए।

भाशा की बात

1.‘श्यामू पतंग के लिए बहुत उत्कंठित था।’ वाक्य में ‘श्यामू’ और ‘पतंग’ संज्ञा है। श्यामू व्यक्तिवाचक और पतंग जातिवाचक संज्ञा है। नीचे लिखे वाक्य में आये संज्ञा पदों

को पहचान कर लिखिए तथा उनके भेद बताइए।

एक जगह खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा था।

2.जो बुद्धिवाला हो-वाक्यांश के लिए एक शब्द है-‘बुद्धिमान’।

इसी प्रकार नीचे लिखे वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए-

(क)जिस पर विश्वास न किया जा सके।

(ख)जिसका स्वर्गवास हो गया हो।

(ग)जो अपने मन को एकाग्र रखता हो।

(घ)वह स्थान जहाँ शव जलाये जाते हों।

3.निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ बताइए और अपने वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिए -

कुहराम मचना, हृदय का खिलना, चिन्ता का मारा होना,

रहस्य खोलना, हतबुद्धि होना।

4.‘समझदार’ शब्द में ‘समझ’ संज्ञा है, उसमें ‘दार’ प्रत्यय लगाकर विशेषण पद बना दिया गया है। संज्ञा शब्दों में दार, इक, इत, ई, ईय, मान तथा वान आदि प्रत्ययों को लगाने से विशेषण शब्द बनता है। नीचे लिखे शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाइए -

बुद्धि, चौकी, उपद्रव, करुण, बल, प्रान्त, उत्कंठा।

इसे भी जानें

‘‘मातृत्व महान गौरव का पद है, संसार की सबसे बड़ी साधना, तपस्या, त्याग और महान विजय है।’’

-मुंशी प्रेमचन्द

पाठ 3

सच्ची वीरता

(प्रस्तुत पाठ में सच्चे वीर पुरुषों के धैर्य, साहस, और स्वाभिमान जैसे गुणों पर प्रकाश डालते हुए बताया गया है कि वीर पुरुष प्रत्येक स्थिति में सच्चाई का साथ देते हैं।)

सच्चे वीर पुरुष धीर, गम्भीर और आजाद होते हैं। उनके मन की गम्भीरता और शक्ति समुद्र की तरह विशाल और गहरी तथा आकाश की तरह स्थिर और अचल होती है, परन्तु जब ये शेर गरजते हैं तब सदियों तक उनकी दहाड़ सुनायी देती रहती है और अन्य सब आवाजें बन्द हो जाती हैं।

एक बार एक बागी गुलाम और एक बादशाह के बीच बातचीत हुई। यह गुलाम कैदी दिल से आजाद था। बादशाह ने कहा, 'मैं तुमको अभी जान से मार डालूँगा। तुम क्या कर सकते हो'? गुलाम बोला 'हाँ' मैं फाँसी पर तो चढ़ जाऊँगा, पर तुम्हारा तिरस्कार तब भी कर सकता हूँ। इस गुलाम ने दुनिया के बादशाहों के बल की हद दिखला दी। बस इतने ही जोर और इतनी ही शेखी पर ये झूठे राजा मारपीट कर कायर लोगों को डराते हैं। चूँकि लोग शरीर को अपने जीवन का केन्द्र समझते हैं इसलिए जहाँ किसी ने इनके शरीर पर जरा जोर से हाथ लगाया वहीं वे मारे डर के अधमरे हो जाते हैं। केवल शरीर-रक्षा के निमित्त ये लोग इन राजाओं की ऊपरी मन से पूजा करते हैं।

सच्चे वीर अपने प्रेम के जोर से लोगों के दिलों को सदा के लिए बाँध देते हैं। फौज, तोप, बन्दूक आदि के बिना ही वे शहंशाह होते हैं। मंसूर ने अपनी मौज में आकर कहा कि मैं खुदा हूँ। दुनियावी बादशाह ने कहा 'यह काफिर है'। मगर मंसूर ने अपने कलाम को बन्द न किया। पत्थर मार-मारकर दुनिया ने उसके शरीर की बुरी दशा की परन्तु उस मर्द के मुँह से हर बार यही शब्द निकला 'अनलहक' (अहं ब्रह्मास्मि) मैं ही ब्रह्म हूँ। मंसूर का सूली पर चढ़ना उसके लिए सिर्फ खेल था।

महाराजा रणजीत सिंह ने फौज से कहा अटक के पार जाओ। अटक चढ़ी हुई थी और भयंकर लहरें उठी हुई थीं। जब फौज ने कुछ उत्साह प्रकट न किया तब उस वीर को जोश आया। महाराजा ने अपना घोड़ा दरिया में डाल दिया। कहा जाता है कि अटक सूख गयी और सब पार निकल गये।

लाखों आदमी मरने-मारने को तैयार हो रहे हैं। गोलियाँ धुआँधार बरस रही हैं। आल्प्स के पहाड़ों पर फौज ने चढ़ना ज्यांे ही असम्भव समझा त्यों ही वीर नेपोलियन को जोश आया और उसने कहा, 'आल्प्स है ही नहीं'। फौज को निश्चय हो गया कि आल्प्स नहीं है और सब लोग पहाड़ के पार हो गये।

एक भेड़ चराने वाली और सत्त्वगुण में डूबी हुई युवती कन्या के दिल में जोश आते ही फ्रांस एक शिकस्त से बच गया।

वीरता की अभिव्यक्ति कई प्रकार से होती है। कभी उसकी अभिव्यक्ति लड़ने मरने में, खून बहाने मंे, तलवार तोप के सामने जान गँवाने में होती है तो कभी जीवन के गूढ़ तत्त्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। वीरता एक प्रकार की अन्तः प्रेरणा है। जब कभी इसका विकास हुआ तभी एक नया कमाल नजर आया। एक नयी रौनक, एक नया रंग, एक नयी बहार, एक नयी प्रभुता संसार में छा गयी। वीरता हमेशा निराली और नयी होती है। नयापन भी वीरता का एक खास रंग है। वीरता देश काल के अनुसार संसार में जब कभी प्रकट हुई तभी एक नया स्वरूप लेकर आयी, जिसके दर्शन करते ही सब लोग चकित हो गये।

वीर पुरुष का दिल सबका दिल हो जाता है। उसका मन सबका मन हो जाता है। उसके विचार सबके विचार हो जाते हैं। उसके संकल्प सबके संकल्प हो जाते हैं। उसका बल सबका बल हो जाता है। वह सबका और सब उसके हो जाते हैं।

वीरों को बनाने के कारखाने कायम नहीं हो सकते। वे तो देवदार के वृक्षों की तरह जीवन के अरण्य में खुद ब खुद पैदा होते हैं और बिना किसी के पानी दिये, बिना किसी के दूध पिलाये, बिना किसी के हाथ लगाये तैयार होते हैं और दुनिया के मैदान में अचानक ही सामने आकर वे खड़े हो जाते हैं।

हर बार दिखावा और नाम के लिए छाती ठोंककर आगे बढ़ना और फिर पीछे हटना पहले दर्जे की बुजदिली है। वीर तो यह समझता है कि मनुष्य का जीवन जरा-सी चीज है। वह सिर्फ एक बार के लिए काफी है। बन्दूक में केवल एक गोली है। उसे एक बार ही प्रयोग किया जा सकता है। हाँ! कायर पुरुष इसको बड़ा ही कीमती और कभी न टूटने वाला हथियार समझते हैं। हर घड़ी आगे बढ़कर और यह दिखाकर कि हम बड़े हैं, वे फिर पीछे इसलिए हट जाते हैं कि उनका मनोबल (जीवन) किसी और अधिक बड़े काम के लिए बच जाय। गरजने वाले बादल ऐसे ही चले जाते हैं, परन्तु बरसने वाले बादल जरा-सी देर में मूसलाधार वर्षा कर जाते हैं।

वीर पुरुष का शरीर कुदरत की समस्त ताकतों का भंडार है। कुदरत का यह केन्द्र हिल नहीं सकता। सूर्य का चक्कर हिल जाये तो हिल जाये परन्तु वीर के दिल में जो दैवी केन्द्र है, वह अचल है। कुदरत की नीति चाहे विकसित होकर अपने बल को नष्ट करने की हो मगर वीरों की नीति, बल को हर तरह से इकट्ठा करने और बढ़ाने की होती है। वह वीर क्या, जो टीन के बर्तन की तरह झट से गर्म और ठंडा हो जाता है। सदियों नीचे आग जलती हो तो भी शायद गर्म हो और हजारों वर्ष बर्फ उस पर जमती रहे तो भी क्या मजाल जो उसकी वाणी तक ठंडी हो। उसे खुद गर्म और सर्द होने से क्या मतलब! सत्य की सदा जीत होती है। यह भी वीरता का एक चिह्न है। विजय वहीं होती है जहाँ पवित्रता और प्रेम है। दुनिया धर्म और अटल आध्यात्मिक नियमों पर खड़ी है। जो अपने आप को उन नियमों के साथ अभिन्न करके रहता है, उसी की विजय होती है।

जब हम कभी वीरों का हाल सुनते हैं तब हमारे अन्दर भी वीरता की लहरें उठती हैं और वीरता का रंग चढ़ जाता है परन्तु प्रायः वह चिरस्थायी नहीं होता। इसका कारण यही है कि हम सबको केवल दिखाने के लिए वीर बनना चाहते हैं। टीन के बर्तन का स्वभाव छोड़कर

अपने जीवन के केन्द्र में निवास करो और सच्चाई की चट्टान पर दृढ़ता से खड़े हो जाओ। बाहर की सतह को छोड़कर जीवन की तहों में घुसो तब नये रंग खिलेंगे।

-सरदार पूर्ण सिंह

सरदार पूर्ण सिंह का जन्म सन्1881 ई0 में एक सिक्ख परिवार में हुआ थाA ये पेशे से अध्यापक थेA इनके लगभग एक दर्जन निबन्ध हैं, जो रोचक और आकर्षक हैंA द्विवेदीयुग के निबन्धों में प्रायः नीरसता थी, लेकिन पूर्ण सिंह ने भाषा को नया रूप दियाA विचार और भावात्मकता इनके निबन्धों की मुख्य विशेषताएँ हैंA 'मजदूरी और प्रेम', 'सच्ची वीरता', 'आचरण की सभ्यता' आदि इनके प्रसिद्ध निबन्ध हैंA इनका निधन सन् 1931 ई0 में हुआA

तिरस्कार = अपमान, अनादर। शेखी = हेकड़ी, शान। काफिर = ईश्वर को न मानने वाला, सत्य को छिपाने वाला। कलाम = वाणी, शब्द, वार्तालाप। अटक = सिन्धु नदी। नेपोलियन = फ्रांस का महान योद्धा (राजा)। सत्त्वगुण = सादगी और सच्चाई से युक्त। 'सत्त्वगुण में डूबी हुई युवती कन्या' = यहाँ लेखक फ्रांस की वीरांगना जोन आफ आर्क का उल्लेख कर रहा है जिसने फ्रांस पर चढ़ाई करने वाले शत्रुओं का डट कर मुकाबला किया और उन्हें परास्त किया। शिकस्त = पराजय, हार। अभिव्यक्ति = प्रकट होना, प्रकाशन, व्यक्त होना। अन्तः प्रेरणा = अपने मन की प्रेरणा। अरण्य = जंगल, वन। बुजदिली = कायरता। कुदरत = प्रकृति।

प्रश्न-अभ्यास

निबन्ध से

1. किसने क्या कहा ? कोष्ठक में दिये गये नामों से चुनकर वाक्य के सामने लिखिए -

(महाराजा रणजीत सिंह, मंसूर, नेपोलियन, बादशाह)

(क) 'अनलहक' (अहं ब्रह्मास्मि)। .....

(ख) मैं तुमको अभी जान से मार डालूँगा। .....

(ग) अटक के पार जाओ। .....

(घ) 'आल्प्स है ही नहीं'। .....

2. दुनिया किस पर खड़ी है -

(क)धन और दौलत पर।

(ख)ज्ञान और पांडित्य पर।

(ग)हिंसा और अत्याचार पर।

(घ)धर्म और अटल आध्यात्मिक नियमों पर।

3.अपने अन्दर की वीरता को जगाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? उपयुक्त कथन पर सही (√) का चिह्न लगाइए-

(क)हथियारों को एकत्र करना चाहिए।

(ख)वाद-विवाद करना चाहिए।

(ग)सच्चाई की चट्टान पर दृढ़ता से खड़ा होना चाहिए।

(घ)झूठी बातें करनी चाहिए।

4.सच्चे वीर पुरुष में कौन-कौन से गुण होते हैं ?

5.बादशाह द्वारा जान से मारने की धमकी देने पर गुलाम ने क्या कहा ?

6.शरीर पर जरा जोर से हाथ लगाने पर लोग मारे डर के अधमरे क्यों हो जाते हैं ?

7.लेखक ने वीरों को देवदार के वृक्षों के समान क्यों कहा है ?

विचार और कल्पना

1.वीर पुरुष की तुलना बरसने वाले बादल से और कायर पुरुष की तुलना गरजने वाले बादल से क्यों की गयी है ?

2.‘सच्चा वीर’ बनने के लिए आप अपने भीतर किन गुणों को विकसित करेंगे ?

3.आप भी ऊँचे स्थानों पर पैदल चढ़े होंगे। आप महसूस करते होंगे कि इसमें कठिनाई का अनुभव होता है। यदि आपको किसी ऊँचे पर्वत पर चढ़ना हो तो कितनी ऊँचाई तक आप चढ़ना चाहेंगे। पर्वत को पार करने के लिए आपके पास कौन-कौन से आवश्यक सामान होने चाहिए, एक सूची तैयार कीजिए।

कुछ करने को

किसी भी साहसपूर्ण कार्य को बहादुरी से करना वीरता कहलाती है। यदि आपके गाँव या शहर में भयंकर आग लगने या बाढ़ आने से स्थिति भयावह हो जाती है तो आप अपने साथियों के साथ लोगों को बचाने के लिए जो कुछ करना चाहेंगे, उसे अपने शब्दों मंे लिखिए।

भाशा की बात

1.निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखते हुए इनका वाक्य में प्रयोग कीजिए -

डर से अधमरा होना, छाती ठोंककर आगे बढ़ना, रास्ता साफ होना, रंग चढ़ना, दिल को बाँध देना।

2.आजाद, गुलाम, बादशाह, कैदी, फौज, दरिया और कुदरत उर्दू के शब्द हैं। हिन्दी में इनके समानार्थी शब्द लिखिए।

3. ‘सत्त्व’ शब्द में ‘त्व’ प्रत्यय जुड़कर सत् $ त्व = सत्त्व बन गया है। नीचे लिखे शब्दों में ‘त्व’ जोड़कर नये शब्द बनाइए -

महत्, प्रभु, तत्, वीर।

4.विलोम या निषेध के अर्थ में कुछ शब्दों के पूर्व ‘अ’ या ‘अन्’ जुड़ जाता है, जैसे-‘सम्भव’ से ‘असम्भव’ और ‘आवश्यक’ से ‘अनावश्यक’ शब्द बनता है। ‘अन्’

का प्रयोग उस समय होता है, जब शब्द के आरम्भ में कोई स्वर हो। अ, अन् की सहायता से नीचे लिखे शब्दों का विलोम शब्द बनाइए -

उपस्थित, स्थायी, साधारण, समान, उदार।

5.'आल्प्स' शब्द आ $ ल् $ प् $ स् $ अ से बना है। इसमें ल्, प्, स् क्रम से तीन व्यंजन आये हैं, इन्हें व्यंजनगुच्छ कहा जाता है। पाठ से इस प्रकार के व्यंजनगुच्छ वाले शब्द चुनकर लिखिए।

पढ़ने के लिए-

वीरों का कैसा हो वसंत?

वीरों का कैसा हो वसंत?

आ रही हिमाचल से पुकार,

है उदधि गरजता बार-बार,

प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार,

सब पूछ रहे हैं दिग्दिगंत,

वीरों का कैसा हो वसंत?

फूली सरसों ने दिया रंग,

मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,

वधु-वसुधा पुलकित अंग-अंग,

है वीर वेश में किन्तु कंत,

वीरों का कैसा हो वसंत? -सुभद्राकुमारी चौहान

पाठ 4

बिटिया के लिए

(प्रस्तुत कविता में कवि ने लड़कियों के खेल-खिलौने तथा प्रातःकालीन दृश्यों के माध्यम से लड़की के भविष्य का आह्वान किया हैA

पेड़ों के झुनझुने

बजने लगे

लुढ़कती आ रही है

सूरज की लाल गेंद

उठ मेरी बेटी, सुबह हो गयी।

तूने जो छोड़े थे

गैस के गुब्बारे

तारे अब दिखायी नहीं देते

जाने कितने ऊपर चले गये

तूने जो नचायी थी फिरकी,

चाँद, देख अब गिरा, अब गिरा

उठ मेरी बेटी, सुबह हो गयी है।

तूने थपकियाँ देकर

जिन गुड्डे-गुड्डियों को सुला दिया था

टीले, मुँह रँगे आँख मलते हुए बैठे हैं।

गुड्डे की जरतारी टोपी

उल्टी नीचे पड़ी है, छोटी तलैया

वह देखो उड़ी जा रही है चूनर

तेरी गुडिया की, झिलमिल नदी।

उठ मेरी बेटी, सुबह हो गयी है।

-सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना का जन्म सन् 1927 ई0 में बस्ती में हुआ थाA ये नयी कविता के श्रेष्ठ कवियों में से एक हैंA इनके काव्य में प्रगतिशील चेतना की प्रधानता हैA 'कुआनो नदी', 'गर्म हवाएँ' तथा 'खँूटियों पर टँगे लोग' 'कविताएँ-एक' तथा 'कविताएँ-दो' इनकी काव्य पुस्तकें हैंA 'काठ की घंटियाँ', 'बाँस का पुल', 'बिल्ली के बच्चे' आदि इनके नाटक हैंA इन्होंने निबन्धों की भी रचना की हैA

पेड़ों के झुनझुने = पेड़ों के पत्ते जो हवा के झोंके से आवाज करते हैं। जरतारी =जरी के काम वाली।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. कवि ने कविता में प्रकृति की उपमा बिटिया के किन-किन खिलौनों से दी है ?

2.निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) लुढ़कती आ रही है, सूरज की लाल गंेद।

(ख)गुड्डे की जरतारी टोपी उल्टी नीचे पड़ी है।

विचार और कल्पना

1.तारों को 'गैस के गुब्बारे' क्यों कहा गया है ?

2.कवि ने सूरज को लाल गेंद कहा है, बताइए कि चन्द्रमा, तारे, ओसकण और वर्षा की बूँदों

को आप क्या कह सकते हैं।

3.जब आसमान साफ होता है और अँधेरी रात होती है तो आसमान में एक सफेद पट्टी

दिखाई देती है, इसे आकाशगंगा कहते हैं। आप अनुमान लगाइए कि एक आकाशगंगा में कितने तारे होंगे।

4.प्रस्तुत कविता केवल एक बेटी के जागने तक ही सीमित न होकर सम्पूर्ण नारी जागरण को भी व्यक्त करती है। कवि का संकेत है कि अब नारी जागरण का समय आ गया है। उसे अब गुड्डा-गुड्डी से ही बँधकर नहीं रहना है। नया सवेरा उसके लिए नया क्षितिज खोल रहा है।पूरी कविता की एक दूसरी ही व्याख्या आपके सामने होगी- इसे समझकर लिखिए।

5.गुब्बारे में जब गैस भरी जाती है तब वह ऊपर क्यों उड़ता है ?

कुछ करने को

1.प्रातः काल का सुन्दर-सा एक दृश्य बनाकर रंग भरिए तथा उसे अपनी कक्षा में टाँगिए।

2.इस कविता में तुकान्त शब्द नहीं है, फिर भी इसकी सरसता बनी हुई है। आप भी एक अतुकान्त कविता बनाकर कक्षा में सुनाइए।

भाशा की बात

1.जिस वस्तु की उपमा दी जाती है, उसे उपमेय और जिससे उपमा दी जाती है, उसे उपमान कहते हैं। जहाँ उपमेय और उपमान में कोई भेद नहीं रह जाता है वहाँ रूपक अलंकार होता है, जैसे- कमल नयन अर्थात् कमल रूपी आँखें।

समूह क में दिये गये उपमान को समूह ख में दिये गये सही उपमेय से मिलाकर शब्द बनाइए-
‘क’ ‘ख’

सूरज - जरतारी टोपी

तारे - चूनर

चाँद - गुड्डे-गुड्डियाँ

टीले - गैस के गुब्बारे

छोटी तलैया - लाल गेंद

झिलमिल नदी- फिरकी

2.निम्नलिखित शब्दों से विशेषण और विशेष्य छाँटकर लिखिए-

लाल गेंद, जरतारी टोपी, छोटी तलैया, झिलमिल नदी।

3.'सुबह हो गयी' का अर्थ केवल प्रातः काल होने से नहीं है, बल्कि यह वाक्यांश उन्नति की नयी सम्भावनाओं को भी व्यक्त कर रहा है। इसी प्रकार 'शाम हो गयी' का दूसरा आशय क्या हो सकता है, लिखिए।

4.कवि ने सुबह के सूरज को लाल गेंद कहा है। धीरे-धीरे यह पीली गेंद में बदल जाता है, ऐसा कैसे होता है ?

इसे भी जानें

सरला सम्मान- उड़ीसा साहित्य अकादमी द्वारा उड़िया साहित्य के विकास में सराहनीय योगदान हेतु दिया जाता है। इसकी स्थापना सन् 1980 ई0 में हुई।

पाठ 5

अपराजिता

(प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने एक विकलांग लड़की के अदम्य साहस एवं विलक्षण प्रतिभा का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि व्यक्ति दृढ़ इच्छा शक्ति से विपरीत परिस्थितियों में भी अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।)

कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अन्तर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात अकारण ही दंडित कर दिया हो किन्तु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया। फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है, किन्तु उसे वह नतमस्तक आनन्दी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बँगले के अहाते से जुड़ा था। अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गयी। कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक व्हीलचेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गयी। दूसरे ही क्षण, धीरे-धीरे बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव निचले धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, फिर बैसाखियों से ही व्हीलचेयर तक पहुँच उसमें बैठ गयी और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गयी। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और

आश्चर्यचकित रह जाती - ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किये चली जा रही हो।

धीरे-धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुनी तो दंग रह गयी। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी। मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था। वह आई0ए0एस0 की परीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिये के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गये, पर बायाँ हाथ चला गया। वह विच्छिन्न भुजा के साथ-साथ मानसिक सन्तुलन भी खो बैठा। पहले दुःख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा और अब नूरमंजिल की शरण गही है। केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिये। इधर चन्द्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल-प्रतिक्षण भरपूर उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्त्वाकांक्षाएँ।

‘मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट से पूछकर यह बतायेंगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय माइक्रोबायोलाजी से सम्बन्धित कुछ सामग्री मिल सकेगी ?’

‘मैडम आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फेलोशिप मिल सकती है ?’

यहाँ कभी सामान्य-सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर पर टूट पड़ा है और इधर यह लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है। ऊँची नौकरी की एक ही नीरस करवट में उसकी निरन्तर प्रतिभा डूबती जा रही है। आजकल वह आई0आई0टी0 मद्रास (चेन्नई) में काम कर रही है।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गरदन से नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा, अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी।

'मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बना कर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अब स्वयं निपटा लेती हूँ।'

उसने मुझे तस्वीरें दिखायीं। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थी कि निचला धड़ ऊपर उठाये बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज से उतार सकती थी। किन्तु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ0 चन्द्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, 'हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबेल पुरस्कार पाने के ही विषय में सुना था, किन्तु आज हम शायद पहली बार इस पी-एच0डी0 के विषय में भी कह सकते हैं। देखा जाय तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए।' डॉ0 चन्द्रा और उनकी अद्भुत साहसी जननी श्रीमती टी0 सुब्रह्मण्यम् को पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ-साथ कैसी कठिन-साधना की और इस साधना का सुखद अन्त हुआ 1976 में, जब चन्द्रा को डॉक्टरेट मिली माइक्रोबायोलाजी में, अपंगी स्त्री-पुरुषों में, इस विषय में डॉक्टरेट पाने वाली डॉ0 चन्द्रा प्रथम भारतीय हैं।

'जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया। भयभीत होकर हमने इसे बड़े-से-बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा- 'आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवनभर केवल गरदन ही हिला पायेगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।' सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम का कंठ अवरुद्ध हो गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगी, 'मेरे गर्भ में तब इसका भाई आ गया था। इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने कभी विधाता से यह

नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो, इसके इस जीवन से तो मौत भली है। मैं निरन्तर इसके जीवन की भीख माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह

इधर-उधर देख-भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गयी।'

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपरी धड़ में गति आ गयी, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी। मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठ गयी थीं। बंगलौर के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कॉन्वेंट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

'नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्', मदर ने कहा, 'हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की व्हीलचेयर कौन पूरे क्लास में घुमाता फिरेगा ?'

'आप चिन्ता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।' और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुरसी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती। वे पीरियड-दर पीरियड उसके पीछे खड़ी रहतीं। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चन्द्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी0 एस-सी0 किया, प्राणिशास्त्र में, एम0एस-सी0 में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बंगलौर के प्रख्यात इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता-पिता ने पेंसिलवानियाँ से व्हील चेयर मँगवा दी, जिसे डॉ0 चन्द्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी। लेदर जैकेट से कठिन जिरह-बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध-क्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता क्षत-विक्षत शरीर में असंख्य घाव, आभामंडित भव्य मुद्रा।

‘मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें ?’

मैंने जब ये कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आयीं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहंीं आने पायी, वह अनजाने ही उसकी कविता में छलक आयी थी। फिर उसने अपनी कढ़ाई-बुनाई के सुन्दर नमूने दिखाये। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैर का भी काम करते हों, निरन्तर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन भाषा में माता-पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी। यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है। अपने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रखकर वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करती डॉ0 चन्द्रा, प्रधानमन्त्री के साथ मुस्कुराती खड़ी डॉ0 चन्द्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चन्द्रा और व्हील चेयर में लेदर जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डॉक्टरेट ग्रहण करती डॉ0 चन्द्रा।

‘मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉ0 मेरी वर्गीज के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कहा गया मेरा निचला धड़ निर्जीव है, मैं एक सफल शल्यचिकित्सक नहीं बन पाऊँगी।’ किन्तु डॉ0 चन्द्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, ‘मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ0 चन्द्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया है। चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया।’

चन्द्रा के अलबम के अन्तिम पृष्ठ पर उसकी जननी का बड़ा-सा चित्र जिसमें वे जे0सी0 बंगलौर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं - ‘वीर जननी’ का पुरस्कार। बहुत बड़ी-बड़ी उदास आँखें, जिनमें माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख

त्यागकर नित्य छाया बनी, पुत्री की पहिया-लगी कुरसी के पीछे चक्र-सी घूमती जननी, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगां, अधरों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, 'ईश्वर सब द्वार एक साथ बन्द नहीं करता। यदि एक द्वार बन्द करता है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।'

-शिवानी

गौरा पन्त 'शिवानी' हिन्दी की लोकप्रिय कथा लेखिका हैंA इनका जन्म सन् 1924 ई0 में राजकोट गुजरात में हुआ थाA इनकी प्रारम्भिक शिक्षा शान्तिनिकेतन में हुईA कोलकाता विश्वविद्यालय से इन्होंने सम्मान सहित बी0ए0 आनर्स उत्तीर्ण कियाA इनकी संगीत के प्रति विशेष अभिरुचि रहीA इन्हें जीवन में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें 'पद्मश्री' पुरस्कार प्रमुख हैA 'कृष्णकली', 'चौदह फेरे', 'पाताल भैरवी', 'श्मशान चम्पा', 'कैंजा', 'यात्रिक' आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैंAसन् 2003 में इनका देहावसान हो गयाA

अपराजिता= जो हारी न हो। विलक्षण = अद्भुत। विच्छिन्न = अलग किया हुआ। अभिशप्त = शाप से ग्रस्त। काया = शरीर। नियति = भाग्य। आघात = चोट। बित्ते-भर की=छोटे कद की। देवांगना = देवी, अप्सरा। मेधावी = बुद्धिमान। नूरमंजिल = लखनऊ में स्थित मानसिक रोगियों का अस्पताल। उत्फुल्ल = प्रसन्न। विषाद = उदासी, दःुख। उत्कट=प्रबल। जिजीविषा = जीने की इच्छा। ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट = औषधि अनुसंधान संस्थान।माइक्रोबायोलाजी = जीवाणु विज्ञान। बायोडाटा = जीवन विवरण और उपलब्धियों का लेखा-जोखा। फेलोशिप = शोध छात्रों को मिलने वाली छात्रवृत्ति। कंठगत = गले में अटके हुए। पटुता = निपुणता। यातनाप्रद = कष्ट देने वाला। पक्षाघात = लकवा रोग। सर्वांग = सारा अंग, पूरा भाग। अचल = निष्क्रिय। अभिशाप = बड़ा शाप। आर्थोपैडिक = हड्डियों से सम्बन्धित। उपचार = इलाज। जिरह-बख्तर = लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच। क्षत-विक्षत = बुरी तरह घायल। आभामंडित = तेज से भरा हुआ। लेदर = चमड़ा। उल्लास = उमंग, खुशी। पोलियो=यह एक संक्रामक रोग है, जो अधिकतर पाँच वर्ष से कम

उम्र के बच्चों में होता है। यह शरीर के किसी अंग को अपाहिज कर देता है। इससे बचाव का एकमात्र तरीका है कि शून्य से पाँच वर्ष तक के सभी बच्चों को पोलियो अभियान के हर चक्र में पोलियो की दो बूँद दवा अवश्य पिलायी जाय।

''दो बूँद जिन्दगी की''

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1.कौन-कौन से कथन सही हैं ? हमें अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है, जब-

(क)दूसरों के दु:ख अपने दु:खों से बड़े लगने लगते हैं।

(ख)हमारे कष्टों से बड़े कष्ट को कोई हँसकर झेलता दिखाई देता है।

(ग)अपने कष्टों के लिए विधाता को दोषी मान लेते हैं।

(घ)कष्टों को ईश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार कर लेते हैं।

2.लेखिका क्यों चाहती थीं कि लखनऊ का युवक उनकी पंक्तियाँ पढ़े ?

3.डॉ0 चन्द्रा की कविताएँ देखकर लेखिका की आँखंे क्यों भर आयीं ?

4.डॉ0 चन्द्रा ने विज्ञान के अतिरिक्त किन-किन क्षेत्रों में उपलब्धियाँ प्राप्त कीं ?

5.निम्नलिखित कथनों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क)वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी।

(ख)पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है।

(ग)मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहारा भी न दे।

(घ)‘चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया’।

(ङ)ईश्वर सब द्वार एक साथ बन्द नहीं करता। यदि एक द्वार बन्द करता है तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।

6.शारदा सुब्रह्मण्यम् को ‘वीर जननी’ का पुरस्कार क्यों मिला ?

विचार और कल्पना

चलती ट्रेन में चढ़ने से लखनऊ के युवक का हाथ कट गया। रेलवे प्लेटफार्म पर कुछ निर्देश लिखे होते हैं, जैसे -

(क)चलती टेªन में न चढंे़, न उतरें।

(ख)रेलवे आपकी सम्पत्Ÿि है, इसकी रक्षा करें।

(ग)सावधानी हटी, दुर्घटना घटी।

(घ)ज्वलनशील पदार्थों को लेकर यात्रा न करें।

ऊपर लिखे निर्देशों का पालन क्यों करना चाहिए ?

कुछ करने को

1.प्रसिद्ध लेखिका और समाज सेविका हेलेन केलर (सन् 1880-1968 ई0, अमेरिका) जिनकी डेढ़ वर्ष की अवस्था में बचपन की एक गम्भीर बीमारी के कारण देखने और सुनने की शक्ति जाती रही। वे भारत भी आयी थीं। उनके बारे में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए।2.आपके आस-पास यदि कोई विकलांग व्यक्ति, जिन्होंने किसी कार्य में विशेष सफलता अर्जित की हो तो उनकी विकलांगता का कारण और सफलता के बारे में चर्चा कर इसे अपनी कक्षा

में सुनाएँ।

भाषा की बात

1.निम्नलिखित शब्दों को 'ब'-'व' के उच्चारण-भेद पर ध्यान रखते हुए शुद्ध रूप में बोलकर पढ़िए।

सुब्रह्मण्यम्, बुद्धिदीप्त, जिजीविषा, विलक्षण, क्षत-विक्षत, विच्छिन्न।

2.'यातना' शब्द संज्ञा है। उसमें 'प्रद' प्रत्यय जोड़ देने से 'यातनाप्रद' शब्द विशेषण बन जाता

है, जिसका अर्थ है- कष्ट देने वाला। नीचे लिखे शब्दों में 'प्रद' जोड़कर नये शब्द बनाइए

और उनके अर्थ लिखिए -

कष्ट, आनन्द, लाभ, हानि, ज्ञान।

3.निम्नलिखित वाक्य पढ़िए -

(क)इसके इस जीवन से तो मौत भली है।

(ख)मैंने जब वे कविताएँ देखीं तो आँखें भर आयीं।

वाक्य (क) में 'तो' निपात के रूप में प्रयुक्त है। 'निपात' उस शब्द को कहते हैं, जो वाक्य में कहीं भी रखा जा सकता है, जैसे- पर, भर, ही, तो। किन्तु वाक्य (ख) में 'तो', 'जब' के साथ 'तब' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। क और ख की भाँति दो-दो वाक्य बनाकर लिखिए।

4.'वह बैसाखियों से ही ह्वील चेयर तक पहँुच उसमें बैठ गयी और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गयी।' इस वाक्य में दो वाक्य हैं, दोनांे वाक्य स्वतंत्र अर्थ दे रहे हैं। किन्तु ये वाक्य 'और' से जुड़े हुए हैं। ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहते हैं। संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य होते हैं, जो 'और', 'किन्तु' या 'इसलिए' से जुड़े रहते हैं। संयुक्त वाक्य के कोई दो उदाहरण पाठ से चुनकर लिखिए।

5.पाठ में आये हुए अंग्रेजी भाषा के शब्दों को छाँटिए और लिखिए।

इसे भी जानें

1.आई0 ए0 एस0- भारतीय प्रशासनिक सेवाएँ (इण्डियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विसेज़) देश की यह सबसे बड़ी प्रतियोगितात्मक परीक्षा है। इस परीक्षा को उत्तीर्ण करने वाले छात्र देश या प्रदेश के उच्च प्रशासनिक अधिकारी बनते हैं।

2- नोबेल पुरस्कार- विश्व का सबसे बड़ा पुरस्कार हैA

संक्रामक रोग है, जो अधिकतर पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों में होता है। यह शरीर के किसी अंग को

पाठ 6

नीति और भक्ति के दोहे

(प्रस्तुत पाठ में नीति एवं भक्ति के दोहों के माध्यम से कवि ने नैतिक एवं व्यावहारिक जीवन-मूल्यों को स्पष्ट किया है।)

नीति

बड़े न हूजै गुनन बिन, विरद-बड़ाई पाय।
कहत धतूरे सों कनक, गहनों गढ़ूयौ न जाय।।1।।
अति अगाध, अति ओथरो, नदी, कूप, सर बाइ।
सो ताकौ सागर जहाँ, जाकी प्यास बुझाइ।।2।।
ओछे बड़े न ह्वै सकैं, लगौं सतर ह्वै गैन।
दीरघ होहिं न नैकहूँ, फारि निहारै नैन।।3।।
कनक कनक तै सौगुनी, मादकता अधिकाय।
उहि खाये बौराय जग, इहिं पाये बौराय।।4।।
दिन दस आदरु पाइकै, करि लै आपु बखानु।
जौ लगि काग! सराध पखु, तौ लगि तौ सनमानु।।5।।

भक्ति

बन्धु भये का दीन कै, को तार्यौ रघुराइ।
तूठे तूठे फिरत हौ, झूठै विरद कहाइ।।1।।
मोहन मूरति स्याम की, अति अद्भुत गति जोइ।
बसतु सुचित-अन्तर तऊ, प्रतिबिम्बितु जग होइ।।2।।
भजन कह्यौ, ताते भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार।
दूरि भजन जातैं कह्यौ, सौ तैं भज्यौ गँवार ।।3।। -बिहारी

बिहारी का जन्म ग्वालियर के पास वसुआ, गोविन्दपुर ग्राम में सन् 1595 ई0 में हुआ थाA ये जयपुर नरेश के दरबारी कवि थेA कहा जाता है कि महाराजा जयसिंह इनके प्रत्येक दोहे पर एक सोने की मुद्रा भेंट करते थेA इनका एकमात्र काव्य-संग्रह 'बिहारी सतसई' है, जो शृंगार प्रधान हैAइनका निधन सन् 1663 ई0 में हुआ थाA

विरद = यश। ओथरो = उथला। बाइ = बापी, बावली। सतर ह्वै = ऐंठकर। गैन = गगन, आकाश। लगौं = छूने लगे। नैकहूँ = थोड़ा सा। कनक = सोना, धतूरा। सराध पखु = श्राद्ध पक्ष (क्वार मास के आरम्भिक पन्द्रह दिन)। तूठे = प्रसन्न होकर। भजन कह्यौ = जिसका गुणगान (भजन) करने के लिए कहा। ताते भज्यौ = उससे दूर भाग गये। भज्यौ न = भजन नहीं किया। दूरि भजन जातैं = जिन दुर्गुणों से दूर भागने (रहने) के लिए। सो तैं भज्यौ गँवार= ऐ मूर्ख तूने उसी का भजन किया अर्थात् उन्हीं दुर्गुणों को अपनाया।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. 'नाम बड़ा होने से ही कोई बड़ा नहीं हो सकता' इस कथन की पुष्टि के लिए कवि ने कौन- सा उदाहरण दिया है?
2. कवि ने नदी, कूप, सर, बावली को किस स्थिति में सागर के समान माना है?
3. 'छोटे बड़े नहीं हो सकते' इसके लिए कौन-सा उदाहरण दिया गया है ?
4. कृष्ण की मोहन मूरति क्यों अद्भुत है ?
5. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क)सो ताकौ सागर जहाँ, जाकी प्यास बुझाइ।

(ख)दूरि भजन जातैं कह्यौ, सौ तैं भज्यौ गँवार।

(ग)तूठे तूठे फिरत हौ, झूठै विरद कहाइ।

विचार और कल्पना

1. 'धतूरे' की अपेक्षा 'सोने' को अधिक मादक क्यों कहा गया है ?

2.नीति के दोहों में कोई न कोई मूल्य छिपा होता है, जैसे-पहले दोहे में 'व्यक्ति अपने गुणों से बड़ा होता है' से सम्बन्धित मूल्य है। इसी प्रकार निम्नलिखित मूल्यों से सम्बन्धित दोहों को लिखिए -

(क)दिखावा करने से बड़प्पन नहीं आता।

(ख)स्वयं अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए।

(ग)जिस वस्तु से हमारा कार्य सिद्ध हो, वही महत्त्वपूर्ण है।

(घ)गुण, सौन्दर्य से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

कुछ करने को

रहीम के अतिरिक्त कबीर और तुलसीदास जैसे अन्य भक्तिकालीन कवियों ने भी नीतिपरक दोहों की रचना की है। नीति से सम्बन्धित इनके दो-दो दोहों को पुस्तकालय की सहायता से लिखिए।

भाषा की बात

1.कविता में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों को देखिए और उनके खड़ी बोली के रूप पर ध्यान दीजिए। सो = वह, ताकौ = उसके लिए, ह्वै सकैं = हो सके। नीचे लिखे शब्दों के खड़ी बोली रूप लिखिए -

तऊ, ताते, जातैं, कह्यौ।

2.कविता में जहाँ एक ही शब्द दो या दो से अधिक बार आये और उसका अर्थ भिन्न- भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है। नीचे लिखी पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है और क्यों?

(क)कनक कनक तै सौगुनी, मादकता अधिकाय।

(ख)भजन कह्यौ, ताते भज्यौ, भज्यौ न एकौ बार।

दूरि भजन जातैं कह्यौ, सौ तैं भज्यौ गँवार ।।

इसे भी जानें

संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की भाषा हिन्दी तथा लिपि देवनागरी है।

पाठ 7

जूलिया

(प्रस्तुत एकांकी में एक भोली-भाली गवर्नेस (सेविका) की मार्मिक पीड़ा और विवशता का सजीव चित्रण है, वहीं दूसरी ओर शोषण से मुक्ति पाने का प्रभावी संदेश भी है।)

(बच्चों की गवर्नेस जूलिया वासिल्देवना आती है)

जूलिया-(दबे स्वर में) आपने मुझे बुलाया था मालिक?

गृहस्वामी- हाँ हाँ.....बैठ जाओ जूलिया.....खड़ी मत रहो।

जूलिया- (बैठती हुई) शुक्रिया।

गृहस्वामी-हाँ तो जूलिया, मैं तुम्हारी तनख्वाह का हिसाब करना चाहता हूँ। मेरे ख्याल से तुम्हें पैसों की जरूरत होगी; और जितना मैं तुम्हें अब जान सका हूँ, मुझे लगता है कि तुम अपने आप पैसे कभी नहीं माँगोगी। इसलिए मैं खुद ही तुम्हें पैसे देना चाहता हूँ। हाँ तो तुम्हारी तनख्वाह तीस रूबल महीना तय हुई थी न?

जूलिया- (विनीत स्वर में) जी नहीं मालिक, चालीस रूबल।

गृहस्वामी-नहीं भाई, तीस ..... ये देखो डायरी (पन्ने पलटते हुए) मैंने इसमें नोट कर रखा है। मैं बच्चों की देखभाल और उन्हें पढ़ाने वाली हर गवर्नेस को तीस रूबल महीना ही देता हूँ। तुम से पहले जो गवर्नेस थी, उसे भी मैं तीस रूबल महीना ही देता था। अच्छा,तो तुम्हें हमारे यहाँ काम करते हुए दो महीने हुए हैं।

जूलिया-(दबे स्वर में) जी नहीं, दो महीने पाँच दिन।

गृहस्वामी-क्या कह रही हो जूलिया? ठीक दो महीने हुए हैं। भाई, मैंने डायरी में सब नोट कर रखा है। हाँ, तो दो महीने के बनते हैं- अंऽऽ.....साठ रूबल। लेकिन साठ रूबल तभी बनतें हैं जब महीने में तुमने एक दिन भी छुट्टी न ली हो.... तुमने इतवार को छुट्टी मनायी है। उस दिन तुमने कोई काम नहीं किया। सिर्फ कोल्या को घुमाने के लिए ले गयी हो....और ये तो तुम भी मानोगी कि बच्चे को घुमाने ले जाना कोई काम नहीं होता.... इसके अलावा, तुमने तीन छुट्टियाँ और ली हैं। ठीक है न?

जूलिया-(दबे स्वर में) जी, आप कह रहे हैं तो.....ठीक..... (रुक जाती है)

गृहस्वामी-अरे भाई.... मैं क्या गलत कह रहा हूँ.....हाँ तो नौ इतवार और तीन छुट्टियाँ-यानी बारह दिन तुमने काम नहीं किया- यानी तुम्हारे बारह रूबल कट गए। उधर कोल्या चार दिन बीमार रहा और तुमने सिर्फ वान्या को ही पढ़ाया। पिछले हफ्ते शायद तीन दिन दाँतों में दर्द रहा था और मेरी पत्नी ने तुम्हें दोपहर बाद छुट्टी दे दी थी। तो बारह और सात-उन्नीस। उन्नीस नागे। हाँ तो भई, घटाओ साठ में से उन्नीस.....कितने रहते हैं...अम्....इकतालीस,....इकतालीस रूबल ! ठीक है?.....

जूलिया-(रुआँसी हो जाती है। रोते स्वर में) जी हाँ।

गृहस्वामी-(डायरी के पन्ने उलटते हुए) हाँ, याद आया...पहली जनवरी को तुमने चाय की प्लेटऔर प्याली तोड़ी थी। प्याली बहुत कीमती थी। मगर मेरे भाग्य में तो हमेशा नुकसान उठाना ही बदा है।.....मैंने जिसका भला करना चाहा, उसने मुझे नुकसान पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है.....खैर मेरा भाग्य !....हाँ, तो मैं प्याली के दो रूबल ही काटूँगा... अब देखो उस दिन तुमने ध्यान नहीं दिया और तुम्हारी नजर बचाकर कोल्या पेड़ पर चढ़ गया और वहाँ किसी टहनी की खरोंच लगने से उसकी जैकेट फट गयी। दस रूबल उसके गये। इसी तरह तुम्हारी लापरवाही की वजह से घर की सफाई करने वाली नौकरानी मारिया ने वान्या के नये जूते चुरा लिये.... (रुक कर) तुम मेरी बात सुन भी रही हो या नहीं?

जूलिया-(मुश्किल से अपनी रुलाई रोकते हुए) जी सुन रही हूँ।

गृहस्वामी-हाँ ठीक है। अब देखो भाई, तुम्हारा काम बच्चों को पढ़ाना और उनकी देखभाल करना है। तुम्हें इसी के तो पैसे मिलते हैं। तुम अपने काम में ढील दोगी तो पैसे कटेंगे या

नहीं?..मैं ठीक कह रहा हूँ न ! ..... तो जूतों के पाँच रूबल और कट गये.... और हाँ, याद आया, दस जनवरी को मैंने तुम्हें दस रूबल दिये थे.....।

जूलिया-(लगभग रोते हुए) जी नहीं, आपने कुछ नहीं...(आगे नहीं कह पाती)

गृहस्वामी-अरे मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ ? मैं डायरी में हर चीज नोट कर लेता हूँ। तुम्हें यकीन न हो तो दिखाऊँ डायरी? (डायरी के पन्ने यूँ ही उलटने लगता है)

जूलिया-(आँसू पांेछती हुई) आप कह रहे हैं तो आपने दिये ही होंगे।

गृहस्वामी-(कड़े स्वर में) दिये होंगे नहीं-दिये हैं....तो ठीक है। घटाओ सत्ताईस, इकतालीस में से.... अम्....अम्.... बचे चौदह। क्यों हिसाब ठीक है न ?

जूलिया-(आँसू पीती हुई) (काँपती आवाज में) मुझे अभी तक एक ही बार कुछ पैसे मिले थे और वो मुझे मालकिन ने दिये थे.....सिर्फ तीन रूबल। ज्यादा नहीं।

गृहस्वामी-(जैसे आसमान से गिरा हो) अच्छा !.....और इतनी बड़ी बात तुम्हारी मालकिन ने मुझे बतायी तक नहीं !.....देखो, तुम न बताती तो हो जाता न अनर्थ !..... खैर, देर से ही सही.....मैं इसे भी डायरी में नोट कर लेता हूँ...(डायरी खोलकर उसमें यूँ ही कुछ लिखता है) हाँ तो, चौदह में से तीन और घटा दो-बचते हैं, ग्यारह रूबल!(जेब से निकालकर) तो लो भाई, ये रही तुम्हारी तनख्वाह..... ये रहे ग्यारह रूबल (देते हुए) सँभाल लो..... गिन लो, ठीक है न?

जूलिया-(काँपते हाथों से रूबल लेती है। काँपते ही स्वर में) जी धन्यवाद !

गृहस्वामी-(सोफे से उछलकर खड़ा हो जाता है और भारी आवाज करता हुआ कमरे में क्रुद्ध शेर की तरह एक-दो चक्कर लगाता है) 'धन्यवाद !'..... जूलिया तुमने 'धन्यवाद' कहा न !.....(गुस्से से) धन्यवाद किस बात का?

जूलिया-आपने मुझे पैसे दिये- इसके लिए धन्यवाद।

गृहस्वामी-(अपना गुस्सा नहीं सँभाल पाता) (ऊँचे स्वर में लगभग चिल्लाते हुए), तुम.....तुम मुझे धन्यवाद दे रही हो जूलिया? जब कि तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैंने तुम्हें ठग लिया है....तुम्हें धोखा दिया है..... तुम्हारे पैसे हड़प लिये हैं....और तुम...तुम इसके बावजूद तुम मुझे धन्यवाद दे रही हो ! (गुस्से में आवाज काँपने लगती है)

जूलिया-जी हाँ मालिक....

गृहस्वामी-(गुस्से से तुतलाने लगता है) 'जी हाँ मालिक ! जी हाँ मालिक ! .....क्यों? क्यों जी हाँ मालिक?

जूलिया-(डर जाती है भयभीत स्वर में) क्योंकि इससे पहले मैंने जहाँ-जहाँ काम किया, उन लोगों ने तो मुझे एक पैसा तक नहीं दिया.....आप कुछ तो दे रहे हैं।

गृहस्वामी-(क्रोध के कारण काँपते, उत्तेजित स्वर में) उन लोगों ने तुम्हें एक पैसा तक नहीं दिया जूलिया, मुझे ये बात जानकर जरा भी आश्चर्य नहीं हो रहा है.....(स्वर धीमा कर) जूलिया, मुझे इस बात के लिए माफ कर देना कि मैंने तुम्हारे साथ एक छोटा-सा क्रूर मजाक किया.....पर मैं तुम्हें सबक सिखाना चाहता था। देखो जूलिया, मैं तुम्हारा एक पैसा नहीं मारूँगा...(जेब से निकाल कर) ये हैं तुम्हारे अस्सी रूबल !..... मैं अभी इन्हें तुम्हें दँूगा.....लेकिन इससे पहले मैं तुमसे कुछ पूछना चाहँूगा-'जूलिया, क्या ये जरूरी है कि इनसान भला कहलाने के लिए, इतना दब्बू, भीरु और बोदा बन जाये कि उसके साथ जो अन्याय हो रहा है, उसका विरोध तक न करे? बस, खामोश रहे और सारी ज्यादतियाँ सहता जाये?.....नहीं जूलिया, नहीं.....इस तरह खामोश रहने से काम नहीं चलेगा। अपने को बचाये रखने के लिए, तुम्हें इस कठोर, क्रूर, निर्मम और हृदयहीन संसार से लड़ना होगा। अपने दाँतों और पंजों के साथ लड़ना होगा पूरी शक्ति के साथ.... मत भूलो जूलिया, इस संसार में दब्बू और रीढ़रहित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है....कोई स्थान नहीं है....।

-अन्तोन चेखोव

अन्तोन चेखोव का जन्म 17 जनवरी सन् 1860 ई0 को तैगानराग रूस में हुआ था। ये एक नाटककार हैं। इनके द्वारा लिखित नाटकों की विषय-वस्तु में संसार में अपमान, अन्याय और उत्पीड़न के प्रति संघर्ष और विरोध करने की चेतना समाहित है। यह एकांकी रूसी कहानी 'ए निन्कॉमपूप' का हिन्दी नाट्यरूपान्तर है। इसका रूपांतर सत्येन्द्र शरत् द्वारा किया गया है। चेखोव का निधन 15 जुलाई सन् 1904 ई0 को हुआ था।

गवर्नेस = सेविका, जो छोटे बच्चों की शिक्षा के साथ-साथ उनकी देखरेख भी करती हो। रूबल = रूस की मुद्रा। भीरु = डरपोक। बोदा = मोटी अक्ल का। क्रूर = निर्दय। निर्मम = ममता-रहित, कठोर।

प्रश्न-अभ्यास

एकांकी से

1.गृहस्वामी ने 'उन्नीस नागे' किस प्रकार गिनाये और इसके लिए कितने रूबल की कटौती की?

2.गृहस्वामी के अनुसार जूलिया के कारण क्या-क्या नुकसान हुआ था?

3.गृहस्वामी ने अंत में तेरह रूबल किस आधार पर काट लिये थे?

4.गृहस्वामी को जूलिया पर गुस्सा क्यों आया और उसने जूलिया को क्या समझाया?

5.'इस संसार में दब्बू और रीढ़रहित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है' इस वाक्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

विचार और कल्पना

''इससे पहले मैंने जहाँ-जहाँ काम किया, उन लोगों ने तो मुझे एक पैसा तक नहीं दिया,आप कुछ तो दे रहे हैं।'' इस वाक्य के भाव के आधार पर जूलिया की पीड़ा और विवशता के बारे में लिखिए।

कुछ करने को

1.(बैठती हुई), (दबे स्वर में), (रुआँसी होकर), (डायरी के पन्ने पलटते हुए)..... जैसे भाव व दृश्य के संकेत एकांकी के बीच-बीच में दिये गये हैं, जिनसे एकांकी के मंचन में मदद मिलती

है। इसी प्रकार के भाव-दृश्य संकेतों का प्रयोग करते हुए माँ और पुत्र मंे बातचीत के आधार पर एक लघु एकांकी की पटकथा (स्क्रिप्ट) तैयार कीजिए।

2.निम्नांकित प्रारूप के आधार पर तनख्वाह की कटौती का विवरण तैयार कीजिए-

क्रमांक कारण काटी गयी धनराशि (रूबल मंे)

1. नौ इतवार 9 .00

....

....

अपने उत्तर का मिलान पाठ में की गयी कुल कटौती से कीजिए।

इसी प्रकार आप घर पर दूध, अखबार आदि का हिसाब कर सकते हैं।

3. रूस की मुद्रा रूबल है। इसी प्रकार समूह 'क' में अंकित देश के सामने उसकी मुद्रा समूह 'ख' से छाँटकर अपनी पुस्तिका में लिखिए-

'क' 'ख'

बांग्लादेश- येन

चीन - डालर

अमेरिका- टका

जापान- यूरो

यूरोप - युआन

भाशा की बात

1.पाठ में अनेक जगहों पर अंग्रेजी तथा अरबी-फारसी के शब्द आये हैं, जैसे- गवर्नेस, तनख्वाह। इसी प्रकार के अन्य शब्दों को पाठ से छाँटकर उनका वर्गीकरण कीजिए।

2.रीढ़रहित का अर्थ है 'रीढ़ से हीन' इसका विपरीतार्थक अर्थ होगा- 'रीढ़युक्त'। इसी प्रकार निम्नलिखितशब्दों में 'रहित' और 'युक्त' लगाकर शब्द बनाइए-

प्राण, धन, बल, यश।

3.निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए-

अन्याय,क्रूर, मूर्ख, दुर्बल, करुण।

पाठ 8

धानों का गीत

(प्रस्तुत गीत में किसान की तान में सुर मिलाकर धान, चाँदनी एवं गाँव के विश्वास को बड़ी ही सरलता से प्रस्तुत किया गया है। कवि ग्रामीण परिवेश के अन्तर्गत किसान के स्वर में बादल का स्वागत करता है।)

धान उगेंगे कि प्रान उगेंगे
उगेंगे हमारे खेत में,
आना जी बादल जरूर !
चन्दा को बाँधेंगे कच्ची कलगियों
सूरज को सूखी रेत में,
आना जी बादल जरूर !
आगे पुकारेगी सूनी डगरिया
पीछे झुके वन-बेंत,
संझा पुकारेंगी गीली अँखड़ियाँ
भोर हुए धन-खेत,
आना जी बादल जरूर,
धान कँपेंगे कि प्रान कँपेंगे

कँपेंगे हमारे खेत में,
आना जी बादल जरूर !
धूप ढरे तुलसी-वन झरेंगे
साँझ घिरे पर कनेर,
पूजा की बेला में ज्वार झरेंगे,
धान-दिये की बेर,
आना जी बादल जरूर,
धान पकेंगे कि प्रान पकेंगे
पकेंगे हमारे खेत में,
आना जी बादल जरूर ! -केदारनाथ सिंह

इनका जन्म नवम्बर सन् 1934 ई0 में बलिया जनपद में हुआ थाA कई स्थानों पर अध्यापन कार्य करते हुए अन्त में जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष रहे। 'अभी बिल्कुल अभी', 'यहाँ से देखो' 'जमीन पक गयी है', 'अकाल में सारस', 'बाघ' आदि आपके काव्य संग्रह हैं। आपने आरम्भ में नवगीतों की रचना की।आगे चलकर आप आधुनिक बोध तथा प्रगतिशीलता से जुड़ गये। सन् 2013 में आपको ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कलगियों = धान की कोमल बालियों। अँख़डियाँ = आँखंे।

गीत से

1.बादल का स्वागत कौन-कौन और कब-कब कर रहे हैं ?

2.निम्नलिखित पंक्तियों के भावार्थ स्पष्ट कीजिए-

(क) चंदा को बाँधेंगे कच्ची कलगियों, सूरज को सूखी रेत में।

(ख) संझा पुकारेंगी गीली अँख़डियाँ, भोर हुए धन-खेत।

(ग) पूजा की बेला में ज्वार झरेंगे, धान-दिये की बेर।

3.धान को प्रान क्यों कहा गया है ? समझाकर लिखिए।

4.धान उगेंगे कि प्रान उगेंगे,
धान कँपेंगे की प्रान कँपेंगे, और
धान पकेंगे कि प्रान पकेंगे- इन तीनों पंक्तियों के भावार्थ की तुलना करते हुए यह स्पष्ट कीजिए कि 'उगेंगे', 'कँपेंगे' और 'पकेंगे' से क्या आशय है।

विचार और कल्पना

बादल और वर्षा कृषक-जीवन के आधार होते हैं। लहलहाते धान के खेतों को देखकर किसान प्रसन्न हो जाता है। वर्षा ऋतु के कुछ विशेष नक्षत्रों में वर्षा अधिक होने पर धान की फसल अच्छी होती है। बताइए कि किन नक्षत्रों में वर्षा अधिक होती है।

कुछ करने को

1.यह कविता 'आना जी बादल जरूर' पंक्ति को आधार बनाकर लिखी गयी है। इसी प्रकार 'विद्यालय जायेंगे जरूर' को आधार बनाकर चार पंक्तियों वाली कविता की रचना कीजिए।

2.इस कविता को याद करके लय के साथ कक्षा में सुनाइए।

भाषा की बात

1.जहाँ प्रकृति की वस्तुओं को मानवीय व्यवहार की तरह दिखाया जाता है, वहाँ मानवीकरण
होता है, जैसे- संझा पुकारेगी। इसी तरह कविता में मानवीकरण के अन्य उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

2.कविता में अनेक तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है, जैसे- प्रान और चन्दा। इनका तत्सम रूप

क्रमशः ‘प्राण’ और ‘चन्द्रमा’ है। कविता में आये अन्य तद्भव शब्दों को छाँटिए तथा उनका तत्सम रूप लिखिए।

पाठ 9

हिन्दी विश्वशांति की भाषा है !

(प्रस्तुत पाठ 'हिन्दी प्रेमी साइजी माकिनो से रत्नावली कौशिक की बातचीत' पर आधारित है।)

जापान में 11 फरवरी सन् 1924 ई0 को जन्मे साइजी माकिनो 36 वर्ष की उम्र में एक बार भारत जो आये तो फिर यहीं के होकर रह गये। आये तो गाँधीजी के सेवाग्राम में स्थित हिन्दुस्तानी तालीमी-संघ में पशुचिकित्सक के रूप में थे पर हिन्दुस्तान का ऐसा रंग चढ़ा कि फिर लौटने का मन ही नहीं हुआ। खादी क्या अपनायी सम्पूर्ण चिन्तन ही गांधीमय हो चला। आइए मिलते हैं- महात्मा गांधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर के इस अनन्य भक्त और हिन्दी प्रेमी साइजी माकिनो से -

प्रश्न- भारत आने के पीछे क्या विशेष उद्देश्य था \

उत्तर- सन् 1958 ई0 की बात है। मुझे फुजिई गुरु जी ने वर्धा स्थित सेवाग्राम में आने का आमंत्रण दिया। वे सन् 1931 ई0 से गांधी जी के सहयोगी थे और सेवाग्राम में ही रहते थे। यहाँ एक पशुचिकित्सक की आवश्यकता थी। सोचा कुछ साल के लिए भारत चला जाता हूँ। आज 45 वर्ष होने चले हैं, अब तो भारत ही मेरा घर है। बाद में फुजिई गुरु जी ने ही मुझे रवीन्द्रनाथ टैगोर के पास शान्तिनिकेतन भेजा। शान्तिनिकेतन में गुरुदेव के साथ रहकर जीवन का अर्थ और सोच की धारा बदल गयी।

प्रश्न- हिन्दी सीखने और पढ़ने का सिलसिला कैसे शुरू हुआ?

उत्तर-अप्रैल सन् 1959 ई0 में पंढरपुर सर्वोदय सम्मेलन के बाद विनोबा जी ने मुझसे कहा कि मैं सेवाग्राम लौटकर हिन्दी सीखना प्रारम्भ करूँ और मैंने हिन्दी सीखना आरम्भ कर दिया। उन दिनों सेवाग्राम के प्रेसीडेन्ट आर्यनायकम् हुआ

करते थे। उन्होंने आगरा के एक अच्छे हिन्दी शिक्षक को मेरे पास भेजा। मुझ जैसे विदेशी के लिए हिन्दी सिखाना बहुत मुश्किल काम था। मुझे खराब उच्चारण के लिए बहुत डाँट पड़ती थी। पर धीरे-धीरे मैंने हिन्दी बोलना और पढ़ना सीख लिया। मेरी पत्नी 'युकिको' को जिसे सेवाग्राम में 'सुजाता' नाम दिया गया था, हिन्दी सीखने के लिए 'वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' में भेज दिया गया। छह महीने तक हॉस्टल में रहकर हिन्दी पढ़ती रही। शायद जापानियों में वही हिन्दी की सर्वप्रथम छात्रा रही हैं।

प्रश्न- सेवाग्राम में रहकर तो आप चरखा चलाना भी सीख गये होंगे ?

उत्तर- सेवाग्राम में गोशाला में इतना काम रहता था कि चरखे की तरफ ध्यान ही नहीं जाता था। आज मैं चरखे के महत्त्व को समझ सकता हूँ बल्कि आज के युग में फिर से चरखे के प्रचार और प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस करता हूँ।

प्रश्न- गुरुदेव टैगोर का साथ और शान्तिनिकेतन का वातावरण आपको कैसा लगा ?

उत्तर- गुरुदेव के व्यक्तित्व और शान्तिनिकेतन के परिसर के प्राकृतिक सौन्दर्य ने मुझे इतना आकर्षित किया कि मेरा कहीं जाने का मन ही नहीं करता था। हिन्दी-भवन के सामने वाले छात्रावास में रहकर केवल पढ़ता रहता था। शांतिनिकेतन का परिवेश इतना शांत था कि पुस्तकालय में बैठे हुए आप घड़ी की आवाज स्पष्ट सुन सकते थे। मैंने भी पवित्र भूमि शांतिनिकेतन को अपनी जीवन-साधना का आधार बना लिया। समझ नहीं आता कि गुरुदेव के व्यक्तित्व ने वातावरण को इतना सुन्दर बना दिया है या इतने शांत वातावरण ने ही गुरुदेव जैसे महापुरुष की रचना की। जो भी हो-- जमाना कितना भी बदल जाए पर शांतिनिकेतन की भूमि में विश्व की तमाम संस्कृतियों को समाये रखने की क्षमता हमेशा रहेगी। यहाँ की प्रकृति स्वयं यहाँ की पुरानी कहानियाँ सुनाती रहेगी। इसी भूमि में मुझे पं0 हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे महानुभावों से शिक्षा और प्रेरणा पाने का अवसर मिला।

प्रश्न- ये बताइए कि आपकी हिन्दी-यात्रा की शुरुआत कैसे हुई ?

उत्तर- सच तो यह है कि हिन्दी की कृपा से मेरा जीवन चल पड़ा। वरना रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करना मुश्किल हो जाता।उन दिनों ग्वालियर में बिड़ला फैक्ट्री में जापानी तकनीक से एक फैक्ट्री लगायी गयी। जापानी इंजीनियरों को हिन्दी नहीं आती थी और फैक्ट्री में काम करने वाले भारतीयों को जापानी। मुझे बुलाया गया और एक दुभाषिये के रूप में मैंने चार सौ रुपये महीने पर काम करना शुरू कर दिया। यहाँ मैंने चार साल काम किया और हिन्दी में बहुत से लेख लिखे जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

प्रश्न- क्या जापानी और हिन्दी साहित्य में कोई समानता है ?

उत्तर- दोनों का लोकसाहित्य लगभग समान है। मणिपुर और राजस्थान की लोककथाएँ जापान की लोककथाओं जैसी ही हैं। इसका कारण है कि जापान की संस्कृति चीन और भारत की मिश्रित संस्कृति है। मैं भारत को दादा और चीन को पिता मानता हूँ। हिन्दी विश्व-शांति की भाषा बने और मैं जीवनपर्यन्त इससे जुड़ा रहूँ यह मेरी कामना है।

प्रश्न- जापान में हिन्दी की क्या स्थिति है ?

उत्तर- जापान में भारतीयों और हिन्दी भाषा का बहुत अधिक सम्मान है जापान की दो नेशनल यूनिवर्सिटी ओसाका और टोकियो में बी0 ए0 और एम0 ए0 स्तर पर हिन्दी पढ़ाई जाती है। भारत के लिए यह गौरव का विषय होना चाहिए। यहाँ के लोग भी जापानी सीख रहें हैं। पहले यहाँ सिर्फ सर्टिफिकेट डिप्लोमा कोर्स था अब बी0 ए0 कोर्स भी है और हर साल बहुत लोग बी0 ए0 की परीक्षा में बैठते हैं। मेरा यह मानना है कि भाषा देशांे को भावना के स्तर पर जोड़ती है। जापानी में संस्कृत शब्द भरे पड़े हैं। इन दिनों बंग्ला भाषा भी जापान में जोर पकड़ रही है, क्योंकि कलकत्ता (कोलकाता) एशिया का दरवाजा है एक समय में सबसे ज्यादा जापानी कलकत्ता में ही रहते थे। अब तो पूरे देश में बिखर गये हैं।

प्रश्न- जापान में और कौन विशिष्ट लोग हिन्दीसेवा में रत हैं ?

उत्तर- प्रो0 दोइ ने टोकियो विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना की। वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। प्रो0 तोषियोतनाका ने भीष्म साहनी के 'तमस' का जापानी में अनुवाद किया है। प्रो0 कोगा ने 'जापानी-हिन्दी कोश' की रचना की है। उन्हांेने 'गांधी जी की आत्मकथा' का जापानी में अनुवाद भी किया है। इसके लिए उन्होंने गुजराती भी सीखी। प्रो0 मोजोकामी हरसाल हिन्दी का एक नाटक तैयार करते हैं और उसका मंचन करने के लिए भारत आते हैं। प्रो0 साकाता ने भी हिन्दी साहित्य पर बहुत काम किया है।

प्रश्न- आपने भी तो हिन्दी की कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का जापानी में अनुवाद किया है ?

उत्तर- हाँ मुझे, भगवतीचरण वर्मा का उपन्यास 'चित्रलेखा' बहुत पसंद आया, इसलिए मैंने उसका जापानी में अनुवाद किया।

प्रश्न- इसके अलावा आप ने और भी कई पुस्तकें लिखी हैं?

उत्तर- टैगोर और गांधी: एक तुलनात्मक अध्ययन', 'जापानी आत्मा की खोज भारत में चालीस साल पुनर्विचार और सिंहावलोकन जैसी कुछ पुस्तकें लिखीं हैं। अभी एक पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार हुई है भारत वर्ष में 45 साल मेरी हिन्दी यात्रा।

प्रश्न- आज की नयी पीढ़ी जो पश्चिम सभ्यता के पीछे भाग रही है। आप उनसे क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर- नयी पीढ़ी अपनी सभ्यता संस्कृति से दूर होती जा रही है, यह बड़े दुःख की बात है। अपने देश को आगे बढ़ाने के लिए अपनी भाषा और संस्कृति ही काम आती है।

प्रश्न- लिखने-पढ़ने के अतिरिक्त आपके और कौन-से शौक हैं ?

उत्तर- मुझे जापानी बगीचा लगाना बहुत अधिक पसंद है। जहाँ जाता हूँ, फूल-पत्ती और पेड़ों के साथ दोस्ती कर लेता हूँ। जगह-जगह पेड़ लगाता हूँ, कुछ लोग जापानी फूल लगाने की कला भी सीखने आते हैं।

प्रश्न- अंत में कोई ऐसी बात जो आप अपने पाठकों से कहना चाहेंगे?

उत्तर- मुझे हमेशा इस बात का खेद रहता है कि जितना भारत माता का नमक खाया उतनी उसकी सेवा नहीं की। भारत बहुत बड़ा देश है। उसका दिल भी बहुत बड़ा है। दुनिया का कोई देश उसका मुकाबला नहीं कर सकता।

जापान में 11 फरवरी सन् 1924 ई0 को जन्मे साइजी माकिनो हिन्दी भवन द्वारा हिन्दी रत्न से सम्मानित किये जा चुके हैं। आपने हिन्दी में कई पुस्तकें लिखी हैं। मूलतः आप पशु चिकित्सक थे, बाद में कुछ समय के लिए आपने दुभाषिये का भी कार्य किया।

हॉस्टल = छात्रावास। परिवेश = वातावरण। फैक्ट्री = कारखाना। दुभाषिया = दो भाषाओं का आपसी अनुवाद करने की योग्यता रखने वाला। जीवन-पर्यन्त = आजीवन।

प्रश्न-अभ्यास

बातचीत से

1.साइजी माकिनो भारत कब और किस कार्य के लिए आये ?

2.साइजी माकिनो ने शांतिनिकेतन की क्या विशेषताएँ बतायी हैं ?

3.साइजी माकिनो को ग्वालियर की बिड़ला फैक्ट्री में क्यों जाना पड़ा ?

4.साइजी की क्या कामना है ?

5.जापान में हिन्दी की क्या स्थिति है ?

6.साइजी ने पाठकों को कौन-सा संदेश देना चाहा है ?

7.हिन्दी भाषा के क्षेत्र में कुछ जापानी लेखकों ने कार्य किये हैं। स्तम्भ 'क' में कार्य एवं स्तम्भ 'ख' में उनके नाम लिखे गये हैं उनका सही-सही मिलान कीजिए-

‘क’ कार्य ‘ख’ नाम
भीष्म साहनी के ‘तमस’ का हिन्दी अनुवाद प्रो0 मिजोकामी
‘जापानी-हिन्दी कोश’ व ‘गांधी जी की आत्मकथा’ साइजी माकिनो
का अनुवाद
हिन्दी नाटक लेखन और मंचन प्रो0 दोइ
हिन्दी साहित्य का काम प्रो0 ताषियोतनाका
टोकियो विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग प्रो0 कोगा
की स्थापना
चित्रलेखा का जापानी अनुवाद प्रो0 साकाता
विचार और कल्पना

1. यदि पेड़-पौधे और जीव-जन्तु भी भाषा बोलने में सक्षम होते तो इसका वातावरण पर क्या प्रभाव पड़ता ?
2. हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है किन्तु देश के अनेक प्रदेशों मंे इसके अतिरिक्त प्रादेशिक भाषाएँ भी बोली जाती हैं। नीचे लिखी गयी भाषाओं के उनके प्रदेशों से मिलान कीजिए-
मराठी आन्ध्रप्रदेश
मलयालम तमिलनाडु
कन्नड़ केरल
तेलगू महाराष्ट्र
तमिल कर्नाटक
कुछ करने काs
1. साक्षात्कार, हिन्दी गद्य की एक लघु विधा है। इसमंे किसी क्षेत्र में विशेष उपलब्धि पाये हुए व्यक्ति से बातचीत करके उसके सम्बन्ध में आवश्यक

जानकारी पाठक या श्रोता को दी जाती हैं। आप अपने क्षेत्र के किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का साक्षात्कार लें और उसे कक्षा में प्रस्तुत करें।

2. '14 सितम्बर' प्रतिवर्ष 'हिन्दी-दिवस' के रूप में मनाया जाता है। पता लगाइए कि हिन्दी-दिवस 14 सितम्बर को ही क्यों मनाया जाता है।

भाषा की बात

1. भाषा के सौन्दर्य से सम्बन्धित निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए-

(क) समझ नहीं आता कि गुरुदेव के व्यक्तित्व ने वातावरण को इतना सुंदर बना दिया है या इतने शांत वातावरण ने ही गुरुदेव जैसे महापुरुष की रचना की है।

(ख) समझ नहीं आता कि आपकी महानता ने आपको इतना सुंदर बना दिया है या आपकी सुन्दरता ने आपको महान बना दिया है।

-इसी प्रकार से किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान की दो विशेषताओं को लेकर दो वाक्यों की रचना कीजिए।

2. 'शांति' में 'निकेतन' जोड़कर 'शांतिनिकेतन' बना है। इसी प्रकार 'शांति' में अन्य शब्दों को जोड़कर तीन नये शब्द बनाइए।

3. जिस शब्द से क्रिया की विशेषता प्रकट हो उसे क्रियाविशेषण कहते हैं, जैसे-

(क) वह धीरे-धीरे टहलता है।

(ख) पी0 टी0 उषा तेज दौड़ती हैं।

यहाँ सभी रेखांकित शब्द क्रियाविशेषण हैं क्योंकि पहले वाक्य में 'धीरे-धीरे' क्रिया 'टहलना'

की विशेषता और दूसरे वाक्य में 'तेज' शब्द 'दौड़ने' क्रिया की विशेषता बता रहा है। इस

प्रकार पाठ में आये किन्हीं चार क्रियाविशेषण (शब्दों) को छाँटकर सम्बन्धित क्रियाओं के

साथ लिखिए।

इसे भी जानें

एक भाषा को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना अनुवाद कहलाता है। जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है, उसे स्रोत भाषा और जिसमें अनुवाद करते हैं, उसे लक्ष्य भाषा
कहते हैं। अनुवाद करने वाला अनुवादक होता है। एक अच्छे अनुवादक को स्रोत और
लक्ष्य भाषा की जानकारी होने के साथ-साथ दोनों देशों की प्रकृति, सांस्कृतिक अवस्था एवं
लोकजीवन की भी अच्छी समझ होनी चाहिए।

पाठ 10

बाल छवि, विनय के पद, सीता-स्वयंवर

('बालछवि' में तुलसीदास ने श्रीरामचन्द्र के बाल सौन्दर्य, 'विनय के पद' में भगवान के प्रति अनन्य भक्ति तथा 'सीता-स्वयंवर' में स्वयंवर-स्थल पर पहुँचे श्रीराम के अद्भुत सौन्दर्य का वर्णन किया है।

बाल-छवि

तन की दुति स्याम सरोरुह, लोचन कंज की मंजुलताई हरैं ।

अति सुन्दर सोहत धूरि भरे, छबि भूरि अनंग की दूरि धरैं ।।

दमकैं दतियाँ दुति दामिनि ज्यौं, किलकैं कल बाल विनोद करैं ।

अवधेस के बालक चारि सदा, तुलसी मन-मन्दिर में बिहरैं ।।

- कवितावली

विनय के पद

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी ।

हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पापपुंज - हारी ।।

नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो ?

मो समान आरत नहिं, आरतिहर तोसों ।

ब्रह्म तू, हौं जीव, तू ही ठाकुर, हौं चेरो ।

तात, मात, गुरु, सखा तू सब बिधि हितु मेरो ।।

तोहिं-मोहिं नाते अनेक मानिए जो भावै ।

ज्यों त्यों तुलसी कृपालु ! चरन-सरन पावै ।।

- विनयपत्रिका

सीता-स्वयंवर

सीय स्वयंबरु देखिय जाई । ईसु काहि धौं देइ बड़ाई।

लखन कहा जस भाजनु सोई । नाथ कृपा तव जापर होई।।

हरषे मुनि सब सुनि बर बानी । दीन्हि असीस सबहिं सुखु मानी।।

पुनि मुनि वृन्द समेत कृपाला । देखन चले धनुष मखसाला।

रंगभ्ूामि आये दोउ भाई । असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई।।

चले सकल गृह काज बिसारी । बाल जुबान जरठ नर नारी।।

राजकुँअर तेहि अवसर आये । मनहु मनोहरता तन छाये।।

गुन सागर नागर बर बीरा । सुन्दर स्यामल गौर सरीरा।।

राज समाज बिराजत रूरे । उडगन महँु जनु जुग बिधु पूरे।।

जिन्हकें रही भावना जैसी । प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी।।

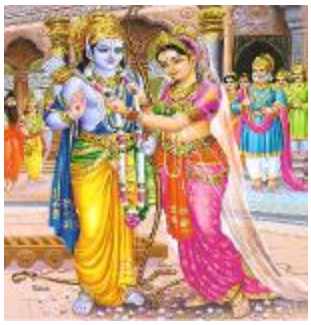

दोहा-नारि बिलोकहिं हरषि हियँ, निज-निज रुचि अनुरूप।

जनु सोहत सिंगार धरि, मूरति परम अनूप।।

- रामचरितमानस: बालकांड

गोस्वामी तुलसीदास का जन्म सन् 1532 ई0 में बाँदा जिला के राजापुर ग्राम में हुआ था। माना जाता है कि बचपन में ही इनके माता-पिता का निधन हो गया था। इसलिए इनका बचपन अनेक विपदाओं में व्यतीत हुआ। इन्हें अनाथ जानकर स्वामी नरहरिदास ने अपने संरक्षण में ले लिया। गुरु की कृपा से इन्हें वेद-वेदांग, दर्शन, इतिहास आदि के अध्ययन-मनन का अवसर मिला। इनकी प्रमुख रचनाएँ ये हैं - 'कवितावली', 'गीतावली', 'रामचरितमानस', 'विनय-पत्रिका', 'दोहावली', 'बरवै रामायण', 'कृष्ण गीतावली' आदि। सन् 1623 ई0 में काशी में इनका देहावसान हो गया।

दुति = चमक, सुन्दरता।सरोरुह = कमल। मंजुलताई = सुन्दरता। अनंग = कामदेव। दामिनि = बिजली। बर-बानी = श्रेष्ठ वाणी। वृन्द = समूह। नागर = चतुर। रूरे = उत्तम। उडगन = तारागण। जुग = दो। बिधु = चन्द्रमा।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. कौन-सी श्रेष्ठ वाणी सुनकर मुनिगण हर्षित हो उठे ?

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) तोहिं- मोहिं नाते अनेक मानिए जो भावै।

(ख) जिन्हकें रही भावना जैसी, प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी।

(ग अवधेस के बालक चारि सदा, तुलसी मन-मन्दिर में बिहरैं।

3. 'बाल, जुबान, जरठ, नर-नारी।' सभी घर का कार्य छोड़कर क्यों चल पड़े ?

कुछ करने को

1. कक्षा में दो टोलियाँ बनाकर सूर, तुलसी और कबीर की रचनाओं पर आधारित अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।

2. गोस्वामी तुलसीदास की कुल 12 प्रामाणिक रचनाएँ हैं। अपने शिक्षक या अन्य बड़ों की सहायता से उनके नामों का संकलन कीजिए।

भाषा की बात

1. विनय के पद में आये 'हौं' शब्द का अर्थ है-'मैं' और 'मोसो' का अर्थ है-'मुझसे'। पद में आये ब्रजभाषा के ऐसे शब्दों को चुनकर उनका अर्थ लिखिए।

2. जब उपमेय में उपमान की भिन्नता होते हुए भी उपमेय की उपमान के रूप में संभावना की जाय, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। सीता स्वयंवर के अन्तिम दोहे 'जनु सोहत सिंगार धरि, मूरति परम अनूप' में उत्प्रेक्षा अलंकार है। क्योंकि राम के रूप में शृंगार के रूप की संभावना व्यक्त की गयी है। इसमें संभावना के लिए जनु, मनु, जानो, मानो आदि का प्रयोग होता है। इसी प्रसंग में आए हुए उत्प्रेक्षा अलंकार के अन्य उदाहरण छाँटकर लिखिए।

3. निम्नलिखित शब्दों का तत्सम रूप लिखिए -

दुति, स्याम, अवधेस, सरीर, सरन।

4.'चपला' का पर्यायवाची कौन शब्द नहीं है ?

(क) विद्युत (ख) दामिनी (ग) द्युति (घ) चंचला

इसे भी जानें

गोस्वामी तुलसीदास ने मुख्य रूप से दोहा और चौपाई में रचना की है। दोहे के प्रथम और द्वितीय पंक्ति में चौबीस-चौबीस मात्राएँ होती हैं। चौपाई के प्रत्येक चरण में सोलह-सोलह मात्राएँ होती हैं । मात्रा की गणना निम्न प्रकार से की जाती है-

। । । । ऽ । । ऽ । । ऽऽ ऽ। । ऽ । । ऽ। । ऽ ऽ

लखन कहा जस भाजनु सोई। नाथ कृपा तव जापर होई।।

(। = एक मात्रा, ऽ = दो मात्रा)

पाठ 11

आत्मनिर्भरता

(प्रस्तुत निबन्ध में लेखक ने युवकों को स्वयं पर निर्भर रहने की प्रेरणा दी है।)

विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि नम्रता ही स्वतन्त्रता की धात्री या माता है। लोग भ्रमवश अहंकार-वृत्ति को उसकी माता समझ बैठते हैं, पर वह उसकी सौतेली माता है जो उसका सत्यानाश करती है। चाहे यह सम्बन्ध ठीक हो या न हो, पर इस बात को सब लोग मानते हैं कि आत्मसंस्कार के लिए थोड़ी-बहुत मानसिक स्वतन्त्रता परम आवश्यक है-चाहे उस स्वतन्त्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता ही से उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्मनिर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है। युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे। ये बातें आत्म-मर्यादा के लिए आवश्यक हैं। यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है - हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे कर्म, हमारे भोग, हमारे घर की और बाहर की दशा, हमारे बहुत से अवगुण और थोड़े गुण सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए। नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है, जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मन्द हो जाती है, जिसके कारण आगे बढ़ने के समय भी वह पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर चटपट किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर लगाये। सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में, प्रत्येक स्थिति के बीच, अपनी राह आप निकालती है।

अब तुम्हें क्या करना चाहिए, इसका ठीक-ठीक उत्तर तुम्हीं को देना होगा, दूसरा कोई नहीं दे सकता। कैसा भी विश्वासपात्र मित्र हो, तुम्हारे इस काम को वह अपने ऊपर नहीं ले सकता। हम अनुभवी लोगों की बातों को आदर के साथ सुनें, बुद्धिमानों की सलाह को कृतज्ञतापूर्वक मानें, पर इस बात को निश्चित समझकर कि हमारे कामों से ही हमारी रक्षा व हमारा पतन होगा, हमें अपने विचार और निर्णय की स्वतन्त्रता को दृढ़तापूर्वक बनाये रखना चाहिए। जिस पुरुष की दृष्टि सदा नीची रहती है, उसका सिर कभी ऊपर नहीं होगा। नीची दृष्टि रखने से यद्यपि रास्ते पर रहेंगे, पर इस बात को न देखेंगे कि यह रास्ता कहाँ ले जाता है। चित्त की स्वतन्त्रता का मतलब चेष्टा की कठोरता या प्रकृति की उग्रता नहीं है। अपने व्यवहार में कोमल रहो और अपने उद्देश्यों को उच्च रखो, इस प्रकार नम्र और उच्चाशय दोनों बनो। अपने मन को कभी मरा हुआ न रखो। जितना ही जो मनुष्य अपना लक्ष्य ऊपर रखता है, उतना ही उसका तीर ऊपर जाता है।

संसार में ऐसे-ऐसे दृढ़चित्त मनुष्य हो गये हैं जिन्होंने मरते दम तक सत्य की टेक नहीं छोड़ी, अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई काम नहीं किया। राजा हरिश्चन्द्र के ऊपर इतनी-इतनी विपत्तियाँ आयीं, पर उन्होंने अपना सत्य नहीं छोड़ा। उनकी प्रतिज्ञा यही रही-

'चन्द टरै, सूरज टरै, टरै जगत ब्यौहार।
पै दृढ़ श्रीहरिचन्द को, टरै न सत्य विचार।।'

महाराणा प्रताप जंगल-जंगल मारे-मारे फिरते थे, अपनी स्त्री और बच्चों को भूख से तड़पते देखते थे, परन्तु उन्होंने उन लोगों की बात न मानी जिन्होंने उन्हें अधीनतापूर्वक जीते रहने की सम्मति दी, क्योंकि वे जानते थे कि अपनी मर्यादा की चिन्ता जितनी अपने को हो सकती है, उतनी दूसरे को नहीं। एक बार एक रोमन राजनीतिक बलवाइयों के हाथ में पड़ गया। बलवाइयों ने उससे व्यंग्यपूर्वक पूछा, 'अब तेरा किला कहाँ है?' उसने हृदय पर हाथ रखकर उत्तर दिया, 'यहाँ।' ज्ञान के जिज्ञासुओं के लिए यही बड़ा भारी गढ़ है। मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि जो युवा पुरुष सब बातों में दूसरों का सहारा चाहते हैं, जो सदा एक-न-एक नया अगुआ ढूँढ़ा करते हैं और उनके अनुयायी बना करते हैं, वे आत्मसंस्कार के कार्य में उन्नति नहीं कर सकते। उन्हें स्वयं विचार करना, अपनी सम्मति आप स्थिर करना, दूसरों की उचित बातों का मूल्य समझते हुए भी उनका अन्धभक्त न होना सीखना

चाहिए। तुलसीदास जी को लोक में जो इतनी सर्वप्रियता और कीर्ति प्राप्त हुई, उनका दीर्घ जीवन जो इतना महत्त्वमय और शान्तिमय रहा, सब इसी मानसिक स्वतन्त्रता, निर्द्वन्द्वता और आत्मनिर्भरता के कारण। वही उनके समकालीन केशवदास को देखिए जो जीवन भर विलासी राजाओं के हाथ की कठपुतली बने रहे, जिन्होंने आत्मस्वतन्त्रता की ओर कम ध्यान दिया और अन्त में आप अपनी बुरी गति की। एक इतिहासकार कहता है- 'प्रत्येक मनुष्य का भाग्य उसके हाथ में है। प्रत्येक मनुष्य अपना जीवन-निर्वाह श्रेष्ठ रीति से कर सकता है। यही मैंने किया है और यदि अवसर मिले तो यही करूँ।' इसे चाहे स्वतन्त्रता कहो, चाहे आत्म-निर्भरता कहो, चाहे स्वावलम्बन कहो, जो कुछ कहो, यह वही भाव है जिससे मनुष्य और दास में भेद जान पड़ता है, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से राम-लक्ष्मण ने घर से निकल बड़े-बड़े पराक्रमी वीरों पर विजय प्राप्त की, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से हनुमान ने अकेले सीता की खोज की, यह वही भाव है जिसकी प्रेरणा से कोलम्बस ने अमरीका समान बड़ा महाद्वीप ढूँढ़ निकाला।

इसी चित्तवृत्ति की दृढ़ता के सहारे दरिद्र लोग दरिद्रता और अपढ़ लोग अज्ञता से निकलकर उन्नत हुए हैं तथा उद्योगी और अध्यवसायी लोगों ने अपनी समृद्धि का मार्ग निकाला है। इसी चित्तवृत्ति के आलम्बन से पुरुष-सिंहों को यह कहने की क्षमता हुई है, 'मैं राह ढूँढ़ूँगा या राह निकालूँगा।' यही चित्तवृत्ति थी जिसकी उत्तेजना से शिवाजी ने थोड़े वीर मराठे सिपाहियों को लेकर औरंगजेब की बड़ी भारी सेना पर छापा मारा और उसे तितर-बितर कर दिया। यही चित्तवृत्ति थी जिसके सहारे एकलव्य बिना किसी गुरु या संगी-साथी के जंगल के बीच निशाने पर तीर पर तीर चलाता रहा और अन्त में एक बड़ा धनुर्धर हुआ। यही चित्तवृत्ति है जो मनुष्य को सामान्य जनों से उच्च बनाती है, उसके जीवन को सार्थक और उद्देश्यपूर्ण करती है तथा उसे उत्तम संस्कारों को ग्रहण करने योग्य बनाती है। जिस मनुष्य की बुद्धि और चतुराई उसके हृदय के आश्रय पर स्थित रहती है, वह जीवन और कर्म-क्षेत्र में स्वयं भी श्रेष्ठ और उत्तम रहता है और दूसरों को भी श्रेष्ठ और उत्तम बनाता है। प्रसिद्ध उपन्यासकार स्टॉक एक बार ऋण के बोझ से बिलकुल दब गये। मित्रों ने उनकी सहायता करनी चाही, पर उन्हांेने यह बात स्वीकार नहीं की और स्वयं अपनी प्रतिभा का सहारा लेकर अनेक उपन्यास थोड़े समय के बीच लिखकर लाखांे रुपये का ऋण अपने सिर पर से उतार दिया।

-रामचन्द्र शुक्ल

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म बस्ती जिले के अगोना नामक गाँव में सन् 1884 ई0 में हुआ था। आप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष थे। हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ समीक्षक और हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखक के रूप में शुक्ल जी की प्रसिद्धि है। शुक्ल जी ने मनोविज्ञान के विषयों को लेकर श्रेष्ठ निबन्धों की रचना की है। आप के निबन्धों में विषय के विवेचन के साथ ही आपके व्यक्तित्व की छाप रहती है। तर्क-वितर्क, भाव और विचार, मनोविज्ञान और साहित्यशास्त्र, का सन्तुलन इनके निबन्धों में है। शुक्ल जी की भाषा सांकेतिक और परिष्कृत है। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', 'चिन्तामणि', 'गोस्वामी तुलसीदास' आदि आप के प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इनका निधन सन् 1941 ई0 में हुआ।

आत्म संस्कार = अपना सुधार। आत्म मर्यादा = अपनी सीमा में रहना, स्वयं को सदाचार में रखना। उच्चाशय = ऊँचा लक्ष्य, ऊँचा अभिप्राय। बलवाईं = दंगा करने वाले। जिज्ञासा = जानने की इच्छा। अन्धभक्ति = बिना विचारे किसी पर श्रद्धा करना। निर्द्वन्द्वता = सब तरह से स्वच्छन्द। अध्यवसायी = लगातार यत्न करने वाला, उद्यमशील, उत्साही। चित्तवृत्ति = मन का भाव।

प्रश्न-अभ्यास

निबन्ध से

1. इस पाठ का उद्देश्य क्या है? सही विकल्प पर सही का चिह्न (□) लगाइए।

(क) युवाओं में नयी स्फूर्ति भरना।

(ख) युवाओं को कर्म में लगाना।

(ग) युवाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देना।

(घ) युवाओं को महापुरुषों के जीवन के प्रेरक-प्रसंगों की जानकारी देना।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) नम्रता ही स्वतन्त्रता की धात्री या माता है।

(ख) उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं।

(ग) मनुष्य का बेड़ा उसके हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर लगाये।

(घ) अध्यवसायी लोगों ने अपनी समृद्धि का मार्ग निकाला है।

3. उपन्यासकार स्टॉक ने अपना ऋण किस तरह उतारा ?

4. समूह 'ख' का कौन-सा शब्द या वाक्यांश समूह 'क' में दिये गये किन से सम्बन्धित है ? छाँटकर समूह 'क' के सम्मुख लिखिए -

समूह 'क' समूह 'ख'

हरिश्चन्द्र - सर्वप्रिय

महाराणा प्रताप- छापामार युद्ध

तुलसीदास - राजाओं के हाथ की कठपुतली

केशवदास - अमेरिका की खोज

हनुमान - धनुर्धर

कोलम्बस - सत्यवादी

शिवाजी - अधीनता नहीं स्वीकार की

एकलव्य - सीता की खोज

विचार और कल्पना

1. आदर्श व्यक्ति के चरित्र में कौन-कौन से गुण आवश्यक हैं?

2. नम्रता और दब्बूपन में क्या अन्तर होता है ?

3. आत्मनिर्भरता व्यक्ति का बहुत बड़ा गुण होता है। इससे कुछ करने की शक्ति का विकास होता है। आप अपने किन-किन कार्यों के लिए दूसरे पर निर्भर नहीं हैं तथा किन-किन कार्यों के लिए आप दूसरों पर निर्भर रहते हैं। अलग- अलग सूची बनाइए।

कुछ करने को

1. सच्ची लगन से ही एकलव्य बिना किसी गुरु के बहुत बड़ा धनुर्धर बन गया। सच्ची लगन से कठिन कार्य आसानी से पूर्ण हो जाते हैं। आपकी पाठ्यपुस्तक में कुछ अंश अवश्य आये होंगे, जो एक बार में आपकी समझ में नहीं आते होंगे। बार-बार पढ़कर आप उन्हें स्पष्टतः समझ सकते हैं। पाठ में आये ऐसे अंशों को खोजकर लिखिए।

2. अपने शिक्षक से राजा हरिश्चन्द्र, कोलम्बस, महाराणा प्रताप, शिवाजी, एकलव्य, हनुमान के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

भाषा की बात

1. 'आत्मसंस्कार' शब्द में 'संस्कार' के पूर्व 'आत्म' शब्द जुड़ा हुआ है। दिये गये शब्दों के पूर्व 'आत्म' लगाकर नये शब्दों की रचना कीजिए-

परिचय, चिन्तन, निर्भर, बोध, कथन।

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर इनका वाक्य में प्रयोग कीजिए -

मुँह ताकना, अपने पैरों के बल खड़ा होना, दृष्टि नीची होना, सिर ऊपर होना, अपने हाथ में अपना भाग्य होना, कठपुतली बनना, ॉदय पर हाथ रखना।

3. 'जीवननिर्वाह' समास पद का विग्रह है-'जीवन का निर्वाह'। सामासिक शब्द बनाने पर 'का' कारकचिह्न का लोप हो गया है। 'का' सम्बन्ध कारक का चिह्न है। अतः यह सम्बन्ध कारक तत्पुरुष समास है। नीचे लिखे समास पदों का विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए -

अहंकारवृत्ति, आत्मसंस्कार, आत्ममर्यादा, चित्तवृत्ति, राम-लक्ष्मण ।

4. निम्नलिखित में से प्रधान उपवाक्य तथा आश्रित उपवाक्य को अलग-अलग लिखिए -

विद्वानों का यह कथन ठीक है कि नम्रता ही स्वतन्त्रता की धात्री या माता है।

लोग भ्रमवश अहंकारवृŸि को उसकी माता समझ बैठते हैं, पर वह उसकी सौतेली माता है जो उसका सत्यानाश करती है।

सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में ..... अपनी राह आप निकालती है।

5. 'स्वतंत्रता' का विपरीतार्थक है -

(क) आजादी

(ख) परतन्त्रता

(ग) स्वावलम्बन

(घ) स्वराज्य

6. जब दो पदांे में समास होता है तो प्रायः उनके बीच सामासिक चिह्न (-) लगा दिया जाता है किन्तु आवश्यकतानुसार दो पदों में सन्धि भी की जाती है, जैसे- विद्यालय, विद्यार्थी। ध्यान रहे कि द्वन्द्व समास जैसे-माता-पिता, राम-लक्ष्मण आदि में सामासिक चिह्न अनिवार्य है अन्यथा सीताराम (सीता के राम) तथा सीता-राम (सीता और राम) समास में अन्तर नहीं हो सकेगा। अन्य सामासिक पदों को सयंुक्त रूप में लिखा जा सकता है।

इसे भी जानें

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित 22 भाषाओं को बोलने वालों की संख्या लगभग 90 प्रतिशत है।

पाठ 12

पहरुए सावधान रहना

(प्रस्तुत कविता में कवि ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश के रक्षकों और सीमा के पहरेदारों को देश की सुरक्षा और नवनिर्माण के लिए प्रेरित किया है।)

आज जीत की रात
पहरुए, सावधान रहना
खुले देश के द्वार

अचल दीपक समान रहना।
प्रथम चरण है नये स्वर्ग का
है मंजिल का छोर
इस जन-मन्थन से उठ आयी
पहली रत्न हिलोर
अभी शेष है पूरी होना
जीवन मुक्ता डोर
क्योंकि नहीं मिट पायी दुख की
विगत साँवली कोर
ले युग की पतवार
बने अम्बुधि महान रहना
पहरुए, सावधान रहना।
विषम शृंखलाएँ टूटी हैं
खुली समस्त दिशाएँ
आज प्रभंजन बनकर चलतीं
युग बन्दिनी हवाएँ
प्रश्नचिह्न बन खड़ी हो गयीं
यह सिमटी सीमाएँ
आज पुराने सिंहासन की
टूट रही प्रतिमाएँ
उठता है तूफान, इन्दु तुम
दीप्तिमान रहना
पहरुए, सावधान रहना।
ऊँची हुई मशाल हमारी
आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी
छायाओं का डर है

शोषण से मृत है समाज
कमजोर हमारा घर है
किन्तु आ रही नयी जिन्दगी
यह विश्वास अमर है
जनगंगा में ज्वार,
लहर तुम प्रवहमान रहना
पहरुए, सावधान रहना ।

-गिरिजाकुमार माथुर

गिरिजाकुमार माथुर का जन्म सन् 1919 ई0 में अशोक नगर (मध्य प्रदेश) में हुआ था। 'मंजीर', 'नाश और निर्माण', 'धूप के धान', 'शिला पंख चमकीले' आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं। इनकी कविताओं में देश-प्रेम, प्रकृति प्रेम और मानव प्रेम समाहित है। सन् 1994 ई0 में आपका निधन हो गया।

पहरुए = पहरेदार, देश के रक्षक, सीमा के प्रहरी। अचल = अटल, अडिग। मंजिल =पड़ाव। जन मन्थन = जनता द्वारा किये गये आन्दोलन से। रत्न हिलोर = रत्न से भरी जल तरंग। शेष = बाकी बचा हुआ। मुक्ता = मोती। विगत = अतीत, बीता हुआ। साँवली = परतन्त्रता के समय की दुःखद परिस्थितियाँ। कोर = किनारा कोना। पतवार = नाव में पीछे लगी हुई तिकोनी लकड़ी जिसके द्वारा नाव को इधर-उधर मोड़ते या घुमाते हैं। अम्बुधि = समुद्र।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. 'जीत की रात' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

2. 'ले युग की पतवार' किसके लिए कहा गया है ?

3. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना।

(ख) क्योंकि नहीं मिट पायी दुख की विगत साँवली कोर।

(ग) ले युग की पतवार बने अम्बुधि महान रहना।

4. कवि पहरुओं को सावधान रहने के लिए क्यों कहता है ?

5. कविता की रिक्त पंक्तियांें को पूरा कीजिए -

ऊँची हुई मशाल हमारी

.....

शत्रु हट गया, लेकिन उसकी

.....

शोषण से मृत है समाज

.....

किन्तु आ रही नयी जिन्दगी

.....

विचार और कल्पना

1. नये युग की पतवार किनके हाथों में है ?

2. स्वतन्त्रता के बाद आज भी अनेक ऐसी समस्याएँ हैं, जो देश को तोड़ने में लगी हुई हैं। कुछ प्रमुख समस्याओं को लिखिए।

कुछ करने को

1. अपने आस-पास में रहने वाले किसी सैनिक से मिलकर उसके कार्यों के बारे में जानकारी लीजिए।

2. देश-प्रेम के इस गीत को कक्षा में पाँच-पाँच का समूह बनाकर प्रस्तुत कीजिए और देखिए कि किस समूह की प्रस्तुति बहुत अच्छी रही।

3. दी गयी पंक्तियों के आधार पर कविता को आगे बढ़ाइए -

सुनो-सुनो हे भाई-बहना।

हरदम सावधान तुम रहना।

.....।

.....।

भाषा की बात

1. 'दीप्तिमान' में 'दीप्ति' शब्द में 'मान' प्रत्यय जुड़ा है। मान/मती, वान/वती के जुड़ने से
संज्ञा शब्द विशेषण बन जाता है। शब्द के अन्त में 'इ' रहने पर 'मान' अन्यत्र 'वान' जोड़ते हैं। नीचे लिखे शब्दों में मान/वान जोड़कर नया शब्द बनाइए -
बुद्धि, गति, गुण, शक्ति, रूप।

पाठ 13

दुःख का अधिकार

(इस कहानी में यशपाल ने एक गरीब बुढिया की व्यथा का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है।)

मनुष्यों की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती हैं। प्रायः पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्जा निश्चित करती है। वह हमारे लिए अनेक बन्द दरवाजे खोल देती है परन्तु कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि हम जरा नीचे झुक कर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं, उस समय वह पोशाक ही बन्धन और बड़प्पन बन जाती है। जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देती उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती है।

बाजार में, फुटपाथ पर कुछ खरबूजे डलिया पर, कुछ जमीन पर बिक्री के लिए रखे थे। खरबूजों के समीप एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी रो रही थी। खरबूजे बिक्री के लिए थे, परन्तु उन्हें खरीदने के लिए कोई कैसे आगे बढ़ता। खरबूजों को बेचने वाली तो कपड़े से मुँह छिपाये सिर को घुटने पर रखे फफक-फफक कर रो रही थी।

पड़ोस की दुकानों के तख्तों पर बैठे या बाजार में खड़े लोग घृणा से उस स्त्री के सम्बन्ध में बात कर रहे थे। उस स्त्री का रोना देखकर मन में एक व्यथा-सी उठी पर उसके रोने का कारण जानने का उपाय क्या था।

फुटपाथ पर उसके समीप बैठ सकने में मेरी पोशाक ही व्यवधान बन खड़ी हो गयी।

एक आदमी ने घृणा से एक तरफ थूकते हुए कहा, ‘क्या जमाना है। जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगा कर बैठी है।’

दूसरे साहब अपनी दाढ़ी खुजाते हुए कह रहे थे, ‘अरे जैसी नीयत होती है अल्लाह भी वैसी ही बरकत देता है।’

सामने के फुटपाथ पर खड़े एक आदमी ने दियासलाई की तीली से कान खुजाते हुए कहा, ‘अरे इन लोगों का क्या है। ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।’

परचून की दुकान पर बैठे लालजी ने कहा, ‘अरे भाई, उनके लिए मरे-जिये का कोई मतलब न हो, पर दूसरे के धर्म-ईमान का तो ख्याल करना चाहिए। जवान बेटे के मरने पर तेरह दिन का सूतक होता है और यहाँ सड़क पर बाजार में आकर खरबूजे बेचने बैठ गयी है। हजार आदमी आते-जाते हैं। कोई क्या जानता है कि इसके घर में सूतक है। कोई इसके खरबूजे खा ले तो उसका ईमान-धर्म कैसे रहेगा? क्या अन्धेर है।’

पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने से पता लगा-उसका तेईस बरस का जवान लड़का था। घर में उसकी बहू और पोता-पोती हैं। लड़का शहर के पास डेढ़ बीघा जमीन में कछियारी करके परिवार का निर्वाह करता था। खरबूजों की डलिया बाजार में पहुँचाकर कभी लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता, कभी माँ बैठ जाती।

लड़का परसों सुबह मुँह-अँधेरे बेलों में से पके खरबूजे चुन रहा था। गीली मेड़ की तरावट में विश्राम करते हुए एक साँप पर लड़के का पैर पड़ गया। साँप ने लड़के को डस लिया।

लड़के की बुढिया माँ बावली होकर ओझा को बुला लायी। झाड़ना-फूँकना हुआ। नागदेव की पूजा हुई। पूजा के लिए दान-दक्षिणा चाहिए। घर में कुछ आटा और अनाज था, दान-दक्षिणा में उठ गया। माँ, बहू और बच्चे 'भगवाना' से लिपट-लिपट कर रोये, पर भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला। सर्प के विष से उसका सब बदन काला पड़ गया था।

जिन्दा आदमी नंगा भी रह सकता है परन्तु मुर्दे को नंगा कैसे विदा किया जाय। उसके लिए बाजार की दुकान से नया कपड़ा तो लाना ही होगा, चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी-ककना ही क्यों न बिक जाये।

भगवाना परलोक चला गया। घर में जो कुछ चूनी-भूसी थी सो उसे विदा करने में चली गयी। बाप नहीं रहा तो क्या। लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे। दादी ने उन्हें खाने के लिए खरबूजे दे दिये लेकिन बहू को क्या देती। बहू का बदन बुखार से तवे की तरह तप रहा था। अब बेटे के बिना बुढिया को दुवन्नी, चवन्नी भी कौन उधार देता। बुढिया रोते-रोते और आँखंे पोछते-पोछते भगवाना के बटोरे हुए खरबूजे डलिया में समेट कर बाजार की ओर चली। और चारा भी क्या था?

बुढिया खरबूजे बेचने का साहस करके आयी थी, परन्तु सिर पर चादर लपेटे सिर को घुटनों पर टिकाये हुए फफक-फफक कर रो रही थी।

कल जिसका बेटा चल बसा, आज वह बाजार में सौदा बेचने चली है, हाय रे पत्थर-दिल।

उस पुत्र वियोगिनी के दुःख का अन्दाजा लगाने के लिए पिछले साल अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुखी माता की बात सोचने लगा। वह सम्भ्रान्त महिला पुत्र की मृत्यु के बाद अढ़ाई मास तक पलंग से उठ न सकी थी। उन्हें पन्द्रह-पन्द्रह मिनट बाद पुत्र वियोग से मूर्छा आ जाती थी और मूर्छा न आने की अवस्था में आँखों से आँसू न रुक सकते थे। दो-दो डॉक्टर हरदम सिरहाने बैठे रहते थे। हरदम सिर पर बर्फ रखी जाती थी। शहर भर के लोगों के मन उस पुत्र शोक से द्रवित हो उठते थे।

जब मन को सूझ का रास्ता नहीं मिलता तो बैचेनी से कदम तेज हो जाते हैं। उसी हालत में नाक ऊपर उठाये राह चलने से ठोकरे खाता मैं चला जा रहा था। सोच रहा था.....

शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और ... दुःखी होने का भी एक अधिकार होता है।- यशपाल

यशपाल का जन्म 3 दिसम्बर सन् 1903 ई0 को फिरोजपुर छावनी में हुआ था। ये हिन्दी के श्रेष्ठ प्रगतिशील कथाकार थे। यशपाल ने भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि के साथ क्रान्तिकारी का जीवन भी बिताया था। इनकी कथाओं में मध्यवर्ग की रूढ़ियों, विरोधाभासों और उनके अभावों का चित्रण विशेष रूप से हुआ है। 'उत्तराधिकारी', 'देशद्रोही', 'दादा कामरेड', 'दिव्या', 'झूठा सच', 'सिंहावलोकन' आदि आप की प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। इनका निधन सन् 1976 ई0 में हुआ।

व्यवधान = बाधा। नीयत = भावना, सोच, इरादा। बरकत =लाभ होना। खसम = पति। लुगाई = औरत। सूतक = जन्म या मृत्यु पर अशुद्धि का निर्धारित समय। कछियारी = शाक-सब्जी उगाने का काम। छन्नी-ककना = कलाई में पहने जाने वाले दो गहने-'छन्द' और 'कंगन'। सम्भ्रान्त = सम्मानित, प्रतिष्ठित। द्रवित = पिघला हुआ, बहुत अधिक दःुखी। सहूलियत = आसानी।

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. खरबूजे को खरीदने के लिए लोग आगे क्यों नहीं बढ़ रहे थे ?

2. उस अधेड़ स्त्री को देखकर लोग कौन -कौन सी बातें कह रहे थे ?

3. भगवाना के मरने के बाद दूसरे दिन ही उसकी माँ क्यों सौदा बेचने के लिए बैठ गयी ?

4. लेखक ने अपनी पड़ोसिन से उस अधेड़ स्त्री की तुलना करते हुए कहानी के अन्त में क्या निष्कर्ष निकाला है ?

5. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार व दर्जा निश्चित करती है ।

(ख) जैसी नीयत होती है अल्लाह भी वैसी ही बरकत देता है।

(ग) गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए।

(घ) दुखी होने का भी एक अधिकार होता है।

विचार और कल्पना

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में दैहिक अर्थात् देह से सम्बन्धित, दैविक अर्थात् ईश्वरीय, भौतिक अर्थात् सांसारिक-तीन प्रकार के कष्टों या विपत्तियों का उल्लेख किया गया है। निम्नलिखित में से छाँटकर लिखिए कि कौन-सा कष्ट किस कोटि से सम्बन्धित है-

बाढ़ आना, भूकम्प आना, ज्वर होना, चोरी होना, दिवालिया होना, पोलियो होना। इन श्रेणियों के अलावा भी यदि कष्टों की कोई कोटि बनायी जा सकती है, तो बताइए।

कुछ करने को

1.प्रेमचन्द ने अपनी 'कफन' कहानी में गरीब व्यक्ति की संवेदनशून्यता का बड़ा ही यथार्थ चित्रण किया है। इस कहानी को खोजकर पढ़िए।

2.जरूरतमन्द लोगों की मदद करना ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा है। अपनी कक्षा के छात्र-छात्राओं को प्रेरित करके एक कोष बनाइए और पता लगाकर ऐसे लोगों की मदद कीजिए।

भाषा की बात

1.'अरे जैसी नीयत होती है अल्लाह भी वैसी ही बरकत देता है।' इस वाक्य में 'जैसी नीयत वैसी बरकत' एक कहावत है। कहावतें लोक-प्रचलित उक्तियाँ हैं। इसीलिए इन्हें 'लोकोक्ति' भी कहा जाता है। ये अपने में एक पूर्ण वाक्य की तरह अर्थ देती हैं। किसी कथन की पुष्टि के लिए तथा उपदेश देने के लिए इनका प्रयोग करते हैं, जैसे-अन्धे के आगे रोये दोनों दीदा खोये, आप भला तो जग भला। इसी प्रकार कोई तीन कहावतें (लोकोक्तियाँ) लिखिए।

2. नीचे लिखे वाक्य में उचित विराम चिह्न लगाइए -

अरे भाई उनके लिए जिये-मरे का कोई मतलब न हो पर दूसरे के धर्म-ईमान का तो ख्याल करना चाहिए

3. 'पास-पड़ोस' शब्द के बीच 'और' शब्द छिपा है। जब दो शब्दों के बीच में 'और', 'अथवा' 'या', जैसे योजक शब्द छिपे होते हैं तब उसे द्वन्द्व समास कहा जाता है। नीचे पाठ में आये द्वन्द्व समास के कुछ उदाहरण दिये गये हैं। इनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

जिये-मरे, धर्म-ईमान, पोता-पोती, छन्नी-ककना, दान-दक्षिणा।

4. 'कल जिसका बेटा चल बसा आज वह बाजार में सौदा बेचने चली है'- इस वाक्य में 'कल'और 'आज' शब्द क्रियाविशेषण हैं, ये शब्द क्रमशः 'चल बसा' तथा 'बेचने चली' क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं। ये समयवाचक क्रियाविशेषण हैं। उसी प्रकार अब, कब, तब, अभी, तुरन्त भी समयवाचक क्रियाविशेषण हैं। इनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए

5. 'नियत' और 'नीयत' में 'नियत' का अर्थ है- निश्चित, तय किया हुआ और 'नीयत' का अर्थ है- इच्छा, इरादा। यहाँ 'नियत' हिन्दी शब्द है 'नीयत' अरबी-फारसी का। हिन्दी में भी इस प्रकार के अनेक शब्द प्रचलित हैं, इन्हें समानाभासी भिन्नार्थक शब्द कहते हैं, जैसे-

अचल =पहाड़ - अचला=धरती

कुल =कुटुम्ब - कूल =तट, किनारा

अनल =आग - अनिल=हवा

अन्त =समाप्ति- अन्त्य =अन्तिम

कर्म =काम - क्रम =व्यवस्था

ज्वर =बुखार - ज्वार =एक अन्न विशेष

इस प्रकार के कुछ और शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

पाठ 14

चुप-चाप

(प्रस्तुत कविता में प्रकृति के विराट स्वरूप के आकर्षण को अपने मन में भरने की आकांक्षा व्यक्त की गयी है। कवि झरना, शरद की चाँदनी तथा जीवन के अनन्त रहस्यों को स्वयं में आत्मसात (अनुभूत) करता हुआ अपने मन में पुलक (आनन्द) का अनुभव करता है।)

चुप-चाप चुप-चाप
झरने का स्वर
हम में भर जाय,
चुप-चाप चुप-चाप
शरद की चाँदनी
झील की लहरों पर तिर आय,
चुप-चाप चुप-चाप
जीवन का रहस्य,
जो कहा न जाय, हमारी
ठहरी आँखों में गहराय,

चुप-चाप चुप-चाप
हम पुलकित विराट् में डूबें
पर विराट् हम में मिल जाय-

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म मार्च सन् 1911 ई0 में कुशीनगर जनपद में हुआ था। अज्ञेय जी आधुनिक हिन्दी कविता के श्रेष्ठ कवि, श्रेष्ठ कथाकार, निबन्धकार और गद्य की विभिन्न विधाओं में रचना करने वाले साहित्यकार थे। 'बावरा अहेरी', 'आँगन के पार -द्वार', 'कितनी नावों में कितनी बार', 'सागर मुद्रा', 'शेखर एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' आदि आपके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इनका निधन 4 अप्रैल सन् 1987 ई0 को हुआ।

चुप-चाप चुप-चाऽऽप ं ं ं ं

-सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'ं

शरद = एक ऋतु का नाम जो आश्विन और कार्तिक के महीने में होती है। तिर = तैरना (बिछना)। जीवन का रहस्य = जीवन का मर्म। ठहरी आँखों में गहराय = जीवन के अकथनीय सत्य को आँखों से अपने अनुभव में उतार लेने की आकांक्षा है। पुलकित विराट = खिलता हुआ असीम सौन्दर्य।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. कवि की झरने के सम्बन्ध में क्या आकांक्षा है ?
2. कवि शरद ऋतु की चाँदनी को कहाँ तिरते देखना चाहता है ?
3. चुप-चाप, चुप-चाप जीवन का रहस्य

जो कहा न जाय, हमारी

ठहरी आँखों में गहराय।

उपर्युक्त पंक्तियों के उचित भावार्थ पर सही (√) का निशान लगाइए-

(क) विराट प्रकृति के वे मनोहारी दृश्य जो जीवन के रहस्य की तरह हैं और जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता, वह सब हमारी स्तब्ध आँखों में चुपचाप समा जाय।

(ख) जीवन का गहरा रहस्य कहा न जाय।

(ग) जीवन के विषय में कुछ कहा न जाय, बल्कि उसे रहस्य ही बना रहने दिया जाय।

4. प्रकृति का जो खिल-खिलाता हुआ सौन्दर्य है, हम उसमें तन्मय (डूबें) हों, परन्तु हम इस तरह लीन हो जायें कि वह विराट हममंे मिल जाय।

उपर्युक्त कथन से सम्बन्धित कविता की पंक्तियों को छाँटकर लिखिए।

विचार और कल्पना

सिर्फ एक अव्यक्त शब्द-सा ‘‘चुप चुप चुप’’
है गूँज रहा सब कहीं -
व्योममण्डल में - जगती - तल में -
सोती शान्त सरोवर पर उस अमल कमलिनी दल में -
सौन्दर्य गर्विता - सरिता के अति विस्तृत वक्षस्थल में -
धीर-वीर गम्भीर शिखर पर हिमगिरि-अटल अचल मंे-

उत्ताल-तंरगाघात-प्रलय-घन-गर्जन-जलधि-प्रबल में-

क्षिति में, जल में-नभ में-अनिल अनल में

सिर्फ एक अव्यक्त शब्द-सा ‘‘चुप चुप चुप’’

‘निराला’ की उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में आया ‘चुप चुप चुप’ तथा पाठ में आये ‘चुप-चाप’ में क्या अन्तर है ? स्पष्ट कीजिए।

कुछ करने को

1. कवि को झरने, झील के लहरों पर तैरती शरद ऋतु की चाँदनी अपनी ओर आकर्षित करती है। साथ ही वह प्रकृति के खिले सौन्दर्य में डूब जाना चाहता है। अपने आस-पास के प्राकृतिक परिवेश की जो सुन्दरता आपको अपनी ओर खींचती हैं, उसका संक्षेप मंे वर्णन कीजिए।

2. 'चुप-चाप, चुप-चाप' पंक्ति के आधार पर कुछ पंक्तियाँ रच कर छोटी-सी कविता बनाइए।

भाषा की बात

1. ठहरी आँखों और पुलकित विराट् में 'ठहरी' और 'पुलकित' विशेषण है तथा 'आँखों' और 'विराट्' विशेष्य हैं। इसी प्रकार के चार और विशेषण, विशेष्य शब्द लिखिए।

2. 'जो कहा न जाय' वाक्यांश के लिए एक शब्द है-'अकथनीय'। इसी प्रकार निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए -

(क) जो बहुत कठिनाई से मिलता है।

(ख) जिस पर विश्वास न किया जा सके।

(ग) जो खाने योग्य न हो।

(घ) जानने की इच्छा रखने वाला।

(ङ) जो देखने में प्रिय लगता है।

इसे भी जानें

1. कविता में चित्रात्मक वर्णन को 'बिम्ब' कहा जाता है। नयी कविता में बिम्बविधान पर अधिक जोर दिया जाता है। प्रस्तुत कविता में शरद की चाँदनी का झील की लहरों पर तैरना एक दृश्यबिम्ब है। पुलकित विराट् में डूबना भावबिम्ब है।

2. 'कितनी नावों में कितनी बार' कृति पर सन् 1978 ई0 में सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' को ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया था।

पाठ 15

एक स्त्री का पत्र

(प्रस्तुत पाठ में बिन्दू के माध्यम से नारी-जीवन के सामाजिक बन्धन, उसके शोषण और दर्द को मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है।)

पूज्यवर,

आज पन्द्रह साल हुए हमारे ब्याह को। हम तब से साथ ही रहे। अब तक चिट्ठी लिखने का मौका नहीं मिला। तुम्हारे घर की मझली बहू जगन्नाथपुरी आयी थी, तीर्थ करने।

आयी तो जाना कि दुनिया और भगवान के साथ मेरा एक और नाता भी है। इसलिए आज चिट्ठी लिखने का साहस कर रही हूँ। इसे मझली बहू की चिट्ठी न समझना।

वह दिन याद आता है, जब तुम लोग मुझे देखने आये थे। मुझे बारहवाँ साल लगा था। सुदूर गाँव में हमारा घर था। पहुँचने में कितनी मुश्किल हुई तुम सबको। मेरे घर के लोग आव-भगत करते-करते हैरान हो गये।

विदाई की करुण धुन गूँज उठी। मैं मझली बहू बनकर तुम्हारे घर आयी। सभी औरतों ने नयी दुल्हन को जाँच परखकर देखा। सबको मानना पड़ा- बहू सुन्दर है।

मैं सुन्दर हूँ, यह तो तुम लोग जल्दी भूल गये। पर मुझमें बुद्धि है, यह बात तुम लोग चाहकर भी न भूल सके। माँ कहती थी, औरत के लिए तेज दिमाग भी एक बला है।

लेकिन मैं क्या करूँ। तुम लोगों ने उठते बैठते कहा, 'यह बहू तेज है।'

लोग बुरा भला कहते हैं सो कहते रहें। मैंने सब माफ कर दिया।

मैं छिप-छिप कर कविता लिखती थी। कविताएँ थीं तो मामूली, लेकिन उनमें मेरी अपनी आवाज थी। वे कविताएँ तुम्हारे रीति-रिवाजों के बन्धनों से आजाद थीं।

मेरी नन्हीं बेटी को छीनने के लिए मौत मेरे बहुत पास आयी। उसे ले गयी, पर मुझे छोड़ गयी। माँ बनने का दर्द मैंने उठाया, पर माँ कहलाने का सुख न पा सकी।

इस हादसे को भी पार किया। फिर से जुट गयी रोज-मर्रा के काम काज में। गाय-भैंस, सानी-पानी में लग गयी। तुम्हारे घर का माहौल रूखा और घुटन भरा था। यह गाय-भैंस ही मुझे अपने से लगते थे। इसी तरह शायद जीवन बीत जाता।

आज का यह पत्र लिखा ही नहीं जाता। लेकिन अचानक मेरी गृहस्थी में जिन्दगी का एक बीज आ गिरा। यह बीज जड़ पकड़ने लगा और गृहस्थी की पकड़ ढीली होने लगी। जेठानी जी की बहन, बिन्दू अपनी माँ के गुजरने पर, हमारे घर आ गयी।

मैंने देखा तुम सभी परेशान थे। जेठानी जी के पीहर की लड़की, न रूपवती न धनवती। जेठानी दीदी इस समस्या को लेकर उलझ गयी। एक तरफ बहन का प्यार तो एक तरफ ससुराल की नाराजगी।

अनाथ लड़की के साथ ऐसा रूखा बर्ताव होते देख मुझसे रहा न गया। मैंने बिन्दू को अपने पास जगह दी। जेठानी दीदी ने चैन की साँस ली। गलती का बोझ मुझ पर आ पड़ा।

पहले मेरा स्नेह पाकर बिन्दू सकुचाती थी। पर धीरे-धीरे वह मुझे बहुत प्यार करने लगी। बिन्दू ने प्रेम का विशाल सागर मुझ पर उड़ेल दिया। मुझे कोई इतना प्यार और सम्मान दे सकेगा, यह मैंने सोचा भी न था।

बिन्दू को जो प्यार दुलार मुझसे मिला वह तुम लोगों को फूटी आँखों न सुहाया। याद आता है वह दिन, जब बाजूबन्द गायब हुआ। बिन्दू पर चोरी का इल्जाम लगाने में तुम लोगों को पल भर की झिझक न हुई।

बिन्दू के बदन पर जरा-सी लाल घमोरी क्या निकली, तुम लोग झट बोले- चेचक। किसी इल्जाम का सुबूत न था। सुबूत के लिए उसका 'बिन्दू' होना ही काफी था।

बिन्दू बड़ी होने लगी। साथ-साथ तुम लोगों की नाराजगी भी बढ़ने लगी। जब लड़की को घर से निकालने की हर कोशिश नाकाम हुई तब तुमने उसका ब्याह तय कर दिया।
लड़के वाले लड़की देखने तक न आये। तुम लोगों ने कहा, ब्याह लड़के के घर से होगा। यही उनके घर का रिवाज है।
सुनकर मेरा दिल काँप उठा। ब्याह के दिन तक बिन्दू अपनी दीदी के पाँव पकड़कर बोली, 'दीदी मुझे इस तरह मत निकालो। मैं तुम्हारी गौशाला में पड़ी रहूँगी। जो कहोगी सो करूँगी..।'
बेसहारा लड़की सिसकती हुई मुझसे बोली, 'दीदी क्या मैं सचमुच अकेली हो गयी हूँ ?'
मैंने कहा, 'ना बिन्दी ना। तुम्हारी जो भी दशा हो, मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।' जेठानी दीदी की आँखों में आँसू थे। उन्हंे रोककर वह बोली, 'बिन्दिया, याद रख, पति ही पत्नी का परमेश्वर है।'
तीन दिन हुए बिन्दू के ब्याह को। सुबह गाय-भैंस को देखने गौशाला में गयी तो देखा एक कोने में पड़ी थी बिन्दू। मुझे देखकर फफककर रोने लगी।

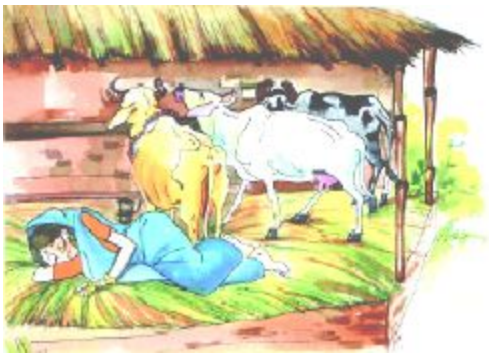

बिन्दू ने कहा कि उसका पति पागल है। बेरहम सास और पागल पति से बचकर वह बड़ी मुश्किल से भागी।
गुस्से और घृणा से मेरे तन-बदन में आग लग गयी। मैं बोल उठी, 'इस तरह का धोखा भी भला कोई ब्याह है ? तू मेरे पास ही रहेगी। देखूँ तुझे कौन ले जाता है।'
तुम सबको मुझ पर बहुत गुस्सा आया। सब कहने लगे, 'बिन्दू झूठ बोल रही है।' कुछ ही देर में बिन्दू के ससुराल वाले उसे लेने आ पहुँचे।
मुझे अपमान से बचाने के लिए बिन्दू खुद ही उन लोगों के सामने आ खड़ी हुई। वे लोग बिन्दू को ले गये। मेरा दिल दर्द से चीख उठा।

मैं बिन्दू को रोक न सकी। मैं समझ गयी कि चाहे बिन्दू मर भी जाए वह अब कभी हमारी शरण में नहीं आयेगी।

तभी मैंने सुना कि बड़ी बुआजी जगन्नाथपुरी तीर्थ करने जायंेगी। मैंने कहा, 'मैं भी साथ जाऊँगी।' तुम सब यह सुनकर खुश हुए।

मैंने अपने भाई शरत को बुला भेजा। उससे बोली, 'भाई अगले बुधवार को मैं पुरी जाऊँगी। जैसे भी हो बिन्दू को भी उसी गाड़ी में बिठाना होगा।'

उसी दिन शाम को शरत लौट आया। उसका पीला चेहरा देखकर मेरे सीने पर साँप लोट गया। मैंने सवाल किया, 'उसे राजी नहीं कर पाये ?'

'उसकी जरूरत नहीं। बिन्दू ने कल अपने आपको आग लगाकर आत्महत्या कर ली।' शरत ने उत्तर दिया। मैं स्तब्ध रह गयी। मैं तीर्थ करने जगन्नाथपुरी आयी हूँ। बिन्दू को यहाँ तक आने की जरूरत नहीं पड़ी। लेकिन मेरे लिए यह जरूरी था।

जिसे लोग दु:ख-कष्ट कहते हैं, वह मेरे जीवन में नहीं था। तुम्हारे घर में खाने-पीने की कमी कभी नहीं हुई। तुम्हारे बड़े भैया का चरित्र जैसा भी हो, तुम्हारे चरित्र में कोई खोट न था। मुझे कोई शिकायत नहीं है। लेकिन अब मैं लौटकर तुम्हारे घर नहीं जाऊँगी। मैंने बिन्दू को देखा। घर गृहस्थी में लिपटी औरत का परिचय मैं पा चुकी। अब मुझे उसकी जरूरत नहीं। मैं तुम्हारी चौखट लाँघ चुकी। इस वक्त मैं अनन्त नीले समुद्र के सामने खड़ी हूँ।

तुम लोगों ने अपने रीति-रिवाजों के परदे में मुझे बन्द कर दिया था। न जाने कहाँ से बिन्दू ने इस परदे के पीछे झाँक कर मुझे देख लिया और उसी बिन्दू की मौत ने हर परदा गिराकर मुझे आजाद किया। मझली बहू खत्म हुई।

क्या तुम सोच रहे हो कि मैं अब बिन्दू की तरह मरने वाली हूँ। डरो मत। मैं तुम्हारे साथ ऐसा पुराना मजाक नहीं करूँगी।

मीराबाई भी मेरी तरह औरत थी। उसके बन्धन भी कम नहीं थे। उनसे मुक्ति पाने के लिए उसे आत्महत्या तो नहीं करनी पड़ी। मुझे अपने आप पर भरोसा है। मैं जी सकती हूँ। मैं जीऊँगी।

- तुम लोगों के आश्रय से मुक्त

मृणाल

रवीन्द्रनाथ ठाकुर भारत के महान कथाकारों में से एक हैं। कविता, चित्रकला और संगीत की दुनिया में भी उनका अपना विशेष स्थान है। लिखने का अति सरल ढंग अपनाते हुए

उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों जैसे किसानों और जमींदारों के विषय में लिखा। जातिवाद, भ्रष्टाचार और निर्धनता जैसी सामाजिक बुराइयाँ उनकी रचनाओं का अभिन्न अंग बनी रहीं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म सन् 1861 ई0 में पश्चिमी बंगाल के एक धनी जमींदार परिवार में हुआ था। अपने लम्बे लेखन काल में उन्होंने 90 से अधिक लघुकथाओं की रचना की। स्त्री का पत्र उन्हीं कथाओं में से एक है। सन् 1941 ई0 में उनकी मृत्यु हुई।

आवभगत = आदर-सत्कार। पीहर = मायका। बाजूबन्द = एक आभूषण जो बाँह में पहना जाता है। नाकाम = असफल। जगन्नाथपुरी = उड़ीसा राज्य में है जो हिन्दुओं के मान्य चारों धाम में से एक है।

प्रश्न-अभ्यास

पत्र से

1. बिन्दू को लेकर मझली बहू के घरवाले क्यों चिन्तित हो उठे ?
2. बिन्दू का विवाह तय करते समय क्या धोखा किया गया ?
3. बिन्दू को दोबारा बलात ससुराल भेजने का क्या परिणाम निकला ?
4. मझली बहू ने पत्र के अन्त में क्या निश्चय व्यक्त किया ?
5. कथन के भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) कविताएँ थीं तो मामूली लेकिन उनमें मेरी आवाज थी।

(ख) माँ बनने का दर्द मैंने उठाया, पर माँ कहलाने का सुख न पा सकी ।

(ग) मैं तुम्हारी चौखट लाँघ चुकी हूँ।

(घ) मुझे अपने आप पर भरोसा है। मैं जी सकती हूँ। मैं जीऊँगी।

विचार और कल्पना

1. 'नारी-सम्मान एवं उसकी सुरक्षा' विषय पर कक्षा में चर्चा करके एक 'सुझाव-पत्र' तैयार कीजिए तथा अपनी कक्षा में टाँग दीजिए।

2. बालिकाओं की शिक्षा और उनके अधिकार की रक्षा के लिए आप अपने स्तर पर अपने परिवार में क्या-क्या करना चाहेंगे? एक सूची तैयार कीजिए।

3. प्रस्तुत पाठ पत्र-शैली में है। आप भी पत्र लिखिए -

(क) अपनी माता के नाम, जिसमें घरेलू समस्याओं का जिक्र हो।

(ख) अपने शिक्षक/शिक्षिका को, जिसमें पढ़ाई के तौर तरीकों की चर्चा हो।

4. समाचार-पत्रों में नारी-शोषण की घटनाओं को पढ़कर दहेज-प्रथा की बुराइयों पर प्रकाश डालिए।

कुछ करने कंो

1. महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिवर्ष 8 मार्च को अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर आपके आसपास कोई आयोजन हो तो उसमें शामिल होकर देखिए कि वहाँ क्या-क्या कार्यक्रम होते हैं।

2. अपने क्षेत्र की किसी सफल नारी का साक्षात्कार लेकर जानिए कि किन गुणों के कारण उसे जीवन में सफलता मिली।

3. महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों में दहेज, हत्या, मारपीट, छेड़छाड़, बलात्कार, अपहरण आदि के लिए भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं में कैद, जुर्माना या दोनों के साथ-साथ, कठोर कारावास से लेकर आजीवन कारावास तक की सजाएँ निर्धारित की गयी हैं। इस विषय में अपने शिक्षक/शिक्षिका से और जानकारी प्राप्त करें।

भाषा की बात

1. दिये गये मुहावरों के अर्थ बताते हुए वाक्य प्रयोग कीजिए-

(क) चैन की साँस लेना।

(ख) फूटी आँखों न सुहाना।

(ग) सीने पर साँप लोटना।

2. 'दूर' शब्द का अर्थ होता है- 'जो निकट न हो।' परन्तु इसी 'दूर' शब्द के पहले 'सु' उपसर्ग जुड़कर नया शब्द बनता है- 'सुदूर' , जिसका अर्थ होता है - जो बहुत दूर हो। इसी

प्रकार 'सु' उपसर्ग जोड़कर चार अन्य शब्द बनाइए ।

3. 'आज पन्द्रह साल हुए हमारे ब्याह को।'

'मुझे बारहवाँ साल लगा था।'

ऊपर के वाक्यों में आये 'पन्द्रह' और 'बारहवाँ' शब्द को देखिए। दोनों शब्द 'साल' की विशेषता बता रहे हैं। दोनों शब्द संख्यावाची विशेषण हैं- एक गणनाबोधक है, दूसरा क्रमबोधक। दो अन्य संख्यावाची विशेषण शब्द लिखकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

इसे भी जानें

नोबेल पुरस्कार-नोबेल फाउन्डेशन, स्वीडन द्वारा शांति, साहित्य, अर्थशास्त्र, चिकित्सा और शरीर विज्ञान, भौतिक विज्ञान तथा रसायन विज्ञान के क्षेत्र में दिया जाता है। रवीन्द्र नाथ टैगोर को साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया था।

- रवीन्द्रनाथ टैगोर

पाठ 16

सोना

(प्रस्तुत पाठ 'मेरा परिवार' से लिया गया है। इसमें लेखिका ने एक हिरनी के बच्चे का बड़ा मार्मिक शब्द-चित्र खींचा है।)

सोना की आज अचानक स्मृति हो आने का कारण है। मेरे परिचित स्वर्गीय डाक्टर धीरेन्द्र नाथ वसु की पौत्री सुस्मिता ने लिखा है 'गत वर्ष अपने पड़ोसी से मुझे एक हिरन मिला था। बीते कुछ महीनों में हम उससे बहुत स्नेह करने लगे हैं, परन्तु अब मैं अनुभव करती हूँ कि सघन जंगल में सम्बद्ध रहने के कारण तथा अब बड़े हो जाने के कारण उसे घूमने के लिए अधिक विस्तृत स्थान चाहिए। क्या कृपा करके आप उसे स्वीकार करेंगी ? सचमुच मैं आपकी बहुत आभारी रहूँगी, क्योंकि आप जानती हैं मैं उसे ऐसे व्यक्ति को नहीं देना चाहती जो उससे बुरा व्यवहार करे। मेरा विश्वास है, आपके यहाँ उसकी भलीभाँति देखभाल हो सकेगी।'

कई वर्ष पूर्व मैंने निश्चय किया था कि अब हिरण नहीं पालूँगी, परन्तु आज उस नियम को भंग किये बिना इस कोमल प्राण जीव की रक्षा सम्भव नहीं है।

सोना इसी प्रकार अचानक आयी थी, परन्तु वह अब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग की रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। छोटा सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें। देखती तो लगता था कि अभी छलक पड़ेंगी। लम्बे कान, पतली सुडौल टाँगें, जिन्हें देखते ही उनमें प्रसुप्त गति की बिजली की लहर देखने वालों की आँखों में कौंध जाती थी। सब उसके सरल, शिशु रूप से इतने प्रभावित हुए कि किसी चम्पकवर्णा रूपसी के उपयुक्त सोना, सुवर्णा, स्वर्णलेखा आदि नाम उसका परिचय बन गये।

परन्तु उस बेचारे हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी व्यथा-कथा है, जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है। बेचारी सोना भी मनुष्य की इसी निष्ठुर मनोरंजन प्रियता के कारण अपने

अरण्य परिवेश और स्वजाति से दूर मानव-समाज में आ पड़ी थी।

प्रशान्त वनस्थली में जब अलस भाव से रोमन्थन करता हुआ बैठा मृग-समूह शिकारियों के आहट से चौंककर भागा, तब सोना की माँ सद्यः प्रसूता होने के कारण भागने में असमर्थ रही। सद्यः जात मृग शिशु तो भाग नहीं सकता था, अतः मृगी माँ ने अपनी सन्तान को अपने शरीर की ओट में सुरक्षित रखने के प्रयास में प्राण दिये।

पता नहीं दया के कारण या कौतुकप्रियता के कारण शिकारी मृत हिरनी के साथ उसके रक्त से सने और ठंडे स्तनों से चिपके हुए शावक को जीवित उठा लाये। उनमें से किसी के परिवार की सदय गृहिणी और बच्चों ने उसे पानी मिला दूध पिला-पिलाकर दो-चार दिन जीवित रखा।

सुस्मिता वसु के समान ही किसी बालिका को मेरा स्मरण हो आया और वह उस अनाथ शावक को मुमूर्षु अवस्था में मेरे पास ले आयी। शावक अवांछित तो था ही उसके बचने की आशा भी धूमिल थी, परन्तु उसे मैंने स्वीकार कर लिया। स्निग्ध सुनहले रंग के कारण सब उसे सोना कहने लगे। दूध पिलाने की शीशी, ग्लूकोज, बकरी का दूध आदि सब कुछ एकत्र करके, उसे पालने का कठिन अनुष्ठान आरम्भ हुआ।

उसका मुख इतना छोटा था कि उसमें शीशी का निपल समाता ही नहीं था, उस पर उसे पीना भी नहीं आता था। फिर धीरे-धीरे उसे पीना ही नहीं दूध की बोतल पहचानना भी आ

गया। आँगन में कूदते-फाँदते हुए भी भक्तिन को बोतल साफ करते देखकर वह दौड़ आती और अपनी तरल चकित आँखों से उसे ऐसे देखने लगती मानों वह कोई सजीव मित्र हो।

उसने रात में मेरे पलंग के पाये से सटकर बैठना सीख लिया था, पर वहाँ गन्दा न करने की आदत कुछ दिनों के अभ्यास से पड़ सकी। अँधेरा होते ही वह मेरे पलंग के पास आ बैठती और फिर सबेरा होने पर ही वह बाहर निकलती।

उसका दिनभर का कार्यकलाप भी एक प्रकार से निश्चित था। विद्यालय और छात्रावास की विद्यार्थिनियों के निकट पहले वह कौतुक का कारण रही, परन्तु कुछ दिन बीत जाने पर वह उनकी ऐसी प्रिय साथिन बन गयी, जिसके बिना उनका किसी काम में मन ही नहीं लगता था।

उसे छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे, क्योंकि उनके साथ खेलने का अधिक अवकाश रहता था। वे पंक्तिबद्ध खड़े होकर सोना-सोना पुकारते और वह उनके ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती। वह सरकस जैसा खेल कभी घंटों चलता, क्योंकि खेल के घंटों में बच्चों की एक कक्षा के उपरान्त दूसरी आती रहती।

मेरे प्रति स्नेह-प्रदर्शन के कई प्रकार थे। बाहर खड़े होने पर वह सामने या पीछे से छलाँग लगाती और मेरे सिर के ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती। प्रायः देखने वालों को भय होता था कि मेरे सिर पर चोट न लग जाय, परन्तु वह पैरों को इस प्रकार सिकोड़े रहती और मेरे सिर को इतनी ऊँचाई से लाँघती थी कि चोट लगने की कोई सम्भावना ही नहीं रहती थी।

भीतर आने पर वह मेरे पैरांे से अपना शरीर रगड़ने लगती। मेरे बैठे रहने पर वह साड़ी का छोर मुँह में भर लेती और कभी पीछे चुपचाप खड़े होकर चोटी ही चबा डालती। डँाटने पर वह अपनी बड़ी गोल और चकित आँखों से ऐसे अनिर्वचनीय जिज्ञासा भरकर एकटक देखने लगती कि हँसी आ जाती।

अनेक विद्यार्थिनियों की भारी भरकम गुरुजी से सोना को क्या लेना देना था। वह तो उस दृष्टि को पहचानती थी, जिसमें उसके लिए स्नेह छलकता था और उन हाथों को जानती थी जिन्होंने यत्नपूर्वक दूध की बोतल उसके मुख से लगायी थी।

यदि सोना को अपने स्नेह की अभिव्यक्ति के लिए मेरे सिर के ऊपर से कूदना आवश्यक लगेगा तो वह कूदेगी ही। मेरी किसी अन्य परिस्थिति से प्रभावित होना, उसके लिए सम्भव नहीं था।

कुत्ता स्वामी और सेवक का अन्तर जानता है और स्नेह या क्रोध की प्रत्येक मुद्रा से परिचित रहता है। स्नेह से बुलाने पर वह गद्गद होकर निकट आ जाता है और क्रोध करते ही सभीत और दयनीय बनकर दुबक जाता है, पर हिरन यह अन्तर नहीं जानता। अतः उसका पालने वाले से डरना कठिन है। यदि उस पर क्रोध किया जाए तो वह अपनी चकित आँखांे में और अधिक विस्मय भरकर पालने वाले की दृष्टि से दृष्टि मिलाकर खड़ा रहेगा, मानो पूछता हो क्या यह उचित है। वह केवल स्नेह पहचानता है, जिसकी स्वीकृति बताने के लिए उसकी विशेष चेष्टाएँ हैं।

मेरी बिल्ली गोधूली, कुत्ते हेमन्त-वसन्त, कुतिया फ्लोरा सबसे पहले इस नये अतिथि को देखकर रुष्ट हुए, परन्तु सोना ने थोड़े ही दिनों में सबसे सख्य स्थापित कर लिया। फिर तो वह घास पर लेट जाती और कुत्ते और बिल्ली उस पर उछलते कूदते रहते। कोई उसके कान खींचता, कोई पैर, और जब वे इस खेल में तन्मय हो जाते तब वह अचानक चौकड़ी भरकर भागती और वे गिरते-पड़ते उसके पीछे दौड़ लगाते।

वर्ष भर का समय बीत जाने पर सोना हरिण-शावक से हरिणी में परिवर्तित होने लगी। उसके शरीर के पीताभ रोयें ताम्रवर्णी झलक देने लगे। टाँगें अधिक सुडौल और खुरों के कालेपन में चमक आ गयी। ग्रीवा अधिक बंकिम और लचीली हो गयी। पीठ में भराव वाला

उतार-चढ़ाव और स्निग्धता दिखायी देने लगी। परन्तु सबसे अधिक विशेषता तो उसकी आँखों और दृष्टि मंे मिलती थी। आँखों के चारों ओर खिंची कज्जलकोर में नीले गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी मानो नीलम के बल्बों में उजली विद्युत का स्फुरण हो।

इसी बीच फ्लोरा ने भक्तिन की कुछ अँधेरी कोठरी के एकान्त कोने में चार बच्चों को जन्म दिया और वह खेल के संगियों को भूल कर अपनी नवीन सृष्टि के संरक्षण में व्यस्त हो गयी। एक-दो दिन सोना अपनी सखी को खोजती रही, फिर उसको इतने लघु जीवों से घिरा देख उसकी स्वाभाविक चकित दृष्टि गम्भीर विस्मय से भर गयी।

एक दिन देखा फ्लोरा कहीं बाहर घूमने गयी है और सोना भक्तिन की कोठरी में निश्चिन्त लेटी है। पिल्ले आँखें बन्द रहने के कारण चीं-चीं करते हुए सोना के उदर में दूध खोज रहे थे। तब से सोना के नित्य के कार्यक्रम में पिल्लों के बीच में लेट जाना भी सम्मिलित हो गया। आश्चर्य की बात यह थी कि फ्लोरा हेमन्त, बसन्त या गोधूली को तो अपने बच्चों के पास फटकने भी नहीं देती थी परन्तु सोना के संरक्षण में उन्हें छोड़कर आश्वस्त भाव से इधर-उधर घूमने चली जाती थी।

सम्भवतः वह सोना की स्नेही और अहिंसक प्रकृति से परिचित हो गयी थी। पिल्लांे के बड़े होने पर और उनकी आँखें खुल जाने पर सोना ने उन्हें भी अपने पीछे घूमनेवाली सेना में सम्मिलित कर लिया और मानो इस वृद्धि के उपलक्ष्य में आनन्दोत्सव मनाने के लिए अधिक देर तक मेरे सिर से आर-पार चौकड़ी भरती रही।

उसी वर्ष गर्मियों में मेरा बद्रीनाथ की यात्रा का कार्यक्रम बना। प्रायः मैं अपने पालतू जीवों के कारण प्रवास में कम रहती हूँ। उनकी देख-रेख के लिए सेवक रहने पर भी मैं उन्हें छोड़कर आश्वस्त नहीं हो पाती। भक्तिन, अनुरूप आदि तो साथ जाने वाले थे ही। पालतू जीवों में से मैंने फ्लोरा को साथ ले जाने का निश्चय किया, क्योंकि वह मेरे बिना नहीं रह सकती थी।

सोना की सहज चेतना में न मेरी यात्रा जैसी स्थिति का बोध था न प्रत्यावर्तन का, उसी से उसकी निराश जिज्ञासा और विस्मय का अनुमान मेरे लिए सहज था।

पैदल आने-जाने के निश्चय के कारण बद्रीनाथ की यात्रा में ग्रीष्मावकाश समाप्त हो गया। जुलाई को लौटकर जब मैं बंगले के द्वार पर आ खड़ी हुई तब बिछुड़े हुए पालतू जीवों में कोलाहल होने लगा।

गोधूली मेरे कन्धे पर आ बैठी। हेमन्त, बसन्त मेरे चारांे ओर परिक्रमा करके हर्ष की ध्वनियों से मेरा स्वागत करने लगे। पर मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी। क्यों वह अपना उल्लास व्यक्त करने के लिए मेरे सिर के ऊपर से छलाँग नहीं लगाती। सोना कहाँ है, पूछने पर माली आँखें पोछने लगा और चपरासी, चौकीदार एक दूसरे का मुख देखने लगे। वे लोग आने के साथ ही मुझे कोई दुःखद समाचार नहीं देना चाहते थे, परन्तु माली की भावुकता ने बिना बोले ही उसे दे डाला।

ज्ञात हुआ कि छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के तथा मेरे अभाव के कारण सोना इतनी अस्थिर हो गयी थी कि इधर-उधर कुछ खोजती सी वह प्रायः कम्पाउंड से बाहर, निकल जाती थी। इतनी बड़ी हिरनी को पालने वाले तो कम थे, परन्तु उसका खाद्य और स्वाद प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था। इसी आशंका से माली ने उसे मैदान में एक लम्बी रस्सी से बाँधना आरम्भ कर दिया था।

एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बन्धन की सीमा भूल कर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अन्तिम साँस और अन्तिम उछाल थी।

सब सुनहले रेशम की गठरी से शरीर को गंगा में प्रवाहित कर आये और इस प्रकार किसी निर्जन वन में जन्मी और जन-संकुलता में पली सोना की करुण कथा का अन्त हुआ।

सब सुनकर मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी, पर संयोग से फिर हिरन पालना पड़ रहा है।

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई0 में फर्रुखाबाद में हुआ था। इन्होंने गद्य और पद्य -दोनों में सुन्दर रचनाएँ की हैं। 'स्मृति की रेखाएँ', 'अतीत के चलचित्र', 'पथ के साथी', 'मेरा परिवार', इनकी प्रसिद्ध गद्य रचनाएँ हैं।सन् 1987 ई0 में प्रयाग में इनका निधन हो गया।

- महादेवी वर्मा

प्रसुप्त = सोयी हुई, छिपी हुई। चम्पकवर्णा = चम्पा के वर्ण वाली, पीले रंग वाली। सुवर्णा = सुन्दर वर्ण (रंग) वाली। हरिण-शावक = हिरन का बच्चा। अरण्य परिवेश = जंगल के वातावरण, वन-प्रदेश। रोमन्थन = जुगाली, पागुर। सद्यःप्रसूता = जिसने तुरन्त ही बच्चे को जन्म दिया हो। सद्यःजात = जो तुरन्त पैदा हुआ हो। सदय = दयालु, दया भाव से युक्त। मुमूर्षु = मरणासन्न, जो मर रहा हो। अनिर्वचनीय = अकथनीय, जिसे वाणी द्वारा न कहा जा सके। परिक्रमा = फेरा लगाना। कम्पाउंड = आँगन, प्रांगण, परिसर।

प्रश्न-अभ्यास

रेखाचित्र से

1. सोना जंगल के परिवेश से गाँव में कैसे आ गयी ?
2. सोना को छोटे बच्चे क्यों अधिक प्रिय थे ?
3. लेखिका के अन्य पालतू पशु कौन-कौन थे ? वे सोना के प्रति क्या भाव रखते थे ?
4. मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी, पर संयोग से फिर हिरन पालना पड़ रहा है। वे कौन-सी परिस्थितियाँ थी जिनके कारण महादेवी जी को अपना निश्चय बदलना पड़ा?
5. फ्लोरा, सोना के संरक्षण में अपने बच्चों को सुरक्षित क्यों मानती थी ?

विचार और कल्पना

1. यह पाठ एक रेखाचित्र है जिसे शब्दचित्र भी कहते हैं। सोना हिरनी के स्थान पर किसी बिल्ली के बच्चे को आधार मानकर एक रेखाचित्र लिखिए।
2. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उन अन्तरों को बताइए जो मनुष्य को अन्य जीवों से अलग करते हैं।

कुछ करने कंो

1. अपने आस-पास के पालतू पशुओं के स्वभाव की जानकारी प्राप्त कीजिए। यह भी बताइए कि किन-किन जंगली जानवरों को प्रायः लोग पालते हैं।
2. यदि आपके घर मंे कोई पालतू जानवर हो तो आप उसे अपना स्नेह दीजिए और अपने प्रति उसके व्यवहार का अनुभव कीजिए। इस अनुभव को अपने साथियों में बाँटिए।

भाषा की बात

1. ग्रीष्मावकाश शब्द ग्रीष्म $ अवकाश की सन्धि से बना है। इसमें अ$अ = आ हो गया है। नीचे लिखे गये शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए -

शैशवावस्था, छात्रावास, मध्यावकाश, शीतावकाश।

2. 'भीतर-बाहर' और 'स्नेह-प्रदर्शन' समस्त पद हैं। इनके विग्रह और समास के नाम हैं- भीतर और बाहर = द्वन्द्व समास तथा स्नेह का प्रदर्शन = तत्पुरुष समास। निम्नलिखित शब्दों का विग्रह कर समास का नाम लिखिए-

मृग-समूह, हाथ-मुँह, उतार-चढ़ाव, व्यथा-कथा।

3. ‘कौतुक’ में ‘प्रिय’ शब्द जोड़कर ‘कौतुकप्रिय’ शब्द बनता है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों में ‘प्रिय’ शब्द जोड़कर अन्य शब्द बनाइए और उनके अर्थ भी लिखिए -

अनुशासन, जन, लोक, न्याय, सत्य।

4. ‘प्रत्यावर्तन’ शब्द प्रति$आवर्तन की सन्धि से बना है। इ$आ=या हो गया है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों में सन्धि करके नया शब्द बनाइए -

प्रति$एक, अति$आचार, प्रति$उपकार, इति$आदि, उपरि$उक्त।

इसे भी जानें

महोदवी वर्मा को सन् 1982 ई0 में उनकी कृति ‘यामा’ के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया था।

पाठ 17

अमरकंटक से डिंडौरी

(प्रस्तुत यात्रावृत्तांत में नर्मदा-सौन्दर्य के साथ-साथ नर्मदा तट के जन-जीवन की अन्तरंग झलक भी मिलती है।)

गंगोत्री, यमुनोत्री या फिर नर्मदाकुंड- ये वे स्थान हैं, जहाँ नदी पहाड़ की कोख से निकलकर पहाड़ की गोद में आती है। पहाड़ के गर्भ में छुपा हुआ पानी यहाँ अवतरित होता है। नवजात शिशु की तरह नदी यहाँ धवल, उज्ज्वल और कोमल होती है।

यहाँ से हमारी यात्रा का नया अध्याय शुरू हुआ। अभी तक हम नर्मदा के उत्तर-तट पर थे, यहाँ से दक्षिण-तट पर आ गये। अभी तक उद्गम की ओर चलते थे, आज से संगम की ओर चलेंगे।

कोई दो घंटे में कपिलधारा पहुँच गये। अधिकांश परकम्मावासी यहाँ से सड़क पकड़कर कबीरचौरा होते हुए डिंडौरी निकल जाते हैं। लेकिन हमें तो नर्मदा के किनारे-किनारे ही जाना था, पर कपिलधारा के सामने की गहरी घाटी को देखकर ठिठक कर खड़े हो गये। वहाँ से कोई नहीं जाता। वहाँ पगडंडी तो क्या, पगडंडी की चुटिया तक नहीं थी। बहुत चिरौरी करने पर भी कोई हमारे साथ आने को तैयार न हुआ। उलटे डरा दिया कि गर्मी के दिन हैं, साँप-बिच्छू नदी के किनारे आ जाते हैं, वहाँ से जाना खतरे से खाली नहीं। लेकिन जायेंगे तो नर्मदा के संग-संग, इसी घाटी में से, चाहे जो हो।

रक्षा करना माँ। ऐन कपिलधारा से नीचे उतरना संभव नहीं था। थोड़ा आगे बढ़कर नीचे उतरे।

प्रपात के आसपास मधुमक्खी के सैकड़ों छत्तों को देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ। दीपावली के समय एक भी छत्ता नहीं था। मधुमक्खियों को गरमी में शायद यहाँ की ठंडक भाती हो।

दूधधारा से भी नीचे उतरे। चट्टानों पर से धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। कहीं-कहीं तो समझ में नहीं आता था कि कहाँ से बढ़ें। गिरते-पड़ते, चढ़ते-उतरते, चप्पा-चप्पा आगे बढ़ रहे थे। थक जाते तो बैठ लेते, फिर तुरंत चल देते। इस सुनसान घाटी में हम अनावश्यक विलंब करना नहीं चाहते थे।

विलंब नर्मदा भी नहीं चाहती थी। तेज गति से कूदती-दौड़ती नीचे उतर रही थी। अमरकंटक कोई बड़ा पहाड़ नहीं। आते समय हम इसे दो घंटे मे चढ़ गये थे। उस समय नर्मदा का साथ छोड़ दिया था, सीधे पगडंडी से चढ़े थे। इस बार नर्मदा के किनारे-किनारे, बिना पगडंडी के उतर रहे थे।

नर्मदा की उँगली पकड़कर चल रहे थे। आमने-सामने ऊँचे हरे-भरे पहाड़ और बीच में गहरी और सँकरी घाटी में से बहती हुई तन्वंगी नर्मदा। तीसरे पहर घाटी चौड़ी होने लगी। मैं समझ गया कि पहाड़ खत्म होने को है, मैदान आ गया। हमारी खुशी का क्या कहना।

अमरकंटक का नाम मेकल भी है। इसलिए नर्मदा का नाम मेकलसुता भी है। मेकल अपनी बिटिया को वनाच्छादित घाटी में से किस हिफाजत से नीचे छोड़ गया है, इसे आज हमने अपनी आँखों से देखा।

आगे जाने पर पगडंडी मिल गयी। इक्के-दुक्के ग्रामीण भी दिखाई देने लगे। शाम होते-होते पकरीसोंढा पहुँचे। खूब सबेरे आगे बढ़े। सामने के सूखे खेतों में से बहती नर्मदा साफ दिखाई दे रही थी। अभी तक तंग घाटी के घने शाल वन में नर्मदा छुपी थी, मुश्किल से ही नजर आती थी, लेकिन यहाँ से वह दूर से भी साफ-साफ दिखाई देती है। नर्मदा का जन्म मानों गौरैया की तरह हुआ है। ऊपर कुंड के घोंसले में अंडे की तरह अवतरित हुई है। अंडे में से बाहर वह यहाँ नीचे निकली है।

आगे एक पेड़ की छाया में भोजन बनाने बैठे। पास में किरंगी गाँव है। वहाँ का एक ग्रामीण नहाने आया था। हमारे बारे में जानकर बहुत खुश हुआ। कहने लगा, 'गुरुजी, हमारे गाँव में अखंड कीर्तन हो रहा है, जरूर आइए, मेरे घर पर ही ठहरिए।'

उसके घर पहुँचे। पड़ोस में अखंड कीर्तन चल रहा था। दूसरे दिन आम का विवाह था, तो वहाँ दो दिन रह गये। उसके पड़ोसी ने घर के आँगन में आम का पेड़ लगाया था। दो साल से उसमें आम लग रहे थे। लेकिन जब तक वह उस पेड़ का विवाह नहीं कर देता, तब तक उसके फल नहीं खा सकता। ऐसा रिवाज है यहाँ। सो चमेली की बेल के साथ आम का विवाह रचाया है।

पंडित जी आये हैं, विधिवत विवाह हो रहा है। हम यह सब रसपूर्वक देखते रहे ! गाँव के कठोर जीवन में ऐसे अनुष्ठान रस घोलते हैं।

गारकामट्टा में गोपी कोटवार के घर रहे। गाँव में एक जगह शादी हो रही थी। हम भी शामिल हुए। भाँवरें पड़ रही थीं। सभी ने दूल्हा-दुलहन के पैर पूजे। मैंने भी पूजे। दुलहन के

हाथ मंे दो रुपये रखे तो तहलका मच गया। सभी दस्सी-दस्सी जो दे रहे थे !

एक मजे की बात यह थी कि यह लड़की का नहीं, लड़के का घर था।

यहाँ चार भाँवरे लड़की के घर पड़ती हैं, तीन लड़के के घर। यहाँ से चलने पर नर्मदा का एक प्रपात देखने को मिला। नर्मदा के बीसियों प्रपातों में सबसे लहुरा- कोई एक मीटर ऊँचा। पानी ने पथरीले पाट को काट-छाँट कर खोखला बना दिया है, मानो नदी में कोठियाँ बनी हों। इसलिए इसका नाम है कोठीघुघरा। घुघर या घुघरा यानी प्रपात।

श्रीहीन धरती पर से आगे बढ़ रहे थे। दीवाली के समय जब सामने तट से चले थे, तब कैसी हरियाली थी ! उसकी जगह अब है सूरज की ज्वाला से चटखी हुई भूरी, सूखी जमीन। छाया के लिए कहीं पेड़ तक नहीं। डिंडौरी तक ऐसा ही उजाड़ रहेगा। इसलिए बड़े सबेरे चल देते और नौ-दस बजे तक जो गाँव आ जाता, वहीं ठहर जाते।

अगला पड़ाव बंजरटोला। इसके बाद सिवनीसंगम। यहाँ सिवनी नदी नर्मदा में आ मिली है। संगम पर बने मंदिर में रहने की बढ़िया व्यवस्था हो गयी और यहाँ का एकांत भी मन को छू गया, तो यहाँ चार दिन रह गये। शादियों के दिन थे। मंदिर में सामने की पगडंडी से बारातें निकलती रहती थीं।

अद्भुत आकर्षण है माँ नर्मदा में।

वैसाखी पूर्णिमा के दिन खूब बारातें देखने को मिलीं। शहनाई, निशान, नगाड़े, टिमकी और झुमका के स्वर दिन भर गूँजते रहे। दूल्हा-दुलहन हाथ में पंखा लिये घोड़े पर सवार रहते। एक काँवर में दहेज रहता। पगडंडी पर चलते एक के पीछे एक दस-पंद्रह बाराती रहते। बस हो गयी बारात !

तोताराम पास के गोरखपुर बाजार में मनिहारी का सामान बेचता है। रोज नर्मदा नहाने आता है। साथ में रहता है उसका तोता- पिंजड़े में नहीं, उसके कंधे पर, लेकिन उड़ नहीं पाता। तोते से बड़ा प्यार है उसे। अकेला जीव, न घर न घाट। न कोई आगे, न पीछे। थोड़े-बहुत पैसे इकट्ठे होते ही तीरथ करने निकल पड़ता है। एक दिन मैंने पूछा, 'तोताराम, तुमने शादी नहीं की ?'

'सगाई तो तीन बार हुई, लेकिन शादी एक बार भी नहीं हुई। किसी न किसी कारण से सगाई टूट जाती है।'

तीन-तीन सगाई के बावजूद कुँवारे तोताराम की व्यथा-कथा सुनकर मन उदास हो गया। लेकिन उसने अपने मन को मना लिया है। तोते में मन लगाया है।

एक दिन गोरखपुर का बाजार कर आये, फिर चल दिये। गरमी के दिन थे, खेतों में फसल नहीं थी। पहाड़ नहीं, जंगल नहीं। जंगल तो दूर, छाया के लिए एक पेड़ नहीं। सामने का गाँव दूर से ही दिखता रहता। रास्ता भटक जाने का कोई भय नहीं। सो पगडंडी की परवाह किये बिना नर्मदा के किनारे-किनारे ही चलते।

धूप के कारण बुरा हाल था, पर आज आकाश में बादल थे। पथरकुचा तक पहुँचते-पहुँचते आकाश बादलों से घिर गया। यहाँ नदी के पाट में बहुत-सी चट्टाने थीं। वरना यहाँ तक नदी केवल मिट्टी में होकर बहती है। कपड़े धोने तक के लिए पत्थर नहीं था। दोपहर का भोजन हमने नदी के पथरीले पाट में बनाया। भोजन करके चले ही थे कि तेज वर्षा के कारण भागकर गाँव में शरण लेनी पड़ी। थोड़ी देर की वर्षा में गाँव में इतना कीचड़ हो गया कि चलना मुश्किल हो गया। इसलिए रात वहीं रह गये।

पौ फटते ही कुछ दूर चलने पर लिखनी गाँव में एक वृद्धा से पीने के लिए पानी माँगा तो उसने कहा, 'आओ बेटा, पानी देती हँू। लेकिन ऐसा करो, रोटी खाकर पानी पीओ। धूप में से आ रहे हो। खाकर पानी पीओगे तो ठीक रहेगा।'

माँ जैसे बच्चे को फुसलाती है, दुलराती है, बिलकुल वही भाव। उसके नेह को टाल नहीं सके। वह रोटियाँ ले आयी, उन पर शक्कर रखी थी। 'लो, खा लो बेटा।'

कैसा तृप्ति का भाव था उसके चेहरे पर !

अगला पड़ाव मझियाखार, फिर गोमतीसंगम। फिर लछमनमड़वा। लछमनमड़वा में एक साध्वी रहती है। मैंने उनसे कहा कि नौकरी के कारण पूरी परिक्रमा एक साथ नहीं कर सकता, छुट्टियों मंे थोड़ी-थोड़ी करके करता हूँ, तो उन्होंने कहा, 'बेटा, बूँदी का लड्डू पूरा खाओ तो मीठा लगता है और चूरा खाओ तो मीठा लगता है। इसका दुःख न करना।

दोपहर को डिंडौरी पहुँचे। डिंडौरी बड़ा कस्बा है। यहाँ नर्मदा पार करने वाले ग्रामीणों का क्रम अबाध गति से चलता रहता है। सिर पर गठरी या कंधे पर काँवर लिये पुरुष तथा सिर पर लकड़ी का गट्ठर और पीठ पर बच्चे को बाँधे स्त्रियाँ। पहले 'नर्मदा मैया की जय !' बोलकर प्रणाम करतीं, फिर नदी में उतरतीं। फिसलन और तेज प्रवाह के कारण बड़ी सावधानी बरतनी पड़ती है। मुख्य धारा आने पर सभी चौकस और चौकन्ने हो जाते हैं, सधे हुए पाँवों से या एक-दूसरे की बाँह पकड़ कर धीरे-धीरे बढ़ते हैं। कैसा रोमांच है इसमें !

यह दृश्य मुझे मगन रखता है। तीन दिन तक यही देखते रहे, फिर आ गये। अमरकंटक से डिंडौरी तक की यह यात्रा सबसे कठिन होनी चाहिए थी, लेकिन यही सबसे आसान थी। आधे दिन का पहाड़, एक दिन का जंगल, फिर कुछ दिनों का सँकरा मैदान। नर्मदा जैसी असामान्य नदी भला सामान्य नियम को क्यों कर मानने चली।

-अमृतलाल बेगड़

परकम्मावासी = प्रति वर्ष नर्मदा नदी की परिक्रमा करने वाले लोग। तन्वंगी = दुबले-पतले शरीर वाली। वनाच्छादित = चारांे तरफ वन से घिरा हुआ। दस्सी-दस्सी = दस-दस पैसा। लहुरा = छोटा। श्रीहीन = शोभा रहित।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1.नर्मदाकंुड से आगे की यात्रा को लेखक ने नया अध्याय क्यों कहा है ?

2.नर्मदा को मेकलसुता क्यों कहा जाता है ?

3.लेखक ने विवाह और उससे सम्बन्धित जिन घटनाओं का वर्णन किया है, उसे लिखिए ?

4.लिखनी गाँव में पहुँचने पर लेखक न चाहने पर भी रोटी क्यों खा लेता है ?

5.“बेटा, बूँदी का लड्डू पूरा खाओ तो मीठा लगता है और चूरा खाओ तो मीठा लगता है।” साध्वी ने ऐसा क्यों कहा ?

6.यात्रावृत्त में आये सभी गाँवों व स्थानों की सूची बनाइए।

इस यात्रावृत्तांत के लेखक श्री अमृतलाल बेगड़ का नर्मदा नदी के प्रति विशेष लगाव है, जिसके चलते वे नर्मदा तट की 1800 किलोमीटर से अधिक की कठिन पदयात्रा कर चुके हैं। लेखन के साथ कला में भी रुचि रखने वाले श्री बेगड़ के नर्मदा-परिक्रमा पर आधारित अनेक चित्र विभिन्न प्रदर्शनियों में आमंत्रित एवं पुरस्कृत हो चुके हैं।

विचार और कल्पना

1. नर्मदा नदी का उद्गम अमरकंटक है। हिमालय पर्वत से हमारे देश की अनेक नदियाँ निकलती हैं। नीचे दी गयी नदियों के नाम से उनके उद्गम स्थल का मिलान कीजिए -

गंगायमुनोत्री

यमुनागंगोत्री

सतलजशेषनाथ झील

झेलमराकस ताल

2. यदि लेखक की तरह आपको किसी लम्बी पैदल यात्रा पर जाना पड़े तो सूची बनाइए कि आप अपने साथ क्या-क्या सामान ले जायेंगे।

कुछ करने को

1. जहाँ दो या दो से अधिक नदियाँ मिलती हैं, उस स्थान को संगम कहते हैं। हमारे देश में ऐसे कई संगम हैं। निम्नांकित शीर्षकों के अन्तर्गत कुछ संगमों का विवरण तैयार करें।

क्रमांकसंगमस्थल का नामनदियों का नाम जो मिलती हैं।

जैसे -सिवनीसंगम नर्मदा-सिवनी

....

....

2. यात्रा देश के अंदर भी की जाती है और विदेशों की भी। विदेश की यात्रा के समय कुछ प्रपत्रों की भी आवश्यकता पड़ती है जैसे- 'पासपोर्ट' और 'वीज़ा'। इनके बारे में जानकारी एकत्र कीजिए।
भाशा की बात

1. 'नवजात शिशु की तरह नदी यहाँ धवल, उज्ज्वल और कोमल होती है।' इस पंक्ति में नर्मदा नदी की तुलना नवजात शिशु से की गयी है। इस प्रकार के अन्य वाक्य पाठ से चुनकर लिखिए।
2. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-
गंगा, नदी, पर्वत, बेटी।
3. 'गिरते-पड़ते, चढ़ते-उतरते, चप्पा-चप्पा आगे बढ़ रहे थे।' इस वाक्य में तीन प्रकार के

शब्द-युग्मों का प्रयोग हुआ है। नीचे लिखे शब्द-युग्मों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

इक्का-दुक्का, दस्सी-दस्सी, हरे-भरे, आमने-सामने।

4. अद्भुत आकर्षण में 'अद्भुत' शब्द 'विशेषण' हैं। पाठ में आये पाँच विशेषण और विशेष्य शब्द छाँटकर लिखिए।

पाठ 18

नीड़ का निर्माण फिर-फिर

(प्रस्तुत कविता में कवि के जीवन का उल्लास और उत्साह छलक रहा है। कविता द्वारा कवि ने जीवन की कठिनाइयों से लड़ने और सब कुछ नष्ट हो जाने पर भी फिर से नया निर्माण करने की प्रेरणा दी है।)

नीड़ का निर्माण फिर-फिर

नेह का आह्वान फिर-फिर

बह उठी आँधी कि नभ में

छा गया सहसा अँधेरा

धूलि-धूसर बादलों ने

भूमि को इस भाँति घेरा,

रात-सा दिन हो गया, फिर

रात आयी और काली

लग रहा था अब न होगा

इस निशा का फिर सवेरा

रात के उत्पात-भय से

भीत जन-जन, भीत कण-कण,

किन्तु प्राची से उषा की

मोहिनी मुस्कान फिर-फिर

नीड़ का निर्माण फिर-फिर

नेह का आह्वान फिर-फिर

बह चले झोंके कि काँपे

भीम कायावान भूधर,

जड़ समेत उखड़-पुखड़ कर,

गिर पड़े, टूटे विटप वर,

हाय तिनकों से विनिर्मित

घोसलों पर क्या न बीती,

डगमगाये जबकि कंकड़

ईंट पत्थर के महल पर

बोल, आशा के विहंगम

किस जगह पर तू छिपा था,

जो गगन पर चढ़ उठाता

गर्व से निज वक्ष फिर-फिर।

नीड़ का निर्माण फिर-फिर,

नेह का आह्वान फिर-फिर !

-हरिवंश राय 'बच्चन'

डा0 हरिवंश राय 'बच्चन' का जन्म 27 नवम्बर सन् 1907 ई0 को प्रयाग में हुआ। इनकी रचनाओं में 'मधुशाला', 'मधुकलश', 'निशानिमन्त्रण', 'एकान्त संगीत', 'सतरंगिणी', 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' आदि विशेष प्रसिद्ध हैं। इनका निधन 18 जनवरी सन् 2003 ई0 को मुम्बई में हो गया।

नीड़ = चिड़ियों का घांेसला। नेह = स्नेह, प्रेम। आह्वान = आमन्त्रण, बुलाहट। भीत = भयभीत, डरा हुआ। प्राची = पूर्व दिशा। भीम कायावान भूधर = विशाल आकार वाले पहाड़। विनिर्मित = बने हुए। विहंगम = पक्षी।

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1.'नेह का आह्वान फिर-फिर' से कवि का क्या आशय है ?

2.निराशा में आशा का संचार किस रूप में होता है ?

3. निम्नलिखित भाव किन पंक्तियों में आये हैं ? लिखिए -

(क) घोर तूफान और रात्रि के कष्टों से भयभीत जन में उषा अपनी सुनहली किरणों से नयी आशा भर देती है।

(ख) तेज आँधी के झोंकों के चलने से जब बड़े-बड़े पेड़-पर्वत काँपने लगते हैं, बड़े-बड़े पेड़ उखड़ जाते हैं, तब तिनकों से बने हुए घांेसलों की क्या स्थिति होगी ?

4. सतत संघर्ष और निर्माण की क्रियाओं की उपमा कवि ने किससे दी है ?

5. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए।

(क) रात-सा दिन हो गया, फिर रात आयी और काली।

(ख) बोल, आशा के विहंगम किस जगह पर तू छिपा था।

विचार और कल्पना

1. जैसे चिड़िया अपना घांेसला बनाती है वैसे ही मनुष्य अपने पक्के मकान बनाता है। बताइए एक मकान के निर्माण में किन-किन वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

2. 'आशा ही जीवन है' पर 10 पंक्तियाँ लिखिए।

3. नीचे बने चित्र को देखकर बताइए कि यह क्या है तथा किससे सम्बन्धित है।

कुछ करने को

‘आशावान व्यक्ति कभी पराजित नहीं होता है’ -विषय पर कक्षा में भाषण प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।

भाषा की बात

1. ‘धूलि धूसर बादलों ने भूमि को इस भाँति घेरा’ में ध-ध और भ-भ की आवृत्ति हुई है। इससे पंक्ति में एक सरसता आ गयी है, बताइए यहाँ किस अलंकार का प्रयोग हुआ है।

2. कविता में ‘फिर-फिर’, ‘जन-जन’ तथा ‘कण-कण’ (पुनरुक्त शब्द) का प्रयोग हुआ है। ‘फिर-फिर’ निर्माण करने की ‘क्रिया’ की विशेषता प्रकट कर रहा है जबकि ‘जन-जन’ से ‘प्रत्येक जन’ और ‘कण-कण’ से ‘प्रत्येक कण’ का बोध हो रहा है। इसी प्रकार नीचे लिखे पुनरुक्त शब्दों का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए -

घर-घर, क्षण-क्षण, धीरे-धीरे, भाई-भाई।

पढ़ने के लिए

‘‘दुख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात;
एक परदा यह झीना नील छिपाये है जिसमें सुख गात।
जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल;
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।
विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान;
यही दुख-सुख-विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।’’

- जयशंकर प्रसाद

पाठ 19

जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी

(इस पाठ में लेखक ने जीवन में पुस्तकों के महत्त्व पर प्रकाश डाला है।)

बचपन की बात है। उस समय आर्यसमाज का सुधारवादी आन्दोलन पूरे जोर पर था। मेरे पिता आर्यसमाज रानीमंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

पिता की अच्छी-खासी सरकारी नौकरी थी, बर्मा रोड जब बन रही थी तब बहुत कमाया था उन्होंने। लेकिन मेरे जन्म के पहले ही गाँधीजी के आह्वान पर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। हम लोग बड़े आर्थिक कष्टों से गुजर रहे थे फिर भी घर में नियमित पत्र-पत्रिकाएँ आती थीं- 'आर्यमित्र', 'साप्ताहिक', 'वेदोदय', 'सरस्वती', 'गृहणी', और दो बाल पत्रिकाएँ खास मेरे लिए - 'बालसखा' और 'चमचम'। उनमें होती थीं परियों, राजकुमारों, दानवों और सुन्दर राजकन्याओं की कहानियाँ और रेखाचित्र। मुझे पढ़ने की चाह लग गयी। हर समय पढ़ता रहता। खाना खाते समय थाली के पास पत्रिकाएँ रखकर पढ़ता। अपनी दोनों पत्रिकाओं के अलावा भी 'सरस्वती' और 'आर्यमित्र' पढ़ने की कोशिश करता। घर में पुस्तकें भी थीं। उपनिषदें और उनके हिन्दी अनुवाद- सत्यार्थ प्रकाश। 'सत्यार्थ प्रकाश' के खंडन-मंडन वाले अध्याय पूरी तरह समझ में नहीं आता था पर पढ़ने में मजा आता था।

मेरी प्रिय पुस्तक थी स्वामी दयानन्द की एक जीवनी, रोचक शैली में लिखी हुई, अनेक चित्रों से सुसज्जित। वे तत्कालीन पाखंडों के विरुद्ध अदम्य साहस दिखाने वाले अद्भुत व्यक्तित्व थे। कितनी ही रोमांचक घटनाएँ थीं उनके जीवन की जो मुझे बहुत प्रभावित करती थीं। चूहे को भगवान का मीठा खाते देख कर मान लेना कि प्रतिमाएँ भगवान नहीं होती, घर छोड़कर भाग जाना। तमाम तीर्थों, जंगलों, गुफाओं, हिमशिखरों पर साधुओं के बीच घूमना और हर जगह इसकी तलाश करना कि भगवान क्या है ? सत्य क्या है ? जो भी समाज विरोधी, मनुष्य विरोधी मूल्य हैं, रूढ़ियाँ हैं उनका खंडन करना और अन्त में अपने हत्यारे को क्षमा कर उसे सहारा देना। यह सब मेरे बालमन को बहुत रोमांचित करता।

माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देतीं। चिन्तित रहतीं कि लड़का कक्षा की किताबें नहीं पढ़ता। पास कैसे होगा। कहीं खुद साधु बनकर फिर से भाग गया तो ? पिता कहते जीवन में यही पढ़ाई काम आयेगी पढ़ने दो। मैं स्कूल नहीं भेजा गया था, शुरू की पढ़ाई के लिए घर पर मास्टर रक्खे गये थे पिता नहीं चाहते थे कि नासमझ उम्र में मैं गलत संगति में पड़ कर गाली-गलौज सीखूँ, बुरे संस्कार ग्रहण करूँ अतः स्कूल में मेरा नाम लिखाया गया, जब मैं कक्षा दो तक की पढ़ाई घर पर कर चुका था। तीसरे दर्जे में भर्ती हुआ। उस दिन शाम को पिता उँगली पकड़ कर मुझे घुमाने ले गये। लोकनाथ की एक दुकान से ताजा अनार का शर्बत मिट्टी के कुल्हड़ में पिलाया और सर पर हाथ रख कर बोले - 'वायदा करो कि पाठ्यक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ोगे, माँ की चिन्ता मिटाओगे। 'उनका आशीर्वाद था या मेरा जी तोड़ परिश्रम कि तीसरे, चौथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया।' माँ ने आँसू भर कर गले लगा लिया, पिता मुस्कुराते रहे, कुछ बोले नहीं।

अंग्रेजी में मेरे नम्बर सबसे ज्यादा थे, अतः स्कूल से इनाम में दो अंग्रेजी किताबें मिली थीं। एक मंे दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और कुंजों में भटकते हैं और इस बहाने पक्षियों की जातियाँ, उनकी बोलियाँ, उनकी आदतों की जानकारी उन्हें मिलती है। दूसरी किताब थी 'ट्रस्टी द रग' जिसमें पानी के जहाजों की कथाएँ थीं, कितने प्रकार के होते हैं। कौन-कौन सा माल लाद कर लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, नाविकों की जिन्दगी कैसी होती है, कैसे-कैसे जीव मिलते हैं, कहाँ ह्वेल होती है, कहाँ शार्क होती है।

इन दो किताबों ने एक नई दुनिया का द्वार मेरे लिए खोल दिया। पक्षियों से भरा आकाश और रहस्यों से भरा समुद्र। पिता ने अलमारी के एक खाने में अपनी चीजें हटाकर जगह बनायी और मेरी दोनों किताबें उस खाने में रख कर कहा, 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी लाइब्रेरी है।' यहाँ से आरम्भ हुई उस बच्चे की लाइब्रेरी। आप पूछ सकते हैं कि किताबें पढ़ने का शौक तो ठीक। किताबें इकट्ठी करने की सनक क्यों सवार हुई, उसका कारण भी बचपन का एक अनुभव है।

इलाहाबाद भारत के प्रख्यात शिक्षा केन्द्रों में एक रहा है। ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा स्थापित पब्लिक लाइब्रेरी से लेकर महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित भारती भवन तक। अपने मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी हरि भवन। स्कूल से छुट्टी मिली कि मैं उसमें जाकर जम जाता था। पिता दिवंगत हो चुके थे, लाइब्रेरी का चन्दा चुकाने का पैसा नहीं था, अतः वहीं

बैठकर किताबें निकलवा कर पढ़ता रहता था। अपने छोटे से हरि भवन में खूब उपन्यास थे। वहीं परिचय हुआ बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की 'दुर्गेशनन्दिनी', 'कपाल कुंडला' और 'आनन्द मठ' से। टॉलस्टाय की 'अन्ना करेनिना' , विक्टर ह्यूगो का 'पेरिस का कुबड़ा', गोर्की की 'मदर' और सबसे मनोरंजक सर्वा-रीज का 'विचित्र वीर' (यानी डान क्विक्जोट) हिन्दी के ही माध्यम से सारी दुनिया के कथा पात्रों से मुलाकात करना कितना आकर्षक था।

लाइब्रेरी खुलते ही पहुँच जाता और जब लाइब्रेरियन शुक्लजी कहते कि बच्चा अब उठो, पुस्तकालय बन्द करना है तब बड़ी अनिच्छा से उठता। जिस दिन कोई उपन्यास अधूरा छूट जाता, उस दिन मन में कसक होती कि काश इतने पैसे होते कि सदस्य बन कर किताब ईश्यू करा लाता, या काश इस किताब को खरीद पाता तो घर में रखता। एक बार पढ़ता, दो बार पढ़ता, बार-बार पढ़ता पर जानता था कि यह सपना ही रहेगा। भला कैसे पूरा हो पायेगा। पिता के देहावसान के बाद तो आर्थिक संकट इतना बढ़ गया कि पूछिए मत, फिर भी मैंने जीवन की पहली साहित्यिक पुस्तक अपने पैसों से कैसे खरीदी, यह आज तक याद है।

उस साल इण्टरमीडिएट पास किया था। पुरानी पाठ्यपुस्तकें बेच कर बी0ए0 की पाठ्य पुस्तकें लेने सेकेंड हैंड बुक शॉप पर गया। उस बार जाने कैसे पाठ्यपुस्तकें खरीद कर भी दो रुपये बच गये थे। सामने के सिनेमाघर में 'देवदास' लगा था न्यू थियेटर्स वाला। बहुत चर्चा थी उसकी। लेकिन मेरी माँ को सिनेमा देखना बिल्कुल नापसन्द था। उसी से बच्चे बिगड़ते हैं, लेकिन उसके गाने सिनेमा गृह के बाहर बजते थे। उसमें सहगल का एक गाना था 'दुःख के दिन अब बीतत नाहीं' उसे अक्सर गुनगुनाता रहता था। कभी-कभी गुनगुनाते आँखों से आँसू भी आ जाते थे जाने क्यों ?

एक दिन माँ ने सुना। माँ का दिल तो आखिर माँ का दिल। एक दिन बोली-दुःख के दिन बीत जायेंगे बेटा, दिल इतना छोटा क्यों करता है, धीरज से काम ले। जब उन्हें मालूम हुआ कि यह तो फिल्म 'देवदास' का गाना है, तो सिनेमा की घोर विरोधी माँ ने कहा- अपना मन क्यों मारता है, जाकर पिक्चर देख आ। पैसे मैं दे दूँगी। मैंने माँ को बताया कि किताबें बेच कर दो रुपये मेरे पास बचे हैं।' वे दो रुपये लेकर माँ की सहमति से फिल्म देखने गया। पहला शो छूटने में देर थी, पास में अपनी परिचित किताब की दुकान थी। वहीं चक्कर लगाने लगा। सहसा देखा काउन्टर पर एक पुस्तक रक्खी है- 'देवदास', लेखक, शरतचन्द्र

चट्टोपाध्याय, दाम केवल एक रुपया। मैंने पुस्तक उठा कर उलटी-पलटी तो पुस्तक-विक्रेता बोला- 'तुम विद्यार्थी हो। यहीं अपनी पुस्तकें बेचते हो। हमारे पुराने ग्राहक हो। तुमसे अपना कमीशन नहीं लूँगा। केवल दस आने में यह किताब दे दूँगा।' मेरा मन पलट गया। कौन देखे डेढ़ रुपये में पिक्चर ? दस आने में 'देवदास' खरीदी। जल्दी-जल्दी घर लौट आया और दो रुपये में से बचे एक रुपया छः आना माँ के हाथ में रख दिये।'

अरे तू लौट कैसे आया ? पिक्चर नहीं देखी ?' माँ ने पूछा। 'नहीं माँ! फिल्म नहीं देखी, यह किताब ले आया देखो।' माँ की आँखों में आँसू आ गये। खुशी के थे, या दुःख के यह नहीं मालूम। वह मेरे अपने पैसों से खरीदी, मेरी अपनी निजी लाइब्रेरी की पहली किताब थी।

- धर्मवीर भारती

धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर सन् 1926 ई0 को हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम0 ए0, डी0 फिल0 करने के पश्चात् ये वहीं हिन्दी-विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हुए, फिर धर्मयुग साप्ताहिक पत्रिका के सम्पादक होकर मुम्बई चले गये। धर्मवीर भारती नयी कविता के श्रेष्ठ कवि, उपन्यासकार, कहानीकार और निबन्धकार हैं। 'अन्धायुग', 'कनुप्रिया', 'सातगीत वर्ष', 'ठंडा लोहा', इनके काव्यसंग्रह हैं। 'गुनाहों का देवता' और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' जैसे इनके उपन्यासों की हिन्दी में बहुत चर्चा हुई है। 'गुलकी बन्नो', 'बन्द गली का आखिरी मकान' आदि कहानियों का हिन्दी की नयी कहानी में विशिष्ट स्थान है। इनका निधन सन् 1989 ई0 में मुम्बई में हुआ।

आह्वान = बुलावा। अदम्य = जो दबाया न जा सके, प्रबल। रोमांचित = पुलकित, जिसके रोयें खड़े हों। टॉलस्टाय = रूसी कथाकार। विक्टर ह्यूगो = फ्रांसीसी कथाकार। मैक्सिम गोर्की = एक रूसी कथाकार। ईश्यू कराना = निर्गत कराना।

प्रश्न-अभ्यास

संस्मरण से

1. बचपन में लेखक के घर कौन-कौन सी पत्रिकाएँ आती थीं ?

2. बचपन में लेखक को स्वामी दयानन्द जी की जीवनी क्यों पसन्द थी ?

3. लेखक को अंग्रेजी में सबसे अधिक अंक पाने के बाद उपहार में कौन-सी दो पुस्तकें मिली थीं और उनसे लेखक को क्या जानकारी प्राप्त हुई ?

4. पुस्तकों को पढ़ना एक अच्छी आदत है। बच्चों का मन कहानियों में खूब लगता है। दूसरी भाषाओं के उपन्यास और कहानियों के हिन्दी अनुवाद भी उपलब्ध हैं। नीचे लिखी पुस्तकों के लेखकों के नाम बताइए।

पुस्तक का नाम लेखक का नाम

आनन्द मठ.....

अन्ना करेनिना.....

पेरिस का कुबड़ा.....

मदर.....

विचित्र वीर.....

सत्यार्थ प्रकाश.....

सूरज का सातवाँ घोड़ा.....

देवदास.....

कपाल कुण्डला.....

5. लेखक ने देवदास फिल्म क्यों नहीं देखी ?

विचार और कल्पना

'अपने जीवन से जुड़ी किसी घटना/अनुभव' पर दस वाक्य लिखिए।

कुछ करने को

1. आर्य समाज संस्था ने भारतीय समाज मंे फैली रूढ़ियों एवं आडम्बरों को दूर करने का प्रयास किया। वह भारत का नव जागरण काल था। आर्य समाज के अतिरिक्त ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, थियोसॉफिकल सोसाइटी जैसी अनेक संस्थाओं ने भी समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया था। इन संस्थाओं के संस्थापकों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

2. वर्तमान समय में प्रकाशित होने वाली किन्हीं चार बाल पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

भाषा की बात

1. 'वेदोदय' तथा 'दुर्गेश' शब्द क्रमशः वेद$उदय तथा दुर्ग$ईश की सन्धि से बने हैं। इसमें अ$उ=ओ तथा अ$ई=ए हो गया है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विग्रह कीजिए -

वीरोचित, देवोचित, रमेश, सुरेश।

2. इस पाठ में लाइब्रेरी, इंडिया, थियेटर, पिक्चर आदि अंग्रेजी के शब्द आये हैं। इनके लिए प्रयुक्त होने वाले हिन्दी शब्दों को लिखिए।

3. नीचे कुछ वाक्य दिये गये हैं, इनमें साधारण, संयुक्त तथा मिश्रित-तीनों प्रकार के वाक्य हैं। उन्हें पहचान कर वाक्यों के सामने उनका नाम लिखिए-

(क) मेरे पिता आर्य समाज, रानी मंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी।

(ख) माँ स्कूली पढ़ाई पर जोर देती थी।

(ग) जल्दी -जल्दी घर लौट आया और दो रुपये में से एक रुपया छह आना माँ के हाथ में रख दिये।

(घ) उनका आशीर्वाद था या मेरा जी-तोड़ परिश्रम कि तीसरे, चौथे में मेरे अच्छे नम्बर आये और पाँचवें दर्जे में तो मैं फर्स्ट आया।

(ङ) उस साल इण्टरमीडिएट पास किया था।

4. निम्नलिखित वाक्य को ध्यान से पढ़िए और बताइए कि इसमें कर्ता, क्रिया, कर्म में से किसका लोप है-

लोकनाथ की एक दुकान से ताजा अनार का शर्बत मिट्टी के कुल्हड़ में पिलाया और सर पर हाथ रखकर बोले- वायदा करो कि पाठ्यक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ोगे, माँ की चिन्ता मिटाओगे।

इसे भी जानें

विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय 'नेशनल लाइब्रेरी' कीव, रूस में है।

पाठ 20

झाँसी की रानी

(प्रस्तुत पाठ वृन्दावनलाल वर्मा के प्रसिद्ध उपन्यास'झाँसी की रानी' से लिया गया है। इसमें अंग्रेजों के साथ झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के अन्तिम युद्ध का वर्णन है।)

Û Û Û Û Û

'मुन्दरबाई' रघुनाथसिंह, ने कहा,'रानी साहब का साथ एक क्षण के लिए भी न छूटने पावे। आज अन्तिम युद्ध लड़ने जा रही हैं।'

मुन्दर-'आप कहाँ रहेंगे ?'

रघुनाथसिंह-'जहाँ उनकी आज्ञा होगी। वैसे आप लोगों के समीप ही रहने का प्रयत्न करूँगा।'

मुन्दर-'मैं चाहती हूँ आप बिल्कुल निकट ही रहें। मुझे लगता है, मैं आज मारी जाऊँगी। आपके निकट होने से शान्ति मिलेगी।'

रघुनाथसिंह- 'मैं भी नहीं बचूँगा। रानी साहब को किसी प्रकार सुरक्षित रखना है। मैं तुम्हें तुरन्त ही स्वर्ग में मिलूँगा। केवल आगे-पीछे की बात है। वह सूखी हँसी हँसा।'

मुन्दर ने रघुनाथसिंह की ओर आँसू भरी आँखों से देखा। कुछ कहने के लिए हांेठ हिले। रघुनाथसिंह की आँखें भी धुँधली हुईं।

दूर से दुश्मन के बिगुल के शब्द की झाईं कान में पड़ी। मुन्दर ने रघुनाथसिंह को मस्तक नवाकर प्रणाम किया और उसके ओट में जल्दी-जल्दी आँसू पोंछ डाले। रघुनाथसिंह ने मुन्दर को नमस्कार किया और दोनों शर्बत लिये हुए रानी के पास पहुँचे ।

मुन्दर ने जूही को पिलाया, रघुनाथसिंह ने रानी को। अंग्रेजों के बिगुल का साफ शब्द सुनायी दिया। तोप का धड़ाका हुआ, गोला सन्ना कर ऊपर से निकल गया। रानी दूसरा कटोरा नहीं पी सकीं ।

रानी ने रामचन्द्र देशमुख को आदेश दिया, 'दामोदर को आज तुम पीठ पर बाँधो। यदि मैं मारी जाऊँ तो इसको किसी तरह दक्षिण सुरक्षित पहुँचा देना। तुमको आज मेरे प्राणों से बढ़कर अपनी रक्षा की चिन्ता करनी होगी। दूसरी बात यह है कि मारी जाने पर ये विधर्मी मेरी देह को छू न पायें। बस। घोड़ा लाओ।'

मुन्दर घोड़े ले आयी। उसकी आँखें छलछला रही थीं। पूर्व दिशा में अरुणिमा फैल गयी। अबकी बार कई तोपों का धड़ाका हुआ।

रानी मुस्करायीं। बोलीं, 'यह तात्या की तोपों का जवाब है।'

मुन्दर की छलछलाती हुई आँखों को देखकर कहा, 'यह समय आँसुओं का नहीं है, मुन्दर। जा, तुरन्त अपने घोड़े पर सवार हो। अपने लिए आये हुए घोड़े को देखकर बोली 'यह अस्तबल को प्यार करने वाला जानवर है। परन्तु अब दूसरे को चुनने का समय ही नहीं है। इसी से काम निकालूँगी।'

जूही के सिर पर हाथ फेरकर कही, 'जा जूही अपने तोपखाने पर। छका तो दे इन बैरियों को आज।'

जूही ने प्रणाम किया। जाते हुए कह गयी, 'इस जीवन का यथोचित अभिनय आपको न दिखला पायी। खैर।'

इतने में सूर्य का उदय हुआ।

सूर्य की किरणों ने रानी के सुन्दर मुख को प्रदीप्त किया। उनके नेत्रों की ज्योति दुहरे चमत्कार से भासमान हुई। लालवर्दी के ऊपर मोती-हीरों का कंठा दमक उठा और चमक पड़ी म्यान से निकली हुई तलवार।

रानी ने घोड़े को एड़ लगायी। पहले जरा हिचका फिर तेज हो गया। रानी ने सोचा कई दिन से बँधा होगा, थोड़ी देर में गरम हो जायेगा।

उत्तर और पश्चिम की दिशाओं में तात्या और रावसाहब के मोर्चे थे। दक्षिण में बाँदा के नवाब का, रानी ने पूर्व की ओर झपट लगायी।

गत दिवस की हार के कारण अंग्रेज जनरल सावधान और चिन्तित हो गये थे। इन लोगों ने अपनी पैदल पल्टनें पूर्व और दक्षिण की बीहड़ में छिपा लीं और हुजर सवारों को कई दिशाओं में आक्रमण की योजना की। तोपें पीठ पर रक्षा के लिए थीं। हुजर सवारों ने पहला हमला कड़ाबीन बन्दूकों से किया। बन्दूकों का जवाब बन्दूकों से दिया गया। रानी ने आक्रमण पर आक्रमण करके हुजर सवारों को पीछे हटाया। दोनों ओर के सवारों की बेहिसाब दौड़ से धूल के बादल छा गये। रानी के रणकौशल के मारे अंग्रेज जनरल थर्रा गये। काफी समय हो गया परन्तु अंग्रेजों को पेशवाई मोर्चा से निकल जाने की गुंजायश न मिली ।

जूही की तोपें गजब ढा रही थीं। अंग्रेज नायक ने इन तोपों का मुँह बन्द करना तै किया। हुजर सवार बढ़ते जाते थे, मरते जाते थे, परन्तु उन्होंने इस तरफ की तोपों को चुप करने का निश्चय कर लिया था। रानी ने जूही की सहायता के लिए कुमुक भेजी। उसी समय उनको खबर मिली कि पेशवा की अधिकांश ग्वालियरी सेना और सरदार 'अपने महराज' की शरण में चले गये। मुन्दर ने रानी से कहा, 'सवेरे अस्तबल का प्रहरी रिस-रिस कर अपने सरकार का स्मरण कर रहा था। मुझे सन्देह हो गया था कि ग्वालियरी कुछ गड़बड़ी करेंगे।'

'गाँठ में समय न होने के कारण कुछ नहीं किया जा सकता था।', रानी बोलीं, 'अब जो कुछ सम्भव है वह करो।'

इनकी लालकुर्ती अब तलवार खींचकर आगे बढ़ी। उस धूल धूसरित प्रकाश में भी तलवारों की चमचमाहट ने चकाचौंध पैदा कर दी। कुछ ही समय उपरान्त समाचार मिला कि ग्वालियरी सेना के पर पक्ष में मिल जाने के कारण रावसाहब के दो मोर्चे छिन गये हैं और अंग्रेज उनमें से घुसने लगे हैं। रानी के पीछे पैदल पल्टन थी। उसको स्थिति सँभालने की आज्ञा देकर वह एक ओर बढ़ी। उधर-सवार जूही के तोपखाने पर जा टूटे। जूही तलवार से भिड़ गयी। घिर गयी और मारी गयी। परन्तु शत्रु की तलवार जिसे चीरने में असमर्थ रही वह थी जूही की क्षीण मुस्कुराहट जो उसके होठों पर अनन्त दिव्यता की गोद में खेल गयी।

वर्दी के कट जाने पर हुजरों ने देखा कि तोपखाने का अफसर गोरे रंग की एक सुन्दर युवती थी और उसके होठों पर मुस्कुराहट थी!

समाचार मिलते ही रानी ने इस तोपखाने का प्रबन्ध किया।

इतने में ही ब्रिगेडियर स्मिथ ने अपने छिपे हुए पैदलों को छिपे हुए स्थानों से निकाला। वे संगीनें सीधी किये रानी के पीछे वाली पैदल पल्टन पर दो पार्श्वों से झपटे। पेशवा की पैदल पल्टन घबरा गयी। उसके पैर उखड़े। भाग उठी। रानी ने प्रोत्साहन, उत्तेजन दिया। परन्तु

उनके और उस भागती हुई पल्टन के बीच में गोरों की संगीनें और हुजरों के घोड़े आ चुके थे।

अंग्रेजों की कड़ाबीनें, संगीनें और तोपें पेशवाई सेना का संहार कर उठीं । पेशवा की दो तोपें भी उन लोगों ने छीन लीं। अंग्रेजी सेना बाढ़ पर आयी हुई नदी की तरह बढ़ने और फैलने लगी।

रानी की रक्षा के लिए लालकुर्ती सवार अटूट शौर्य और अपार विक्रम दिखलाने लगे। न कड़ाबीन की परवाह, न संगीन का भय और तलवार तो मानो उनको ईश्वरीय देन थी। उस तेजस्वी दल ने घंटों अंग्रेजों का प्रचंड सामना किया। रानी धीरे-धीरे पश्चिम दक्षिण की ओर अपने मोर्चे की शेष सेना से मिलने के लिए मुड़ी। यह मिलान लगभग असम्भव था, क्योंकि उस भागती हुई पैदल पल्टन और रानी के बीच में बहुसंख्यक हुजर सवार और संगीन बरदार पैदल थे। परन्तु उन बचे-खुचे लालकुर्ती वीरों ने अपनी तलवारों की आड़ बनायी।

रानी ने घोड़े की लगाम अपने दाँतों में थामी और दोनों हाथों से तलवार चलाकर अपना मार्ग बनाना आरम्भ कर दिया । दक्षिण-पश्चिम की ओर सोनरेखा नाला था। आगे चलकर

बाबा गंगादास की कुटी के पीछे दक्षिण और पश्चिम की ओर हटती हुई पेशवाई पैदल पल्टन।

मुन्दर रानी के साथ थी। अगल-बगल रघुनाथसिंह और रामचन्द्र देशमुख। पीछे कुँवर गुलमुहम्मद और केवल बीस-पच्चीस अवशिष्ट लाल सवार। अंग्रेजों ने थोड़ी देर में इन सबके चारों तरफ घेरा डाल दिया। सिमट-सिमट कर उस घेरे को कम करते जा रहे थे।

परन्तु रानी की दुहत्थू तलवारें आगे का मार्ग साफ करती चली जा रही थीं। पीछे के वीर सवारों की संख्या घटते-घटते नगण्य हो गयी। उसी समय तात्या ने रुहेली और अवधी सैनिकों की सहायता से अंग्रेजों के व्यूह पर प्रहार किया। तात्या कठिन से कठिन व्यूह में होकर बच निकलने की रणविद्या का पारंगत पंडित था। अंग्रेज थोड़े से सवारों को लालकुर्ती का पीछा करने के लिए छोड़कर तात्या की ओर मुड़ गये। सूर्यास्त होने में कुछ विलम्ब था।

लालकुर्ती का अन्तिम सवार मारा गया। रानी के साथ केवल चार सरदार और उनकी तलवारें रह गयीं। पीछे से कड़ाबीन और तलवार वाले दस-पन्द्रह गोरे सवार। आगे कुछ संगीन वाले गोरे पैदल।

रानी ने पीछे की तरफ देखा- रघुनाथसिंह और गुलमुहम्मद तलवार से अंग्रेज सैनिकों की संख्या कम कर रहे थे। एक ओर रामचन्द्र देशमुख दामोदरराव की रक्षा की चिन्ता में बरकाव करके लड़ रहा था। रानी ने देशमुख की सहायता के लिए मुन्दर को इशारा किया और वह स्वयं संगीनबरदारों को दोनों हाथों की तलवारों से खटाखट साफ करके आगे बढ़ने लगीं। एक संगीनबरदार की हूल रानी के सीने के नीचे पड़ी। उन्होंने उसी समय तलवार से उस संगीनबरदार को खत्म कर दिया। हूल करारी थी, परन्तु आँतें बच गयीं।

रानी ने सोचा, स्वराज्य की नींव बनने जा रही हूँ। रानी का खून बह निकला।

उस संगीनबरदार के खत्म होते ही बाकी भागे। रानी आगे निकल गयी। उनके साथी भी

दायें-बायें और पीछे। आठ दस गोरे घुड़सवार उनको पछियाते हुए।

रघुनाथसिंह पास थे। रानी ने कहा, ‘‘मेरी देह को अंग्रेज न छूने पावें।’’

गुलमुहम्मद ने भी सुना- और समझ लिया। वह और भी जोर से लड़ा।

एक अंग्रेज सवार ने मुन्दर पर पिस्तौल दागी। उसके मुँह से केवल ये शब्द निकले।
‘बाईसाहब, मैं मरी। मेरी देह ..... भगवान्।’

अन्तिम शब्द के साथ उसने एक दृष्टि रघुनाथसिंह पर डाली और वह लटक गयी। रानी ने मुड़कर देखा। रघुनाथसिंह से कहा, ‘सँभालो उसे। उसके शरीर को वे न छूने पावें।’ और वे घोड़े को मोड़कर अंग्रेज सवारों पर तलवारों की बौछार करने लगीं। कई कटे। मुन्दर को मारने वाला मारा गया।

रघुनाथसिंह फुर्ती के साथ घोड़े से उतरा। अपना साफा फाड़ा। मुन्दर के शव को पीठ पर कसा और घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ा।

गुलमुहम्मद बाकी सवारों से उलझा। रानी ने फिर सोन रेखा नाले की ओर घोड़े को बढ़ाया। देशमुख साथ हो गया।

अंग्रेज सवार चार-पाँच रह गये थे। गुलमुहम्मद उनको बहकावा देकर रानी के साथ हो लिया। रानी तेजी के साथ नाले पर आ गयीं।

घोड़े ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया- बिल्कुल अड़ गया। रानी ने पुचकारा। कई प्रयत्न किये परन्तु सब व्यर्थ।

वे अंग्रेज सवार आ पहुँचे ।

एक गोरे ने पिस्तौल निकाली और रानी पर दागी। गोली उनकी बायीं जंघा में पड़ी। वे गले में मोती-हीरों का दमदमाता हुआ कंठा पहने हुए थीं। उस अंग्रेज सवार ने रानी को कोई बड़ा सरदार समझकर विश्वास कर लिया कि अब कंठा मेरा हुआ। रानी ने बायें हाथ की तलवार फेंक कर घोड़े की लगाम पकड़ी और दूसरे जाँघ तथा हाथ की सहायता से अपना आसन सँभाला। इतने में वह सवार और भी निकट आया। रानी ने दायें हाथ के वार से उसको समाप्त कर दिया। उस सवार के पीछे से एक और सवार निकल पड़ा।

रानी ने आगे बढ़ने के लिए फिर एक पैर की एड़ लगायी।

घोड़ा बहुत प्रयत्न करने पर भी अड़ा रहा। वह दो पैरों से खड़ा हो गया। रानी को पीछे खिसकना पड़ा। एक जाँघ काम नहीं कर रही थी। बहुत पीड़ा थी। खून के फव्वारे पेट और जाँघ के घाव से छूट रहे थे।

गुलमुहम्मद आगे बढ़े हुए अंग्रेज सवार की ओर लपका।

परन्तु अंग्रेज सवार ने गुलमुहम्मद के आ पहुँचने के पहले ही तलवार का वार रानी के सिर पर किया।

वह उनकी दायीं ओर पड़ा। सिर का वह हिस्सा कट गया और आँख बाहर निकल पड़ी। इस पर भी उन्होंने अपने घातक पर तलवार चलायी और उसका कन्धा काट दिया।

गुलमुहम्मद ने उस सवार के ऊपर कसकर अपना भरपूर हाथ छोड़ा। उसके दो टुकड़े हो गये।

बाकी दो तीन अंग्रेज सवार बचे थे। उन पर गुलमुहम्मद बिजली की तरह टूटा। उसने एक को घायल कर दिया। दूसरे के घोड़े को लगभग अधमरा। वे तीनों मैदान छोड़कर भाग गये। अब वहाँ कोई शत्रु न था। जब गुलमुहम्मद मुड़ा तो उसने देखा रामचन्द्र देशमुख घोड़े से गिरती हुई रानी को साधे हुए हैं।

दिन भर के थके माँदे, भूखे-प्यासे, धूल और खून में सने हुए गुलमुहम्मद ने पश्चिम की ओर मुँह फेर कर कहा, 'खुदा, पाक परवरदिगार, रहम रहम।'

रघुनाथसिंह और देशमुख ने रानी को घोड़े पर से सँभाल कर उतारा। आवेश में आकर उस अ़डियल घोड़े को एक लात मारी। वह अपने अस्तबल की दिशा में भाग गया।

रघुनाथसिंह ने देशमुख से कहा, 'एक क्षण का भी विलम्ब नहीं करना चाहिए। अपने घोड़े पर इनको होशियारी के साथ रखो और बाबा गंगादास की कुटी पर चलो। सूर्यास्त होना ही चाहता है।'

देशमुख का गला रुँधा था। बालक दामोदरराव अपनी माता के लिए चुपचाप रो रहा था।

रामचन्द्र ने पुचकार कर कहा, 'इनकी दवा करेंगे, अच्छी हो जायेंगी, रो मत।'

रामचन्द्र ने रघुनाथसिंह की सहायता से रानी को सँभाल कर अपने घोड़े पर रखा।

रघुनाथसिंह ने गुलमुहम्मद से कहा, 'कुँवर साहब, इस कमजोरी से काम और बिगड़ेगा। याद कीजिए, अपने मालिक ने क्या कहा था। अंग्रेज अब भी मारते काटते दौड़ धूप कर रहे हैं। यदि आ गये तो रानी साहब की देह का क्या होगा।'

गुलमुहम्मद चौंक पड़ा। साफे के छोर से आँसू पोंछे। गला बिल्कुल सूख गया था। आगे बढ़ने का इशारा किया। वे सब द्रुतगति से बाबा गंगादास की कुटी पर पहुँचे।

- वृन्दावनलाल वर्मा

वृन्दावन लाल वर्मा का जन्म 9 जनवरी सन् 1889 ई0 में मऊरानीपुर झाँसी में हुआ था। शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्होंने झाँसी में ही रह कर वकालत आरम्भ की। छात्र जीवन से ही उन्होंने लिखना आरम्भ किया और जीवन पर्यन्त लिखते रहे। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ-'गढ़ कुंडार', 'लगन', 'संगम', 'विराटा की पद्मिनी', 'मुसाहिब जू', 'झाँसी की रानी', 'मृगनयनी' (उपन्यास) 'धीरे-धीरे', 'राखी की लाज', 'जहाँदारशाह', 'मंगलसूत्र' (नाटक), 'शरणागत', 'कलाकार का दंड' (कहानी संग्रह) आदि हैं। वृन्दावनलाल वर्मा को उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिए भारत सरकार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश राज्यों के साहित्य पुरस्कार, डालमिया साहित्यकार संसद, हिन्दुस्तानी अकादमी प्रयाग आदि के सर्वोत्तम पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

बिगुल = सेना या पुलिस में सिपाहियों को एकत्र करने के लिए बजाया जाने वाला तुरही के ढंग का बाजा। नवाकर = झुका कर। विधर्मी = स्वधर्म के विपरीत आचरण करने वाला। भासमान = प्रकाशित। कंठा = बड़े मनकों की माला जो गले से सटी रहती है। हुजर = अश्वारोही, घुड़सवार। कुमुक = किसी सेना के सहायतार्थ भेजी हुई सेना। संगीन = एक प्रकार का नोकदार हथियार। पार्श्व = दायें-बायें का भाग, अगल-बगल। अवशिष्ट = बचा हुआ, बाकी। नगण्य = जो गणना में न आ सके, तुच्छ, छुद्र। व्यूह = सैनिकों को युद्धभूमि

में उपयुक्त स्थान पर रखना, विधिपूर्वक रखना। पारंगत = निपुण, दक्ष। बरकाव = बचाव। हूल = लम्बी कटार, दो धारा छुरा। आवेश = जोश, गुस्सा। विलम्ब = देर। द्रुतगति = तेज रफ्तार।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1.मुन्दरबाई उदास क्यों थी ?

2.रानी ने रामचन्द्र देशमुख को क्या आदेश दिया ?

3.'यह अस्तबल को प्यार करने वाला जानवर है।' रानी ने घोड़े के लिए यह वाक्य क्यों कहा?

4.जूही ने अंग्रेज सेना का मुकाबला कैसे किया ?

5.अंग्रेज जनरल ने रानी से युद्ध के लिए क्या योजना बनायी थी ?

6.अन्तिम समय में रानी की पराजय क्यों हुई ?

7.नीचे दिये गये वाक्यों में रिक्त स्थानों को कोष्ठक में दिये गये उपयुक्त शब्दों की सहायता से पूरा कीजिए-

(क) मेरी देह को .....छूने न पाये। (पेशवा के सैनिक, अंग्रेज सैनिक, तात्या के सैनिक)

(ख)लालकुर्ती सैनिक..... रक्षा कर रहे थे। (अंग्रेजों की, रानी की, पेशवा की)

(ग)दामोदार राव रानी का..... था। (सगा पुत्र, छोटा भाई, दत्तक पुत्र)

(घ)अंग्रेजों से युद्ध में..... रानी का साथ दे रहे थे। (तात्या और पेशवा, तात्या और राजपूत, पेशवा और हुजर)

विचार और कल्पना

1.पाठ में किस समय की घटना का वर्णन किया गया है। इससे देश की दशा के बारे में क्या पता चलता है ?

2.झाँसी की रानी के जीवन की कहानी संक्षेप में लिखिए।

3.युद्ध के अन्तिम क्षणों में जब नया घोड़ा सोनरेखा नाले पर अड़ गया, उस समय रानी लक्ष्मीबाई के मन में क्या विचार आये होंगे ?

4.रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों द्वारा अपने अधिकार-क्षेत्र में अनावश्यक हस्तक्षेप के कारण

युद्ध किया। यदि आपके दैनिक कार्यों और विद्यालयीय क्रिया-कलापों में कोई अनावश्यक हस्तक्षेप करे तो आपको कैसा लगेगा और आप उसके लिए क्या करेंगे ?

कुछ करने को

1. इस पाठ में कुछ वीरांगनाओं के नाम आये हैं। पुस्तकों से और अपने बड़े-बुजुर्गों से कुछ और वीरांगनाओं के बारे में जानकारी एकत्र करके कक्षा में या बालसभा में चर्चा करें।

2. झाँसी की रानी से सम्बन्धित कविताएँ व लेख पढ़िए।

3. विद्यालय में शिक्षक की सहायता से आवश्यकतानुसार लालकुर्ती ब्रिगेड, लक्ष्मीबाई ब्रिगेड, सुभाष ब्रिगेड, आजाद ब्रिगेड आदि का गठन करें और विद्यालय सम्बन्धी क्रिया-कलापों, जैसे- प्रार्थना, खेलकूद, स्वच्छता, मिड-डे-मील, सांस्कृतिक गतिविधियों में अपने दायित्व का निर्वहन उत्कृष्टता के साथ करें।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक लिखिए-

अन्तिम, सुरक्षित, सूर्यास्त, विलम्ब ।

2. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

भासमान, कुमुक, अवशिष्ट, नगण्य, प्रोत्साहन।

3. निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलिए-

(क) रघुनाथ फुर्ती से घोड़े से उतरा और अपना साफा फाड़ा।

(ख) घोड़े पर इनको होशियारी के साथ रखो और बाबा गंगादास की कुटी पर चलो।

(ग) मुझे सन्देह हो गया था कि ग्वालियरी कुछ गड़बड़ी करेंगे।

(घ) रानी ने कहा कि यदि मैं मारी जाऊँ तो दामोदर को सुरक्षित दक्षिण पहुँचा देना।

4. निम्नलिखित शब्दों में क्रम से इत, आई, मान और ई प्रत्यय लगे हैं-

सुरक्षित, पेशवाई, भासमान, कमजोरी

इन प्रत्ययों से युक्त अन्य शब्द इस पाठ से चुनिए।

इसे भी जानें

वृन्दावनलाल वर्मा को ऐतिहासिक उपन्यासकार होने के कारण 'सर वाल्टर स्काट' कहा जाता है।

पाठ 21

बैताल की कथा

(प्रस्तुत पाठ बैताल की कथा में भ्रष्ट व्यापारी और सरकारी कर्मचारी पर व्यंग्य किया गया है।)

तब बैताल ने कहा, "हे विक्रम, तू मुझे फिर वृक्ष पर से उतार लाया। मैं तेरी लगन को देखकर बहुत सन्तुष्ट हूँ। तेरे मनोरंजन के लिए एक कथा सुनाता हूँ, सो सुन"ः---

किसी समय एक नगर में एक कपड़े का व्यापारी रहता था। जिसका नाम धरमचन्द था। सेठ धरमचन्द नाम के अनुरूप ही धर्मात्मा आदमी था। वह सुबह-शाम मन्दिर जाता था और लगभग एक घंटा प्रार्थना करता था। मन की इस एकाग्रता में कभी-कभी उसे सट्टे के अंक भी सूझ जाते थे। उसकी दुकान पर धर्म-पेटी रखी थी, वह बड़ा मिलनसार और मधुर स्वभाव का व्यक्ति था। उसका मुँह कानों तक फट गया था। दाँत बाहर हो गये थे और उसे बिना प्रयत्न दीनता प्रकट करने की सुविधा मिल गयी थी। जब वह किसी से बोलता, तो उसके मुख पर ऐसी मीठी मुस्कान खेलती, दाँत ऐसी दीनता बताते और आँखों में ऐसी लाचारी होती कि सामनेवाले से वह यदि उसका सिर भी माँग लेता, तो वह एकाएक नहीं न कर सकता था। धरमचन्द बहुत ईमानदार था, क्योंकि ग्राहक से बात करते हुए वह 'ईमान' कहता जाता था। वह सच्चा आदमी था, क्योंकि वह कपड़े की दर और उधारी का हिसाब 'भगवान की कसम' खाकर बताता था।

हे विक्रम ! धर्मात्मा आदमी की परीक्षा ईश्वर बार-बार लिया करता है। धरमचन्द पर भी मामले-मुकदमे चलते रहते थे। कभी वह किसी पर मुकदमा चलाता था और कभी कोई उस पर। ऐसा ही एक मुकदमा उस पर चल रहा था कि उस साहब का तबादला हो गया, जिसके सामने वह मुकदमा था। मामला बड़ा कमजोर था और धरमचन्द की हार निश्चित थी। पर वह नहीं हुआ।

नये साहब एक दिन कपड़ा खरीदने आये और संयोग से धरमचन्द की दुकान में घुस पड़े। देखते ही धरमचन्द ने पहचान लिया कि इन्हीं साहब के सामने मामला है। उसने कपड़ा नापना छोड़ दिया और हाथ जोड़कर सीढ़ी पर खड़ा हो गया, 'पधारिए साहब !' साहब को

कुर्सी पर बिठाकर उसने पान की तश्तरी आगे की और कहा, 'बड़ी किरपा की, साहब ! क्या सेवा करूँ ? साहब ने कहा, 'कोई कमीज का अच्छा-सा कपड़ा दिखाओ।'

धरमचन्द अच्छे-अच्छे कपड़ों के थान खोलकर साहब के सामने फैलाने लगा। ऐसे प्रेम-विभोर होकर कपड़े फैला रहा था जैसे भक्त भगवान को भोग लगाता है। साहब ने एक कपड़ा पसन्द किया और पूछा, 'क्या भाव है इसका?' धरमचन्द ने हाथ जोड़कर कहा, 'हमको क्यों लज्जित करते हैं। दुकान आपकी है। कितने कमीजों का दूँ ?' साहब का मुख कठोर हो गया। वे बोले, 'नहीं, मैं ऐसे नहीं लेता। कभी नहीं लिया। दाम बताओ ?'

हे विक्रम ! साहब भी ईमानदार थे। इस समय दो ईमानदारों की टक्कर हो रही थी। धरमचन्द थोड़ी देर चुप बैठा रहा, फिर उसने हार मान ली और बड़े दु:खी स्वर में कहा- "चार रुपये सात आने।" साहब ने सुना। उनके चेहरे पर से कठोरता एकदम गायब हो गयी और उसका स्थान पीड़ा ने ले लिया। साहब बहुत परेशान हो गये। धरमचन्द बड़े ध्यान से साहब के चेहरे को देख रहा था और उनकी पीड़ा से उसका कोमल हृदय फटा जा रहा था। साहब ने अटकते स्वर में कहा, 'नहीं भई, इतना महँगा नहीं पहन सकते।' वे उठ कर चलने लगे।

धरमचन्द ने उनके मुख को देखा और वह स्वयं रुआँसा हो गया। उसने विनती की, "साहब, कीमत की कोई बात नहीं। आप ले तो जाइए।" यह सुनकर न जाने क्यों साहब को क्रोध आ गया। वे धरमचन्द को रास्ते से हटाकर दुकान से बाहर निकल गये। जब तक वे आँखों से ओझल नहीं हो गये धरमचन्द उन्हें देखता ही रहा। फिर मन मसोस कर काम में लगा।

उस शाम को जब धरमचन्द भगवान के सामने प्रार्थना करने बैठा, तो उसके निर्मल हृदय से स्वर उठा, 'हे धरम, तूने साहब का दुःखी मन देखा। उनकी अँाखों में कितनी विवशता थी, कितनी निराशा थी। कितने लालच में उन्होंने वह कपड़ा पसन्द किया था और कीमत सुनकर चेहरा कैसा उतर गया था। सोचते होंगे--'हाय, हम अफसर कहलाते हैं, पर मन का कपड़ा नहीं पहन सकते। धरमचन्द तू तो अफसरों की हालत भली-भाँति जानता है। तू बड़ा दयालु मनुष्य है। क्या तुझे साहब पर दया नहीं आती। क्या तू उस दुखी की इतनी सी इच्छा पूरी नहीं कर सकता। धिक्कार है, तेरे पूजन-वन्दन को। अरे मूर्ख, दया धर्म का मूल है....,

धरमचन्द ने आत्मा की आवाज सुनी। उसका हृदय भर आया। उसकी नजरों में साहब का चेहरा झूल गया और आँसुओं की धारा बहने लगी। धोती से आँसू पोंछकर उसने हाथ जोड़े और कहा, 'हे भगवान्! मुझसे बड़ी भूल हुई। दया निधान! वस्त्र के मामले में आपकी उदारता जानता हूँ। जब आप द्रौपदी को एक के बाद एक सैकड़ों साड़ियाँ देते गये, तो मैं आपका भक्त, क्या साहब को कमीज नहीं पहना सकता। हे प्रभु! ये साहब लोग ही आज के द्रौपदी हैं, मुझे आशीष दो कि मैं उस दुखी का दुःख हर सकूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ आप से कि एक महीने के भीतर साहब को उस कपड़े का कमीज पहनाकर रहूँगा।' प्रतिज्ञा करने से धरमचन्द का मन हलका हो गया।

आठ दिन बीत गये। नवें दिन प्रातः काल धरमचन्द ने स्नान किया, तिलक लगाया और दुकान पर आया। उसने उस थान में से चार कमीजों का कपड़ा फाड़ा और कागज में लपेट कर बगल में दबाया। मन-ही-मन ईश्वर का ध्यान किया और साहब के घर पहुँच गया। साहब ने उसे पहचान लिया। पूछा! 'क्यों सेठ जी कैसे आये?'

सेठ ने सकुचाते हुए धीरे-धीरे कपड़ा खोला और कहा, 'हुजूर, अभी बम्बई (मुम्बई) गया था। वहाँ एक कटपीस की दुकान में यह कपड़ा सस्ता मिल गया। मैं सब-का-सब ले आया। छह कमीजों का था। दो कमीजों का मैंने अपने लिए रख लिया और यह चार का हुजूर के लिए ले आया। 'उसने कपड़ा साहब के हाथ में दे दिया। साहब ने कपड़ा देख, फिर सेठ जी की तरफ देखा, फिर खिड़की से बाहर देखा, फिर जमीन की तरफ देखते हुए कहा, ''बड़ा सस्ता मिल गया।'' अच्छा किया जो आप ले आये। धरमचन्द ने कहा, हम तो साहब सेवा करने को हमेशा तैयार रहते हैं।

धन-दौलत साथ नहीं जाती। सेवा ही साथ जाती है।' साहब ने सात आने गज के हिसाब से कीमत दी, जो धरमचन्द ने सहर्ष ले ली। चलते-चलते वह बोला,'साहब यहाँ के दर्जी बड़े

बदमाश हैं। आप नये ही आये हैं। मैं अपना विश्वासी दर्जी भेजूँगा।'

शाम को धरमचन्द का विश्वासी दर्जी गया और साहब की नाप तथा कपड़ा ले आया और हाथ जोड़कर विनती करने लगा, 'प्रभु मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो गयी!' साहब अब अवश्य ही उस कपड़े को पहन सकेंगे यह सब आपकी ही इच्छा से हुआ है। अब मेरी लाज आपके हाथ है।

हे विक्रम! कमीजें बन गयीं, इस्तरी हो गयी। उठाकर पहनने लायक हो गयी। जिस दिन साहब के सामने मामला पेश होना था, उसी दिन सुबह धरमचन्द तैयार कमीज लेकर साहब के पास पहुँच गया। साहब तैयार कमीजों को देख कर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने धरमचन्द को पुनः धन्यवाद दिया।

हे विक्रम! ऐसा कौन साहब होगा जो ऐसी अच्छी कमीज पहनने में देर करे। अर्थात कोई नहीं। ये साहब भी उनमें से एक कमीज पहनकर दफ्तर गये।

साहब के सामने मामला पेश हुआ। उन्होंने पक्ष-विपक्ष समझा। इसी समय धरमचन्द सामने से साहब की ओर देखता निकल गया। दोनों मुस्करा उठे। हे विक्रम! उस छवि का वर्णन तो शारदा भी नहीं कर सकती।

साहब ने फैसला लिखने के लिए कलम उठायी। इसी समय किसी अन्तःप्रेरणा से उनकी नजर कमीज पर पड़ी। सहसा एक चमत्कार हुआ--- एक क्षण में वह कपड़ा फौलाद में परिवर्तित हो गया। उस फौलादी कमीज के वजन से साहब की रीढ़ झुक गयी। कमीज धीरे-धीरे सिकुड़ने लगी और साहब के अंग-अंग कसने लगे। आस्तीन सिकुड़कर हाथों में कसने लगी। कालर ने सिकुड़ कर गला घोट दिया। साहब कराह उठे। कमीज सिकुड़ती जा रही थी। घबराकर साहब ने फुर्ती से धरमचन्द के पक्ष में निर्णय लिख दिया। एक क्षण में कमीज फिर कपड़े की हो गयी। कैसा चमत्कार हुआ।

धरमचन्द के जीतने की खबर फैल गयी। सबको आश्चर्य हुआ। कोई कहता, 'साहब ने ईमान खो दिया।' कोई कहता, 'साहब बेचारे क्या करें। ईमान तो धरमचन्द का गया।' कुछ लोग कहते कि दोनों ने ईमान खोया।

कथा समाप्त कर बैताल थोड़ी देर चुप रहा। फिर बोला 'हे विक्रम! कथा तूने भी सुनी। अब तू बता कि किसका ईमान गया--- साहब का, धरमचन्द का या दोनों का।'

विक्रम ने तुरन्त उत्तर दिया, 'ईमान किसी का नहीं गया क्योंकि धरमचन्द ने कपड़े का दाम लिया और साहब ने भी कीमत देकर कपड़ा लिया।' यह सुनकर बैताल उड़ा और फिर वृक्ष

पर जाकर लटक गया।

- हरिशंकर परसाई

हरिशंकर परसाई का जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमानी गाँव में हुआ था। आप हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं। अपने यथार्थमूलक व्यंग्य में आप ने भ्रष्टाचार, स्वार्थ, घूसखोरी, आदि पर चुटीली भाषा में चोट की है। पगडंडियों का जमाना, जैसे उनके दिन फिरे, सदाचार का ताबीज, निठल्ले की डायरी, तट की खोज आदि आपके द्वारा लिखी पुस्तकें हैं।

अनुरूप त्र समान रूप वाला। एकाग्रता त्र एकाग्र होने का भाव। सट्टा = तेजी मंदी के आधार पर लेन-देन। शारदा त्र सरस्वती। प्रेरणा त्र किसी को किसी काम में लगाना, उत्साहित करना। फौलाद त्र कड़ा और बढ़िया लोहा, इस्पात। आस्तीन त्र कोट, कमीज का वह भाग, जो बाँह को छिपाता है।

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. धरमचन्द नये साहब का स्वागत अपनी दुकान पर क्यों करता है?
2. साहब कपड़े का दाम सुनकर क्यों परेशान हो जाते हैं?
3. शाम को भगवान के सामने प्रार्थना करते समय सेठ धरमचन्द भगवान से क्या कहता है?
4. नवें दिन सेठ धरमचन्द साहब के यहाँ क्या लेकर जाता है और उसे क्या कहकर साहब को देता है?
5. सेठ के मुकदमा जीतने पर लोगों को आश्चर्य क्यों हुआ?

विचार और कल्पना

1. पाठ का शीर्षक है 'बैताल की कथा'। इसमें विक्रम और बैताल के माध्यम से आज के जीवन की स्थिति पर व्यंग्य किया गया है। प्राचीन कथानक के आधार पर जब समकालीन समाज का वर्णन किया जाता है, उसे मिथक कहते हैं। विक्रम और बैताल मिथक हैं। आप भी इनके आधार पर कोई छोटी कहानी लिखिए जिसमें आज के जीवन का यथार्थ व्यक्त हो सके।

2. नीचे दी गयी वर्ग पहेली में इस पाठ में आये हुए कम से कम बीस शब्द दिये गये हैं। इनमें से कम से कम दस शब्दों को खोज कर लिखिए-

अ	ब	ध	र	म	चं	द
फ	सा	न	ल	मि	क	र
स	र	वि	क्र	म	ल	जी
म	त	र	म	सा	म	त
छु	र	स	म	स	ह	सा
ड़ा	ष	क	भी	ज	स	ह
ध	न	था	फौ	ला	द	ब
र	मँ	ह	गा	ई	मा	न

कुछ करने को

1. हम सभी कपड़े पहनते हैं। कपड़ा कुटीर उद्योग के रूप में हथकरघे से भी बनता है और मिलों में भी। अपने आस-पास जहाँ हथकरघे से कपड़े बनाये जाते हैं, वहाँ जाकर देखिए और पता लगाइए कि कपड़ा किन सामानों की मदद से किस तरह बनाये जाते हैं।

2.कपड़ा हमारी आवश्यक आवश्यकता है। हम सभी को कपड़ांे की जरूरत होती है। लेकिन बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्हें तन ढकने के लिए कपड़े नहीं मिल पाते हैं। ऐसे लोगों के लिए आप स्वयं क्या कर सकते हैं, जबकि आपके पास पुराने कपड़े बेकार पड़े रहते हैं।

भाषा की बात

1. 'धर्मात्मा' शब्द 'धर्म' और 'आत्मा' दो शब्दों के संयोग से बना है। इसी तरह नीचे के शब्दों में 'आत्मा' जोड़कर नये शब्द बनाइए--

परम, जीव, प्रेत, विश्व।

2. 'विश्वासी' शब्द का अर्थ है जो विश्वास के योग्य हो या जिस पर विश्वास किया जा सके।

इसी प्रकार से नीचे लिखे हुए वाक्यों के लिए एक शब्द लिखिए--

(क) दूसरों का उपकार करने वाला।(ख) धार्मिक प्रवृत्ति वाला।

(ग) सत्य बोलने वाला।(घ) दूसरों का उपकार मानने वाला।

(ङ) जो उपकार न मानता हो।(च) जो अच्छा आचरण करने वाला हो ।

3. इस पाठ में आये निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए--

आँख, वृक्ष, आदमी, ईश्वर।

4. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए--

हृदय का फटना, मन मसोस कर रह जाना।

5. धरमचन्द नाम है। इसका तत्सम रूप है 'धर्मचन्द्र'। नाम में प्रायः कुछ लोग 'तत्सम' रूप को 'तद्भव' रूप में बदल देते हैं। जैसे- 'धर्मचन्द्र का धरमचन्द' 'कर्मचन्द्र का करमचन्द'। इस प्रकार के तद्भव रूप वाले चार नाम लिखिए।

इसे भी जानें

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार - यह पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा देश की मान्यता प्राप्त किसी भी भारतीय भाषा में प्रतिष्ठित साहित्यकार द्वारा किये गये उत्कृष्ट योगदान हेतु दिया जाता है। प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार 'जी शंकर कुरुप' को उनकी कृति 'आडाकुजाई' (मलयालम) के लिए दिया गया था।

पाठ 22

लीक वही नही।

(प्रस्तुत निबन्ध में जीवन की संकीर्णताओं और रूढ़ियों को त्याग कर नये मार्ग पर चलने की बात कही गयी है।)

गाड़ी का चाक यानी पहिया रास्ते पर चलकर एक लीक बना लेता है और उस लीक पर बेखटके पीछे आने वाली गाड़ियाँ चलती रहती हैं, किन्तु वर्षों से गाड़ियों के निरन्तर चलते-चलते वह लीक जब बहुत ज्यादा गहरी हो जाती है, तब उसके पीछे चलना चाकों के हक में अच्छा नहीं होता। उन लीकों में पहिये धँसने लगते हैं और गति रुक जाती है। विशेष देश, विशेष काल और विशेष परिस्थितियों में चलते हुए हम अपनी जीवन-यात्रा की गाड़ी चलाने के लिए एक लीक बना लेते हैं और उसे पकड़कर एक समय तक आँखें मूँदकर भी किसी मंजिल तक जा सकते हैं। पर अगर नया-नया चिन्तन न करके, बदले हुए काल और परिस्थितियों का विचार न करके उसी पुरानी लीक पर हम चलते रहेंगे, तो प्रगति करने के बजाय किसी दिन हमारी गति जड़ बनकर रुक भी सकती है। इसका अर्थ हुआ सत्य की गहरी खोज और उसके साक्षात्कार के लिए सतत जागरण और नित्य चिन्तन।

ऊँच-नीच की भावना के निवारण को हम लें। इसका अर्थ है सारे ही संकुचित भेद-भावों का निर्मूलन। गांधीजी ने इसकी यही व्याख्या की थी। विनोबा जी ने तो व्यापक व्याख्या को लिया है कि सैकड़ों वर्ष पहले एक गलत रास्ते पर, जो चौड़ा बिल्कुल नहीं था, हमारे समाज की गाड़ी ने एक लीक बना ली थी। कुछ दिनों तक उस लीक पर गाड़ी चलती भी रही। उस पर बैठनेवालों को यह भान नहीं हुआ कि गाड़ी जिस रास्ते पर और जिस लीक पर चल रही है, वह सही नहीं है। लीक छोड़कर पैदल चलनेवाले साधु-सन्तों ने समय-समय पर सुझाया कि गाड़ी गलत रास्ते की गहरी लीक पर चल रही है। उनकी चेतावनी पर बहुत ध्यान नहीं दिया गया। गाड़ी पर बैठे-बैठे उनको हाथ जोड़कर केवल प्रणाम कर लिया गया। सीख-भरी उनकी साखियाँ और सबद को चलते-चलते सुन लिया, पर गाड़ी को उस लीक पर से उतारकर दूसरा रास्ता उन्होंने नहीं पकड़ा। जब गाड़ी के चाक धँसने लगे और गाड़ी वहीं रुक गयी, तब कहीं चेत आया कि गाड़ी आगे तो जा ही नहीं सकती, क्योंकि रास्ता वह

इतना ज्यादा सँकरा है कि उस पर दूसरी लीक बन नहीं सकती। काल बहुत आगे बढ़ चुका था। गाड़ी उसके बहुत पीछे रह गयी थी। गाड़ी पर सवार कुछ यात्रियों ने, जो अपने आपको पंडित मानते थे, उस रास्ते का पुराना नक्शा खोला और अपनी पुरानी पोथियों के प्रमाण भी पेश किये। रूढ़ियों का लँगड़ा समर्थन करने पर भी चाकों ने आगे बढ़ने से, सर्वनाश के गड्ढे में गिरने से, साफ इनकार कर दिया।

यह रूपक ऊँच-नीच की भेद-भावना माननेवालों पर लागू हुआ। उसके निवारण या निर्मूलन पर भी न्यूनाधिक रूप से क्या इसी रूपक को नहीं घटाया जा सकता ? अन्तर इतना अवश्य है कि रास्ता उसका सही और बहुत चौड़ा है। वह गलत जगह नहीं ले जायेगा, किन्तु उस रास्ते पर अब नयी लीक बनानी होगी और यह ध्यान रखना होगा कि वह लीक भी आगे चलकर कहीं पहली लीक की तरह रूढ़िका रूप धारण न कर ले।

दुनिया के सभी धर्म-सम्प्रदायों ने अपने-अपने आरम्भकाल में अभेद और समता का ही जयघोष किया था। परन्तु काल-प्रवाह के साथ-साथ न चलने से, नित्य-चिन्तन के रुक जाने से, समस्त मानव जाति के प्रति अभेदात्मक समता की स्थापना के स्थान पर अपने ही धर्म और अपने ही सम्प्रदाय के अनुयायियों तक वह समता सीमित हो गयी। समता और अहिंसा को अलग-अलग चौखटों (तन्त्रों) में जड़ दिया गया। तन्त्र अर्थात् कुछ कायदे-कानून या बाँधने वाले नियम का विधान। तन्त्र की लीक पर गाड़ी कुछ समय तक ही चल सकती है, हमेशा नहीं। जिन विभिन्न धर्मों ने समत्व-योग की साधना के द्वारा आत्म-दर्शन का लक्ष्य संसार के सामने रखा था, उनके अन्दर पथभ्रष्ट कर्मकाण्ड की बाहरी क्रियाएँ घुस गयीं, और केवल ये ही उनमें शेष रह गयी। ये बाहरी क्रियाएँ भी घिस-पिसकर सिर्फ एक झूठा अभियान अपने पीछे छोड़ती जा रही हैं। विवेकपूर्ण चिन्तन के न होने से तन्त्र के चौखटे में बँधा हुआ कार्यक्रम या कर्मकाण्ड आगे चलकर मिथ्याचार का रूप ले लेता है। नाम भले ही रह जाता हो, पर रूप बिल्कुल ही बदल जाता है। हमारे प्रत्येक कार्यक्रम के रूप में तो अधिकाधिक नवीनता और तेज आना चाहिए। नाम छूट भी जाये तो कोई चिन्ता की बात नहीं। सत्य की मूल भावना नहीं छूटनी चाहिए।

इसीलिए यह बहुत आवश्यक है कि भटकी हुई लीक पर आँख मूँदकर गाड़ी को न चलाया जाय, जो इतनी गहरी हो चुकी हो कि उसमें पहिये धँसने लग जायें।

- वियोगी हरि

वियोगी हरि का जन्म सन् 1896 ई0 में छतरपुर (मध्य प्रदेश) में हुआ था। सन् 1932 ई0 में ये साहित्य साधना से हटकर हरिजन सेवक संघ, गाँधी स्मारक निधि और भूदान आन्दोलनों से क्रमशः जुड़ गये। वियोगी हरि ने काव्य, नाटक, निबन्ध गद्यगीत आदि विधाओं में लगभग 45 पुस्तकों की रचना की जिनमें 'प्रेमशतक', 'प्रेमांजली' (काव्य), 'वीर हरदौल', 'छद्मयोगिनी' (नाटक), 'मेरा जीवन प्रवाह' (आत्मकथा), 'विश्व धर्म', 'उद्यान' आदि प्रमुख पुस्तकें हैं। इनके अध्यात्मवादी चिन्तन में विश्वधर्म और आस्था की झलक दिखाई देती है। 9 मई, सन् 1988 ई0 को इनका देहावसान हो गया।

लीक = पगडंडी, पुरानी परम्परा। सफाई = शुद्ध करने की क्रिया। व्याख्या = टीका, वर्णन, कठिन पद आदि का अर्थ स्पष्ट करने वाला विवरण। रूढ़ि = परम्परागत, प्रथा। निवारण = रोकना, हटाना, दूर करना, मिटाना। निर्मूलन = मूल रहित करना, पूर्णतः समाप्त करना। व्यापक = दूर तक, सर्वत्र फैला हुआ। जयघोष = जयध्वनि। अभेदात्मक = भेदभाव से रहित। पथभ्रष्ट = जो रास्ते से भटक गया हो। मिथ्याचार = कपटाचरण।

प्रश्न-अभ्यास

निबन्ध से

1. ऊँच-नीच की भावना के निवारण का क्या अर्थ है ? विनोबा जी ने इसकी क्या व्याख्या की है ?
2. लेखक ने लीक छोड़कर चलने के लिए क्यों कहा है ?
3. लीक छोड़कर पैदल चलने वाले साधु-सन्तों ने समय-समय पर क्या सुझाया है ?
4. दुनिया के धर्म-सम्प्रदायों ने आरम्भकाल में किसका जयघोष किया था ?
5. कर्मकाण्ड मिथ्याचार का रूप कब ले लेता है ?
6. इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) दुनिया के सभी धर्म-सम्प्रदायों ने अपने-अपने आरम्भकाल में अभेद और समानता का ही जयघोष किया था।

(ख) विवेकपूर्ण चिन्तन के न होने से तन्त्र के चौखटे में बँधा हुआ कार्यक्रम या कर्मकाण्ड मिथ्याचार का रूप ले लेता है।

7. लेखक ने भटकी हुई लीक पर आँख मूँदकर गाड़ी को न चलाने के लिए क्यों कहा है ?

विचार और कल्पना

1. आप जिस विद्यालय मंे पढ़ते हैं, वहाँ की व्यवस्था में यदि आप को कुछ कमियाँ दिखाई पड़ती हैं, तो बताइए आप उनमें कौन से परिवर्तन लाना चाहते हैं, जिससे आपका विद्यालय एक आदर्श विद्यालय बन सके।

2. आप अपने समाज में प्रचलित किन्हीं दो कुप्रथाओं का उल्लेख कीजिए और उन्हें समाप्त करने के उपाय की चर्चा कीजिए।

3. विभिन्न पक्षियों के रहने के भिन्न प्रकार के घांेसलें होते हैं। निम्न चित्रों में बने घांेसलों को देखकर बताइए कि इनका सम्बन्ध किन पक्षियों से है-

कुछ करने को

1. लीक छोड़कर पैदल चलने वाले साधु-सन्तों ने समय-समय पर सुझाया कि 'गाड़ी गलत रास्ते की गहरी लीक पर चल रही है' इस वाक्य के द्वारा लेखक ने मध्यकाल में समाज की विसंगतियों पर चोट करने वाले सन्तों की ओर संकेत किया है। इन सन्तों में गोरखनाथ, कबीर, रैदास, नानक आदि मुख्य रहे हैं। अपने शिक्षक से पूछकर जानिए कि इन्हांेने किन-किन बुराइयों पर चोट की है।

2. किसी विषय पर सुसम्बद्ध रूप से लिखी गयी रचना को निबन्ध कहते हैं। विचार प्रधान निबन्धों में व्यवस्थित रूप से अपने विचारों को रखना पड़ता है। अपने स्कूल की शिक्षा व्यवस्था पर 150 शब्दों में एक निबन्ध लिखिए।

3. कक्षा के छात्र तीन टोलियाँ बनाकर नीचे दिये गये प्रश्नों में से एक-एक प्रश्न पर चर्चा करें। अधिक जानकारी के लिए अपने शिक्षक से भी सहायता लें, क्योंकि सदियों से चली आने वाली लीक, चलन या प्रथा हमेशा सही नहीं होती। वैज्ञानिक ढंग से सोचना और करना ही आज की जरूरत है-

(क) पहले लोग खुले में शौच जाते थे, अब इसके विरुद्ध इतना शोर क्यों?

(ख) पहले लोग मिट्टी से हाथ धोते थे, अब मना क्यों किया जाता है ?

(ग) पहले लोग कुएँ, तालाब, नदियों का जल पीते थे, अब इनका पानी पीने से क्या हानि हो सकती है ?

भाषा की बात

1.पाठ में आये निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और समझिए -

(क)गाड़ियाँ चलती रहती हैं।

(ख)उन लीकों में पहिए धँसने लगते हैं।

(ग)गाड़ी गलत रास्ते की गहरी लीक पर चल रही है।

(घ)काल बहुत आगे बढ़ चुका था।

उपर्युक्त रेखांकित संयुक्त क्रियाआंे के इन प्रयोगों से क्रिया के कार्य व्यापार के अलग-अलग पक्ष का बोध हो रहा है। वाक्य 'क' में अभ्यास-द्योतक पक्ष, 'ख' में आरम्भ द्योतक पक्ष, 'ग' में निरन्तरता का-द्योतक पक्ष और 'घ' में पूर्णता-द्योतक पक्ष है। उक्त चारों प्रकार के एक-एक वाक्य लिखिए।

2. 'निर्मूलन' शब्द 'निर्' उपसर्ग से बना है। इसी प्रकार 'निस्' से 'निःसंकोच' और 'दुर्' से 'दुर्भाव' शब्द बनता है। दिये गये उपयुक्त उपसर्गों एवं शब्दों से दो-दो नये शब्द बनाइए-

उपसर्ग - निर्, निस्, दुर्, दुस्।

शब्द -संदेह, जीव, अपराध, सार, भावना, साहस, संस्कार, प्राप्य, लाभ।

3. दिये गये मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए अपने वाक्य में उनका प्रयोग कीजिए -

लीक पर चलना, आँख मँूदकर चलना, जयघोष करना, लँगड़ा समर्थन करना।

इसे भी जानें

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।

'रामचरित मानस'

Table of Contents

- Table of Contents
- वीणावादिनि वरदे
- काकी
- सच्ची वीरता
- बिटिया के लिए
- अपराजिता
- नीति और भक्ति के दोहे
- नीति
- भक्ति
- जूलिया
- धानों का गीत
- हिन्दी विश्वशांति की भाषा है !
- बाल छवि, विनय के पद, सीता-स्वयंवर
- बाल-छवि
- विनय के पद
- सीता-स्वयंवर
- आत्मनिर्भरता
- पहरुए सावधान रहना
- दु:ख का अधिकार
- चुप-चाप
- एक स्त्री का पत्र
- सोना
- अमरकंटक से डिंडौरी
- नीड़ का निर्माण फिर-फिर
- जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी
- झाँसी की रानी
- बैताल की कथा
- लीक वही नही।